PRATAP MUSEUM, SRINAGAR
२१५४

श्रीगणेशायनमः

श्रीपरमेश्वरायनमः

प्रकट होकि प्रथम सेंही बहादुरी और प्रजापालन में राजपूत लोग सब सें बढ़ कर मशहूर हैं उन में भी हाडा जाति के राजपूत बहादुरी वग़ैरह नेक बातों में सब सें ज़ियादा हैं उन में बूंदी के मालिक सब हाडों सें बड़े दर्जे के हैं और हाल में जो बूंदी के महाराव राजा साहब श्रीरामसिंहजी हैं उनके बिराजने सें इस गद्दी ने ऐसी शोभा पाई है किजिसका बयान नहीं हो सक्ता जो सत्य बोलना दातारी प्रजापालन कदरदानी बहादुरी वग़ैरह उत्तम गुणों के मानों मूर्ति हैं इन्हों नें बहुतसा रुपया ख़र्च

किया और अपने बड़ौं का हाल दर्याफ़् करके मिश्रण जाति के चारण कवि सूर्यमल्लजी सें वंशभास्कर नाम ग्रंथ बनवाया उस में सब बातैं जो दर्याफ़्त की गईं सो सत्य सत्य लिखी हैं तर्फ़दारी कुछभी नहीं की परन्तु वह ग्रंथ संस्कृत प्राकृत मागधी पैशाची वग़ैरह कई ज़बानौं सें बना है और बहुत बडा है उस का समझना मुश्किल है इस सें सब के समझने वास्ते वंशभास्कर का ख़ुलासा तैयार करना ज़रूर हुवा इस ख़िदमत के लिये गंगासहाय नाम ब्राह्मण को हुक्म हुवा ॥ इस तुच्छ बुद्धि मनुष्य नें हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हो के पर्वरिश पाई और कुछ आदमीपना हासिल किया है सो सूर्य्यमल्लजी के पुत्र कवि मुरारिदानजी और कविया जाति के चारन कवि देवीदानजी की सहायता सें वंशभास्कर का संक्षेप सें खुलासा तयार किया इस में भूल चूक होय सो बुद्धिमान मनुष्य दुरुस्त करदेवैं सरकार की तर्फ़ सें फिरभी वंश

वली की बातों की तलाश है सो फिरभी पक्का पता मिलता रहेगा तो उस के अनुसार इस में दुरुस्ती होती जायगी कलियुग के १००० हज़ार वर्ष के अनुमान बीते उस वक्त बौद्धों का मत बहुत फैलगया और वेद के माननें वाले कम रहगये और दैत्य भी बढ़गये इस वास्ते वशिष्ठजी ऋषि ने बौद्धों के मत के खंडन और दैत्यों के मारने और वेद का मत चलाने वास्ते आबूपहाड पर यज्ञ किया उस यज्ञ के अग्निकुंड में से चार क्षत्रिय पैदाहुये पहले प्रतिहारजी १ जिन को पडिहारजी दूसरे चालुक्यजी २ जिन को सोलंखीजी तीसरे प्रमारजी ३ जिन को पँवारजी चौथे ४ चाहुवाणजी ४ जिन को चौहाणजी भी कहते हैं इसमें चाहुवाण नाम इस वास्ते हुवा कि ये पैदा होतेही चार बांहें वाले थे इससें चतुर्बाहु मान यह संस्कृत नाम हुवा उसी का संक्षेप में चाहुवाण होगया चौहाणजी को चह्वाणजी १ चहुवाणजी २ चुहाणजी ३ चतुर्भुजजी ४

चंडासिजी ५ और चाहुवाणजीभी कहते हैं इन में पहले तीन नाम उसी चाहुवाण नाम सें वर्णे हैं इन चाहुवाणजी १ का वत्सगोत्र सामवेद कौथुमीशाखा आप्नवान १ यामदग्न्य २ च्यावन ३ भार्गव ४ और्व ५ ये पँच प्रवर और गोभिल सूत्र है इन नें आशापूरा नाम देवीजी की भक्ति करनें सें जोर पाकर धूम्रध्वज १ यंत्रकेतन २ तालहस्त ३ करालास्य ४ कीलजिव्ह ५ ह्रदोदर ६ रक्तनेत्र ७ शूलिक ८ और शैलनासिक ९ ये असुर मारे और वशिष्ठजी वग़ैरह ऋषिलोगों की सहायता सैं दिल्ली में राजपाकर बहुत से बौद्धों को मार कर वेद के मत को बढ़ाया और जब इन नें दिल्ली सें मथुरा में आकर यादवों को जीत के पुष्कर के राजाविजयाम्बजी को जा घेरा तब उन नें हार कर इन को अपणी बेटी व्याहदी और भी इन नें कश्मीर वग़ैरह कई देश जीते और अश्वमेध यज्ञ किया इन के महाराज कुमार सामंतदेवजी २ हुवे उन को

प्रचंडजी २ भी कहते हैं चाहुवाणजी १ के पीछे सामंत्त देवजी २ नेराजकिया इन् के महादेवजी ३ हुवे इन् को परभंजनजी भी कहते हैं इन् नें मारवाड के राजा देवराजजी को जीता सामंत्तदेवजी २ पीछेमहादेवजी ३ राजाहुवे ये एकदिन शिकार को गयेथे वहां विना जाने इन् के हाथ सें प्रमतिनाम ऋषि की गाय मरगई तब ऋषिनें उन को यह शापदिया कि तुमारा बंश नाशहो जब महादेवजी ३ नें यहजाना तब उनों नें पैरों में गिरकर ऋषि को राज़ी करलिया तब ऋषि नें यह कहा कि कित्तनीक पीढीतक तो ११ बेटाही होत्ता रहेगा फेर बंशफेलेगा इन् के कुवेरजी ४ हुवे इन को देवमहाजी ४ और महोंत्त देवजी ४ भी कहते हैं महादेवजी ३ सें पीछे कुवेरजी ४ राजाहुवे उन् के बिंदुसारजी ५ हुवे उन्ही को मंत्रसहायजी ५ और मंत्रजयजी ५ भी कहते हैं उन् के सुधन्वाजी ६ हुवे उन् को उदारहार

जी ६ भी कहते हैं जिस वक्त सोरों नाम शहर के राजा सोलंखी पृथुजी नें दिल्ली को बहुत फौज से घेर लिया तब उस लड़ाई में विंदुसारजी ५ मारेगये और सद्योधारण नाम विंदुसारजी ५ के कामदार नें सुधन्वाजी ६ को बालक समझकर पृथुजी के साथ मेलकर लिया जब सुधन्वाजी ६ जवान हुवे तो उन नें अपनें पिता का बदला लेने वास्ते फौज लेकर पृथुजी के शहर को जाघेरा उस वक्त पृथुजी यज्ञ में बैठेथे इहाँ सें सुधन्वाजी ६ नें लड़ाई करनें वास्ते कहलाभेजा उस वक्त पृथुजीनें अपनी बेटी उन को व्याह के मेल कर लिया सुधन्वाजी ६ के बीरधन्वाजी ७ हुवे इन को अशोकजी ७ भी कहते हैं उन के जयधन्वाजी ८ हुवे इन को शंकाविदारजी ८ भी कहते हैं उन के वीरसिंहजी ९ हुवे इन को विजयजी ९ भी कहते हैं उन के बरसिंहजी १० उन को मारुतजी १० और सुमेरुजी १० भी

कहते हैं उन के वीरदंडजी ११ हुवे उन के आरमंत्रजी १२ हुवे इन को जयंतजी भी कहते हैं उन के माणिक्यराजजी १३ उन को शूरजी १३ भी कहते हैं उन के पुष्करजी १४ हुवे उन को विजयपालजी १४ भी कहते हैं उन के असमंजसजी १५ हुवे उन के प्रेम पूरजी १६ हुवे उन के भानुराजजी १७ हुवे उन के मानसिंहजी १८ हुवे उन के हनुमानजी १९ हुवे उन को धर्मपालजी १९ भी कहते हैं उन के चित्रसेनजी २० हुवे उन के शंभुजी २१ हुवे उन के महासेनजी २२ हुवे इन को अहीशजी २२ भी कहते हैं उन के सुरथजी २३ हुवे उन के रुद्रदत्तजी २४ हुवे उन को कर्णपालजी २४ भी कहते हैं उन के हेमरथजी २५ हुवे उन को रोमपालजी २५ भी कहते हैं उन के चित्रांगदजी २६ हुवे उन के चंद्रसेनजी २७ हुवे उन को चित्ररथजी २७ भी कहते हैं उन के बाल्हीकजी २८ हुवे उन को बत्सराजजी २८ भी कहते हैं

उन के धृष्टद्युम्नजी २९ हुवे उन को वरुणजी २९ भी कहते हैं उन के उत्तमजी ३० हुवे उन के सुनीकजी ३१ हुवे उन के सुबाहुजी ३२ हुवे ये बहुत सुंदर थे इससें इन को मोहनजी ३२ भी कहते हैं यहां तक कि बहुत से राजे लोगों की लडकियों नें पसंद कर के इन को वरलिया इससें इन के १५५ राणीजी हुईं ये एकदिन शिकार को गये थे वहां मथुरा के यादव बंशी राजा नें और कुरु बंशी राजा नें दगा कर के मार डाला उन के सुरथजी ३३ हुवे उन के भरतजी ३४ हुवे उन को मदसेनजी ३४ भी कहते हैं उन के सत्यकीजी ३५ हुवे उन को सत्यकजी ३५ और सात्विकजी ३५ भी कहते हैं उन के शत्रुजितजी ३६ हुवे उन को केसरिदेवजी ३६ भी कहते हैं उन के विक्रमजी ३७ हुवे उन के सहदेवजी ३८ हुवे इन को जीत के कुरुबंश के राजा नें दिल्ली लेली फिर इन नें वहां सें निकल कर अरिघाटजी नाम अपनें मामाजी की मदद सें सुनाभ

नाम राजा को मार कर कर्णाट देश लेलिया वहां सिंहकावती नाम शहर राजधानी बनाई और गुजरात के राजा की मदद सें पौंड्र देशजीत लिया उन के वीरदेवजी ३९ हुवे उन को भीमसेनजी ३९ भी कहते हैं उन के वसुदेवजी ४० हुवे उन के वासुदेवजी ४१ हुवे उन के रणधीरजी ४२ हुवे उन के शत्रुघ्नजी ४३ हुवे ये अयोध्या के राजा की मदद वास्ते गयेथे उस लड़ाई में मारेगये उन के सुमेरुजी ४४ हुवे उन को शालिवाहनजी ४४ भी कहते हैं उन के कृतवर्म्माजी ४५ हुवे उन के सुवर्माजी ४६ हुवे उन के दिव्यबर्म्माजी ४७ हुवे उन के योवनाश्वजी ४८ हुवे उन के हर्यश्वजी ४९ हुवे उन के अजपालजी ५० हुवे इन ने बंगाला कामरूप वग़ैरह कई देशजीते और रवण १ विडाल २ विडंब ३ नाम असुरमारे और पुष्कर के पास अजमेर नाम शहर बसाया इन के १३ बेटे हुवे भटबलनजी ५१।१ महासेनजी ५१।२ महाबाहुजी ५१।

३ भीमसेनजी ५१।४ दृढधन्वाजी ५१।५ अश्वपत्तिजी ५१।६ नृपतिजी ५१।७ जगत्पतिजी ५१।८ सुकर्म्माजी ५१।९ भगदत्तजी ५१।१० इंद्रदत्तजी ५१।११ धनेश्वरजी ५१।१२ विसुवत्तजी ५१।१३ इनमें भटदल्लनजी ५१ सें सिवाय १२ बेटे रावण के बेटे जटबक वग़ैरह नें बालपनें मेंही मारडाले थे येजटबक वग़ैरह असुर रावण के साथ अजयपालजी की लडाई में भागगये थे भटदल्लनजी ५१ के लोहराजजी ५२।१ निम्मराजजी ५२।२ अनंगराजजी ५२।३ ये तीन हुवे इनमेंसें पहले दोतो उन रावण के बेटों नेंहीं मारडाले उन दोनों को चाहुवाण वंश के लोग पितर मानते हैं और छोटे अनंगराजजी ५२ गद्दी पर विराजे उन के इक्कीस २१ महाराजकुमार हुवे भीमजी ५३।१ धर्मपालजी ५३।२ धर्मरत्नजी ५३।३ रत्नपालजी ५३।४ रुक्मरथजी ५३।५ रुक्मेशजी ५३।६ रुक्मकोशजी ५३।७ पृथ्वीपालजी ५३।८ रुक्मसेनजी

५३।९ हरिभानुजी ५३।१० चंद्रभानुजी ५३।११ भानुजी ५३।१२ जगद्भानुजी ५३।१३ सोमदत्तजी ५३।१४ जयचंद्रजी ५३।१५ अन्वयचंद्रजी ५३।१६ देवीचंद्रजी ५३।१७ त्रिलोकचंद्रजी ५३।१८ अमरचंद्रजी ५३।१९ दीपचंद्रजी ५३।२० ब्रह्मदत्तजी ५३।२१ इन में भीमजी ५३ के सिवाय बीसों को रावण के बेटों ने मारडाला भीमजी के ५३ गोगाजी ५४ हुवे ये बडे शूरवीर थे और बहुतसी भलाई की बातें इन में थीं इन नें जवानी से पहलेही जटबक वगैरह असुर जो सदा के दुश्मन थे मारडाले इन के नाना देवजी के बेटा नहीं था और उन के एक बेटी के बेटे तो गोगाजी थे दूसरी बेटी गौडभव देवजी राजा को ब्याही थी उन के अर्जुनजी १ सुर्जनजी २ ये दो बेटे थे इन तीनों दोहतों में बहुत अच्छे मान कर नानाजी नें अपनाराज जिस की राजधानी भोजकट नाम शहर था गोगाजी ५४ को ही देदिया इस बात को सुन के अर्जुनजी १ सुर्जनजी २ के दिल में दुश्मनी पैदा हुई और गोगाजी ५४ के पास

जाकर नानाजी की दी हुई ज़मीन का आधा हिस्सा चाहा इस पर गोगाजी ने कहा कि नानाजीनें राज मेरेही वास्ते दिया है इस वास्ते जो माँग कर लेते होतो मैं चाहों सारा देदूं और ज़ोर के साथ तो मैं कभी नहीं दूंगा जब इन नें लड़ाई करी तो हार कर बहुत से राजों सें मदद माँगी जब किसी नें मदद नहीं दी तो ईरान के वादशाह अबूफर के पास जाकर मदद माँगी फेर अबूफ़र फ़ौज लेकर चढ़ आया दो २ महीनें तक लड़ाई हुई फिर अबूफ़र भागा गोगाजी नें हरियाणे तक पीछा किया और वादशाह को मार लिया इन गोगाजी ५४ को हीं वहादुरी के सबब सैं नागका अवतार मान कर बहुत से लोग अब तक पूजते हैं और जाहिर पीर के नाम सैं. कई मुसलमान भी मानते हैं उन के शुभकर्णजी ५५ हुवे उन के उदयकर्णजी ५६ हुवे उन के जसकर्णजी ५७ हुवे उन के हरिकर्णजी ५८ हुवे उन के कीर्तीसजी ५९ हुवे उन के बालकृस्नजी ६० हुवे उन के

हरिकृस्नजी ६१ हुवे उन के रामकृस्नजी ६२ हुवे उन के वलदेवजी ६३ हुवे उन के हरदेवजी ६४ हुवे उन के भीमजी ६५ हुवे ये मगध देश अर्थात् पटना के राजा के साथ लड़ाई में मारे गये और मगधदेश के राजा नें इन से विदर्भदेश छीन लिया भीमजी ६५ के सहदेवजी ६६ हुवे उन के रामदेवजी ६७ हुवे उन के बसुदेवजी ६८ हुवे उन नें कुछ समय पाकर बिदर्भ देश फिर दाब लिया इस पर मगधदेश के राजा के साथ फिर लड़ाई हुई उस में बसुदेवजी ६८ मारे गये उन के श्यामदेवजी ६९ हुवे उन के हरिदासजी ७० हुवे उन के महीधरजी ७१ हुवे उन के वामदेवजी ७२ हुवे वे लाहोर के राजा मदसेनजी की मदद के वास्ते गये थे उसी लडाई में मारे गये उन के श्रीधरजी ७३ हुवे उन के गंगाधरजी ७४ हुवे उन के महादेवजी ७५ हुवे उन्हों नें अश्वमेधयज्ञ करना चाहा था यज्ञ में जो घोड़ा छोड़ा सो मगध देश के राजा नें पकड़ लिया इस बात पर जो लड़ाई

हुई उसमें महादेवजी ७५ मारेगये उन के अङ्गधरजी ७६ हुवे उन के मानसिंहजी ७७ हुवे उन के चक्रधरजी ७८ हुवे ब्याह सें थोडे हीदिन पीछे मगध देश के राजा के साथ लड़ाई में मारेगये राणीजी के गर्भथा उन के शत्रुजितजी ७९ हुवे इन नें बहुतसे यज्ञ किये इन के हलधरजी ८० हुवे उन के महाधरनुजी ८१ हुवे उन के देवदत्तजी ८२ हुवे उन के दामोदरजी ८३ हुवे उन के काशीनाथजी ८४ हुवे ये कुंतल देश के राजा श्रीधरजी को मार कर उन की बेटी को महाराजकुमार लीलाधरजी ८५ के वास्ते लाये फेर लीलाधरजी को राज देकर आप तप करने वास्ते जंगल को गये लीलाधरजी ८५ राज करने लगे एक बार उन के साले मदसेनजी अपने पिता का वैर लेने को इन पर चढ़आये इस लड़ाई में लीलाधरजी ८५ और इन के साले मदसेनजी दोनों मारेगये लीलाधरजी के धरणीधरजी ८६ हुवे उन के रमणेशजी ८७ हुवे ये जबतक ९० वर्ष के हुवे

तब तक उन के कोई संतान नहीं हुई तब उन्हों नें यह मन्नत करी कि जो मेरे बेटा होतो मैं आबू के अचलेश्वरजी महादेव के आगे सिर चढ़ाऊं कोई दिनों में इन के भगवद्दासजी ८८ महाराज कुमार हुवे रमगेशजी नेभी आबू पर जाकर अचलेश्वरजी के आगे शिर चढ़ा दिया भगवद्दासजी ८८ के कुलदासजी ८९ हुवे भगवद्दासजी ८८ के ऊपर कुंतल देश के राजा नें चढ़ाई करी उस लड़ाई में भगवद्दासजी ८८ और कुलदासजी ८९ दोनों पिता पुत्र मारे गये कुलदासजी ८९ के शिवदासजी ९० हुवे उन के हरिपूरणजी ९१ हुवे उन्हों नें कुंतल देश पर चढ़ाई करी वहांही मारे गये हरिपूरणजी ९१ के देवीदासजी ९२ हुवे इन नें महाराज कुमार कर्मचंद्रजी ९३ को साथ लेकर और उन के पुत्र रामदासजी ९४ को राज देकर कुंतल देश पर चढ़ाई करी इस लड़ाई में ही दोनों काम आये परन्तु कुंतल देश के राजा दृढसेनजी भी मार लिये रामदासजी ९४ के वक्त में

कुंतल देश के राजा दृढ़सेनजी के बेटे हरिसेनजी नें फिर चढ़ाई करी उस में रामदासजी मारे गये और उन के बेटे महानंदजी ८५ को लेकर इन की राणीजी अपनें पिता विदर्भ के राजा भीमजी के पास चलीगईं वहां भी हरिसेनजी नें यह कहला भेजा कि यातो अपने दोह्ते महानंदजी ८५ को हमारे कों सौंपा चाहिये नहीं तो लडनें की तयारी करनी चाहिये भीमजी नें भी लडनें की तयारी करी परन्तु महानंदजी ८५ की माता डरसें छिपकर निकलगईं और चंबल नदी पास आगईं उस वक्त टोडा नाम शहर में तंवर जाति के राजपूत जो पांडव वंश में हैं उन का राज था वहां के राजा इंद्रसेनजी नें जब महानंदजी के ८५ आने की ख़बर सुनी तब समाचार भेज कर राणीजी को बुलालिया और महानंदजी ८५ को अपनी बेटी व्याह दी और ७ वर्षतक रख के यह चाहा कि आधा अपना राज जमाईजी को देदूं परन्तु सुसरेजी की दीहुई ज़मीन का लेना महानंदजी ८५ नें

ठीक नहीं समझा एक दिन का ज़िकर है कि महानंदजी ८५ ने स्वप्न में यह देखा कि शाकंभरी नाम देवीजी इन को यौँ फर्माती हैं कि ऐ बेटे अपनी फौज लेकर बौँदाजाति के राजपूत जो इहाँ राज करते हैं उनपर चढ़ तेरी जरूर जीत होवेगी यह स्वप्न देखकर अपनीमाताजी के पास गये और स्वप्न का वृत्तांत अर्ज़ करके फौजरखने वास्ते किसी रीति सें दौलत चाही तो उन की माताजी नें १०००००० दसलाखरुपयों की क़ीमत का गहना दिया उसें जितनी फौज इकट्ठी हुई उसकों लेकर साँभर जाघेरी और वहाँ के राजा नरबाहनजी और उन के बेटे जयपालजी को मारकर मुल्क में अपना कब्जा करलिया वहाँ शाकंभरी देवीजी का मंदिर नये सिर बनवाया और शहरकों नये सिर बसाया जो इन महानंदजी ८५ के वंश में हुये वे सब संभरीकचौहाण कहलाये क्योंकि इन्हों नें साँभर राजधानी मुकर्रर करी महानंदजी ८५ के विसुदासजी ८६ हुवे उन के महारामजी ८७ हुवे

उन के रेवादासजी ९८ हुवे उन के अमरसिंहजी ९९ हुवे उन के गंगादासजी १०० हुवे उन के मानसिंहजी १०१ हुवे उन के विश्वंभरजी १०२ हुवे उन के मथुरादासजी १०३ हुवे उन के द्वारकादासजी १०४ हुवे उन के माधवदासजी १०५ हुवे उन के सुदासजी १०६ हुवे इन्हों नें दंताल गढ़ का किला जीता इन के दस बेटे हुवे वीरभद्रजी १०७।१ काशीनाथजी १०७।२ मधुसूदनजी १०७।३ वामनजी १०७।४ मुरारिजी १०७।५ वाराहजी १०७।६ हृषीकेशजी १०७।७ केशवजी १०७।८ बलभद्रजी १०७।९ कमलनयनजी १०७।१० इन में काशीनाथजी १०७।३ सें लेकर ९ बेटों का वंश रहा कि नहीं रहा और कितने दिन तक रहा इसका कुछ पक्का पता नहीं मिला वीरभद्रजी १०७ के गोपालजी १०८ हुवे उन के गोविंददासजी १०९ हुवे उन के माणिक्यराजजी ११० हुवे ये बडे शूर बीर हुवे इन्हों नें अपना राज बहुत फैंलालिया उत्तर में कुरुक्षेत्र तक दक्षिण में

चंबल तक पश्चिम मैं जालोर तक पूर्व मैं बयाना जाजव तक इन का राज हुवा इन्हीं को बडे राज के मालिक होने से विश्वपति कहते हैं माणिकयराजजी ११० के हनुमानजी १११।१ सुग्रीवजी १११।२ ये दो २ महाराज कुमार हुवे इन में सैं बडे बेटे हनुमानजी १११ नें तो अपने पिताजी के आगे यही अर्ज़ करी कि मैं तो मेरी बाँहँ के जोर सैं जो राज मिले उसी पर दिल रखता हूँ सो मेरे को यह हुकम हो कि मैं दूसरे मुल्क जीतनें वास्ते जाऊँ और यहाँ का राज छोटे भाई सुग्रीव १११ को बख़्शा जावे यह कह कर वहाँ सैं कूँच किया और पटने के सूर्यबंशी चुडलजी राजा को मार कर वहाँ राज कर लिया उन के बंश के चहुवाण पूर्बिये कहलाये सो इकतीस ३१ तरह के हैं आल १ बील २ सामर ३ आसावर ४ तोगी ५ पप्पडिया ६ आमर ७ असिमेरी ८ भाकर ९ सावरिया १० हैडंगा ११ जडुचक १२ हरिया १३ नम्मसवाल १४ ऊंवासिक १५ समरोचक

१६ समरूप १७ मुकराना १८ भावड १९ गोगसेन २० सामवाल २१ तोसीनाँ २२ गुराबा २३ धामनेच २४ मारू २५ संत्री २६ भंवर २७ हबासी २८ दानिक २९ कलेचा ३० वरगड ३१ इन में सें ही वेदला १ कोठारिया २ पालसोलिया ३ पूर्बिया चहुवाण उदयपुर के राणाजी के उमराव हैं माणिक्यराजजी ११० नें तो काशी में रहना मंज़ूर किया और सुग्रीवजी १११ सांभर के राजा हुवे उन के अंगदजी ११२ हुवे उन के केसरीजी ११३ हुवे उन के जयंतजी ११४ हुवे उन के जगदीशजी ११५ हुवे उन के जयरामजी ११६ हुवे उन के विजयरामजी ११७ हुवे उन के हंसजी ११८ हुवे उन के जितयुद्धजी ११९ हुवे उन के गोबर्द्धनजी १२० हुवे उन के मोहनजी १२१ हुवे उन के गिरिधरजी १२२ हुवे उन के उदयरामजी १२३ हुवे जिन को उद्यमजी १२३ भी कहते हैं उन के भरतजी १२४ हुवे उन के अर्जुनजी १२५ हुवे उन के शत्रुजितजी १२६ हुवे उन के

सोमदत्तजी १२७ हुवे उन के दुःखंत्तजी १२८ हुवे उन के भीमजी १२९ हुवे उन के लक्ष्मणजी १३० हुवे इन के परशुरामजी १३१ हुवे उन के रघुरामजी १३२ हुवे ये शराब बहुत्त पीत्तेथे और रातदिन रणवास में हीं रहत्ते थे जब पडिहार मंगलजी नाम मारोठ के राजा नें इन परचढ़ाई करी तब ये ७ दिन लड़ कर सातवें दिन राज छोड़ कर भागगये सांभर में पडिहारों का राज होगया और रघुरामजी १३२ रणवास सुधां अपने सुसरे बुरहान पुर के राजा सोम बंशी तोमर जाति अर्जुनजी के पास जारहे परंतु शराब उन सें वहांभी नहीं छूटी और वहांहीं परलोक पधारे उन के समरसिंहजी १३३ हुवे इन नें सांभर का राज लेने वास्ते तदबीर की मारोठ के राजा मंगलजी के बेटे नाहरजी के साथ लड़ाई हुई परंतु दोनोंहीं मारेगये समरसिंहजी १३३ के माणिकयराजजी १३४ हुवे इन नें अर्जुनजी राजा के बेटे चक्रधरजी सें मदद लेकर सांभर का राज पीछा लेलि-

या और नाहरजी के ११ बेटे भी मारडाले पहले राज से भी राज बढ़ा लिया और उन नें कांगड़े के राजा जल्हणजी की बेटी ब्याही जब ब्याह का सब काम हो चुका तब इन के सुसरे जल्हणजी नें यह कही कि लाहोर के राजा केदारजी ने मेरे २ परगने ज़बर्दस्ती से लेलिये हैं और मैंनें उन के बदले वर्षदिन के कुछ रुपये भी देने क़बूल किये तोभी नहीं छोड़े इस वास्ते कुछ आप की तर्फ से मदद हुई चाहिये यह सुनकर माणिक्यराजजी १२४ नें लाहोर पर चढ़ाव किया और उस को जीत करके पहले दो २ पर्गनों से सिवाय २ दो परगने और भी सुसराजी के नाम लिखालिये इस वक्त तो लाहोर के राजाजी नें हार कर लिखदिये परंतु कितनेक दिनों पीछे जब माणिक्यराजजी १२४ तो सांभर में थे उस वक्त समय पाकर फिर कांगड़ा आय घेरा माणिक्यराजजी १२४ फिर सुसराजी की मदद वास्ते कांगड़े पधारे परंतु उस लड़ाई में मारेगये इन के दश १० महाराजकु·

मार हुवे मुहुकर्म्माजी १३५।१ इन को दामोदरजी १३५।२ भी कहते हैं लालसिंहजी १३५।२ हरिसिंहजी १३५।३ शार्दूलजी १३५।४ पूर्णराजजी १३५।५ मौक्तिकराजजी १३५।६ निर्वाणजी १३५।७ कुसराजजी १३५।८ लसनराजजी १३५।९ प्रवालराजजी १३५।१० इन में मुहुकर्म्माजी तो सांभरकी गद्दीपर बिराजे लालसिंहजी १३५।२ नें मरुदेश कोजीत कर वहाँ राज किया उन के बंश के माइचे चहुवाण कहलाये हरिसिंहजी १३५ नें सिंधुदेश में राज किया उन के धुंधेटजी १३६ नाम बेटे हुवे उन के बंश के धुंधडिये चहुवाण कहलाये शार्दूलजी १३५।४ के घनजी १३६।१ और टंकजी १३६।२ ये दो बेटे थे उन में घनजी १३६।१ नें तो पंजाब में राज किया उन के बंश के पंजाबी चहुवाण कहलाये और टंकजी १३६।२ के टांक चहुवाण कहलाये पूर्णराजजी १३५।५ नें भदावर नाम शहर का राजलिया उन के बंश के भदोड़िये चहुवाण कहलाये मौक्तिकराजजी

१३५।६ नें जालोर में जिसका दूसरा नाम सोनगिरी है राज किया उन के वंशके सोनगरे चहुवाण कहलाये निर्वाणजी १३५।७ के वंश के निर्वाण चहुवाण कहलाये वे बहुत करके मारवाड़ से उत्तर की तर्फ बसते हैं इन निर्वाणों में देवजी नाम बड़े शूरवीर थे जिननें आबूपहाड़ के पासराज किया और शिरोही नाम शहर बसाया उन के वंश के देवड़े चहुवाण कहलाये कुसराजजी १३५।८ नें पांड्य देश में राजकिया इन के वंश के पंडिये चहुवाण कहलाये लसनराजजी १३५।९ नें गुजरात में राज किया उन के वंश के गुजराती चहुवाण कहलाये प्रबालराजजी नें १३५।१० बगसर देश में राज किया उन के वंशके बगसरिये चहुवाण कहलाये जो बड़ेही बड़े मुहु कर्म्माजी सांभर के राजा थे उन के रामचंद्रजी १३६।१ और खिच्चीराजजी १३६।२ दो बेटे हुवे सांभर में तो रामचंद्रजी १३६ राजा हुये खिच्चीराजजी १३६ के वंश के खींची चहुवा-

ण कहलाये उन का इसवक्त राघोगढ़ में राज है रामचंद्रजी के बारा महाराज कुमार हुवे संग्रामसिंहजी १३७।१ बालेराजी १३७।२ बंगदेवजी १३७।३ गोलपालजी १३७।४ पुष्पालजी १३७।५ मलयराजजी १३७।६ चाहोडदेवजी १३७।७ हरीणदेवजी १३७।८ महूणजी १३७।९ मोत्कलवारजी १३७।१० चक्रडाणजी १३७।११ मूकटजी १३७।१२ इन में बड़े संग्रामसिंहजी १३७ तो साँभर के राजा हुवे बाकी के बंश के चहुवाण इन नामों सें कहलाये बालेराजी १३७।२ के बालेरा बंगडदेवजी १३७।३ के बंगडिये गोलपालजी १३७।४ के गोलवाल पुष्टपालजी १३७।५ के पुष्टवाल मलयराजजी १३७।६ के मलयेचे चाहोड़देवजी १३७।७ के चाहोड हरीणदेवजी १३७।८ के हरीणे महूणजी के माल्हण मोत्कलवारजी के १३७।१० मुकलार चक्रडाणजी १३७।११ के चक्रडाणे मूकटजी १३७।१२ के मू:

वटे कहलाये संग्रामसिंहजी १३७ के शिवादत्तजी १३८ हुवे उन को सांबदत्तजी १३८ भी कहते हैं उन के भोगादत्तजी १३९ हुवे उन के शिवदत्तजी १४०।१ और चित्रकजी १४०।२ ये दो महाराजकुमार हुवे शिवदत्तजी १४० सांभर के राजा हुवे चित्रकजी १४०।२ के वंश के चित्त कहलाये शिवदत्तजी १४० के रुद्रदत्तजी १४१ हुवे उन के सात ७ महाराजकुमार हुवे ईश्वरजी १४२।१ भैरवजी १४२।२ क्षयरवजी १४२।३ अभ्रवाजजी १४२।४ व्याघ्रोराजी १४२।५ ब्रध्नदेवजी १४२।६ घारखेलजी १४२।७ इन में ईश्वरजी १४२ सांभर के राजा हुवे भैरवजी १४२।२ के भैरवे कहाये क्षयरवजी १४२।३ के क्षयरवे अभ्रवाजजी १४२।४ के अभ्रावे व्याघ्रोराजी १४२।५ के वाघोरे ब्रध्नदेवजी १४२।६ के ब्रध्नेचे घारखेलजी १४२।७ के घारखेले ईश्वरजी १४२ के आठ बेटे हुवे उमादत्तजी १४३।१ मयूरध्वजजी १४३।२ बहुलक

जी १४३।३ गजलदेवजी १४३।४ तिलवाटजी १४३।५ चीबकजी १४३।६ सर्पटजी १४३।७ चित्रराजजी १४३।८ इन में उमादत्तजी तो साँभर के राजा रहे मयूरध्वजजी १४३।२ के बंश के मोरेचे कहलाये मयूरध्वजजी १४३।२ के बेटे तो बहुत थे परंतु पर्वतजी १४४ और तुष्टनपालजी १४५ के बंश के जुदे जुदे नाम सें कहलाये पर्वतजी १४४ के पहिया और तुष्टनपालजी १४५ के साँचोरे कहलाये क्यों कि तुष्टनपालजी १४५ साँचोर देश के राजा हुवे थे बहुलकजी १४५।२ के बहोले गजलदेवजी १४३।४ के गयले तिलवाटजी १४३।५ के तिलवाडे चीबकजी १४३।६ के चीबे सर्पटजी १४३।७ के सर्पाटे चित्रराजजी १४३।८ के चित्रावे कहलाये चित्रराजजी १४३।८ के बेटों में सें इन सात के बंश के चहुवाण नीचे लिखे हुवे नामों सें कहलाये चौंडालीकजी १४५।१ के चंडालिये चाहुडजी १४५।२ के चाहेडे बटराजजी १४५।३

के बडेरे मोरिकजी १४४।४ के मोरी उन मोरियैं मैं सें चित्रांगजी नाम मोरीनें चीतोड़ का किलाबनवाया था रैवतजी १४३।४ के रेवडे चंदनजी १४४ के चाँदने बंकटजी १४४।७ के बंकटे कहलाये ईश्वरजी १४२ के बडे बेटे उमादत्तजी १४३ जो सांभर के राजा थे उन के च्यार महाराज कुमार हुवे बडे चतुरजी १४४।१ वे तो सांभर के राजा हुवे दूसरे वत्सलजी १४४।२ उन के वंश के वच्छल कहलाये तीसरे भवाचकजी १४४।३ उन के वंश के पावचे चौथे कम्मरजी १४४।४ उन के कम्मरिये कहलाये चतुरजी १४४ के तीनमहाराजकुमार हुवे पहले सोमेश्वरजी १४५।१ वे तो सांभर के राजा हुवे दूसरे तुलसीरक्षकजी १४५।२ उन के वंश के तुलछीरछण कहलाये सोमेश्वरजी १४५ के दो२ महाराज कुमार हुवे बड़े भरतजी १४६।१ छोटे उदयजी १४६।२ इन में पहले भरतजी १४६।१ का वंश लिखाजाता है पीछे

जरथजी १४६ का बंशलिखाजायगा भरतजी १४६ के सुदेक्षजी १४७ हुवे उन के महीसिंहजी १४८ हुवे उन के सिंहजी १४९ हुवे उन के चंद्रगुप्तजी १५० हुवे चंद्रगुप्तजी के १५० दो महाराजकुमार हुवे पहले प्रतापसिंहजी १५१।१ दूसरे आरतलजी १५१।२ इन में पहले छोटे भाई आरतलजी १५१।२ का बंश लिखाजाता है आरतलजी के १५१ चतुरंगजी १५२ हुवे उन के बंश के चोरंग कहलाये चतुरंगजी १५२ के जयधरजी १५३ हुवे उन के सुबाहुजी १५४ हुवे उन के समरसिंहजी १५५ हुवे उन के आखंडलजी १५६ हुवे उन के बीरदेवजी १५७ हुवे उन के बिशोकजी १५८ हुवे उन के बलराजजी १५९ हुवे उन के बरसिंहजी १६० हुवे उन के बिलहणजी १६१ हुवे उन के जयदेवजी १६२ हुवे उन के जहजी १६३ हुवे उन के बिजयपालजी १६४ हुवे उन के कर्णजी १६५ हुवे उन के लक्ष्मणजी १६६ हुवे उन के सहदेवजी १६७ हुवे उन के दुःशास

नजी १६८ हुवे उन के महावीरजी १६९ हुवे उन के रामजी १७० हुवे उन के विजयराजजी १७१ उन के हरिसिंहजी १७२ उन के गोविंदजी १७३ उन के तीन बेटे हुवे बड़े भीमजी १७३।१ दूसरे मौक्तिकजी १७३।२ तीसरे माणिक्यराजजी १७३।३ मौक्तिकराजजी १७४।२ के वंश के मुक्तिये और माणिक्यराजजी १७४।३ के माणिक्ये कहलाये भीमजी १७४ के धुरंधरजी १७५ हुवे उन के सहस्रमल्लजी १७६।१ और देवराजजी १७६।२ ये दो बेटे हुवे पृथ्वीराजजी १७७ और जयचंदजी की लड़ाई में पृथ्वीराजजी १७७ के साथ थे और वहां ही मारेगये सहस्रमल्लजी १७६ के संयमराजजी १७७ हुवे उन के लंगारीराजजी १७८ हुवे देवराजजी के आततायीजी १७७ हुवे इससें आगे मालूम नहीं कि इनका वंश ज़मीन पर रहा या नहीं यह आरत्नजी का वंश लिखा अब बड़े प्रतापसिंहजी १५१ का लिखाजाता है प्रतापसिंहजी के सिंहदे-

वजी १५२ हुवे उन के सिंहवरजी १५३ उन के मोहनरूपजी १५४ उनके रत्नसिंहजी १५५ उन के सेनराजजी १५६ उन के संप्रति राजजी १५७ उन के नागहस्तजी १५८ उन के स्थूलानंदजी १५९ उन के लोहधारजी १६० उन के धर्मसारजी १६१ उन के वैरिसिंहजी १६२ उन के विबुधसिंहजी १६३ उनके योग्ररजी १६४ उन के चंद्रराजजी १६५ हुवे ये सं० ८७५ में अपनी तर्फ सें सांभर में कामदार रख के आप अजमेर में रहने लगे चंद्र राजजी १६५ के कूसमराजजी १६६ हुवे उनके हरिराजजी १६७ उन के विल्हणराजजी १६८ उन के पृथ्वीराजजी १६९।१ और अनुराजजी १६९।२ ये दो बेटे हुवे अनुराजजी १६९।२ के वंश की हकीकत तो कुछ मालूम नहीं कोई कहते हैं उन के बेटा नहीं हुवा पृथ्वीराजजी १६९ को डिडुरजी १६९ भी कहते हैं उन के वंश के डेडरे चहुवान कहलाये पृथ्वीराजजी के धर्म्माधिराजजी १७० हुवे उन के

बीसलदेवजी २७१ हुवे इन की मरजी एक राणीजी पर बहुत थी इस बात्त सें दूसरी राणियें के दिल में दुशमनी पैदा होगई इसका यह फल हुवा कि उन राणियों नें किसी वैद्य की मार्फत राजाजी को ऐसी दवा खिलाई कि राजाजी नपुंसक होगये तब बीसलदेवजी २७१ उदास होकर टोडे सें दक्षिण की तर्फ गोकर्ण नाम महादेवजी का स्थान है वहाँ तप करने को चले गये उहाँ एक साधू नें ऐसी दवा दी जिससैं राजाजी के पुरुषार्थ पहले सैं भी ज़्यादा बंधगया तब खुश होकर गोकर्ण महादेवजी का मंदिर बनाने और बीसलपुर नाम गाँव बसाने का हुक्म दिया ये दोनों चीज़ें अब तक मौजूद हैं जब बीसलदेवजी २७१ अजमेर आये तो इन का ऐसा दिल बिगड़ा कि शहर की औरतों की इज़्ज़त लेने लगगये तब बहुत से भले आदमियों नें अपनी बहू बेटी और जगह भेजदी और सब बस्ती नाराज होगई ऐसा वक्त पाकर गुजरात्त में जो अनिहलपुर पाट

ए के राजा सोलंखी बालुकराजजी नाम थे उनौंनें अपने घराने के राजपूत भेजकर जालोर १ और सोरुत २ ये दोनौं इन के परगाने दबा लिये जब इन परगानौं के तालुकदारौं नें यह खबर राजाजी के पास भेजी तो राजाजी नें फ़ौज भेजकर अपने दोनौं परगानें छुड़ालिये और बालुकराजजी परभी चढ़ाई करी दोनौं तर्फ़ सें कोई दिनौं तक लड़ाई रही फिर बालुकराजजी नें यह कहला भेजा कि एक तो जवान औरत और १००००००० एक किरोड रुपये लेकर आप चले जावें तो ठीक है बीसलदेवजीनें औरत तो लेली और रुपयों के वास्ते यह कहला भेजा कि इन रुपयों सें हमारे नाम का १ एक शहर बसादो यह कहकर बीसलदेवजी सं. ९३६ में पुष्करजी का मेला देखनें को गये वहां एक १ महाजन की लडकी देखी जिसकी मानें इन के महाराजकुमार सारंगदेवजी १७२ को दूध पिलाया था सो विधवा होने के सबब सें पुष्कर में आके तप करती थी उस को देखतेही

मोहित होगये उस लडकी नें इन को बहुत से रोका परंतु इनोंने जबर्दस्ती उस को दुःख दिया उस नें रोस में होकर शापदिया कि तुम्हारा चित्त बिगड जावे उस के शापसें ये बावले होगये और बडी खराबियाँ करने लगे यहाँ तक कि मुल्क ऊजड होगया और इनों ने अपने बेटे सारंगदेवजी १७२ भी मार डाले एक दिन ये शहर के बाहर डेरों में खडे थे कि एक साँपनें काट लिया इस से वहाँ हीं परलोक को पधारे इनोंनें पहले दिनों में अजमेर के पास बीसलसागर नाम तालाव बनायाथा सो हालतक मोजूद है बीसलदेवजी १७१ सें पीछे सारंगदेवजी १७२ के बेटे आनाजी १७३ गद्दीपर विराजे इन्होंनें फिर मुल्क आबाद क़िया और आनासागर नाम तालाब जो अजमेर के पास हाल मोजूद है बनवाया इन को अन्नलदेवजी १७३ और विगृहराजजी १७३ भी कहते हैं इन के जयसिंहजी १७४ हुवे इन के आनंदमेयजी

१७५ इन के सोमेश्वरजी १७६।१ और कल्हजी १७६।२ जिन को कन्हजी भी कहते हैं ये दो २ महाराजकुमार हुवे जब दिल्ली के राजा तँवर अनंगपालजी के ऊपर कन्नोज के राजा राठोड जयचंदजी चढ आये उस वक्त अनंगपालजी की मदद वास्ते सोमेश्वरजी १७६ भी गये थे उस लड़ाई के पीछे अनंगपालजी की बेटी को ब्याह कर अजमेर आये कितनेक वर्षौं पीछे अनंगपालजी ने जब अपनी बेटी अजमेर सें बुलाई उन दिनौं में उन के गर्भ था उन के दिल्ली में सं· ११२५ वैशाख वदि २ बृहस्पति वार के दिन पृथ्वीराजजी १७७ का जन्म हुवा इन की जो कुछ बड़ाई थी सो ज़ाहिर होगी जब ये ८ आठ वर्ष के ही थे तब्र नानाजी नें दिल्ली में बुलाये थे और इन के नानाजी का प्रताप बहुत बढ़ा हुवा था नागोर लाहोर पिशावर वग़ैरह के राजा उन्ही की चाकरी करते थे उन दिनों में मंडोवर के राजा पडिहार नाहरराजजी दिल्ली

में अनंगपालजी के पास आयेथे कचहरी में पृथ्वीराजजी १७७ को देखकर राजी हुवे और अनंगपालजी के आगे बहुतसी बड़ाई करी पृथ्वीराजजी १७७ नें राजी होकर नाहरराजजी को एक १ सोने की मालादी उस वक्त अनंगपालजी नें नाहरराजजी की लड़की का पृथ्वीराजजी सें ब्याह करने की बातचलाई फेर पृथ्वीराजजी १७७ तो अजमेर आगये और नाहरराजजी मंडोवर को आये इन दिनों में अनिहलपुरपाटण के राजा भोलाराय भीमजी नें अपने काका के बेटे ७ भाई किसी कसूर सें मुल्क बाहर निकालदिये थे वे सातों भाई महाराज कुमारों को पृथ्वीराजजी १७७ नें अजमेर बुलालिये थे एक दिन ये ७ सातों भाई दरीखाने में हाजिर थे उन में सें बडे भाई नें सादे दिल सें मूंछपर हाथ रक्खा उस वक्त पृथ्वीराजजी १७७ के काका कन्हजी १७६ नें जिन के यह नियमथा कि जो मेरे आगे मूंछपर हाथरक्खे

उस को ज़रूर मार डालूं तरवार उठा के उस का सिर जुदा कर दिया फिर जब और भी भाई लड़ने पर तयार हुवे तो कन्हजी २७६ वगैरह दरबार के सर्दारों नें सब मार डाले उस दिन पृथ्वीराजजी २७७ ने अपने काकाजी सें यह अर्ज करी कि आज सें पीछे आप मेरी अर्ज सें आँखों के आगे १ पट्टी रक्खा करैं उस को लड़ाई या रण वास में खोला करें यह बात कन्हजी ने भी कबूल करी जब भोलाराय भीमजी ने अपने भाइयों का मरना सुना तो पृथ्वीराजजी २७७ सें कहला भेजा कि आप ने हमारे भाइयों को मार डाला इस का फल अच्छा न होगा यह सुन कर पृथ्वीराजजी ने भी यह कह भेजा कि जिस वक्त आया चाहते हो उसी वक्त हम तयार हैं कोई दिनों पीछे सोमेश्वरजी २७६ ने मंडोवर के राजा नाहरराजजी को कहला भेजा कि हम कुंवर पृथ्वीराज २७७ का ब्याह किया चाहते हैं सो तुम भी अपनी लड़की के ब्याह की तया

रीकरो यह सुन तेही नाहरराजजी ने कहा कि मैंने तो अपनी लडकी देनी कब कही थी फक्त दिल्ली में बात चली थी और तुम तो हमारी बराबरी के भी नहीं सो बेटी किसतरह दी जावै जब यह बात अजमेर में पहुंची तो पृथ्वीराजजी १७७ सोमेश्वरजी ने बहुतसे रोके परंतु अपने काका कन्हजी १७६ और अपने साथियों को लेकर मंडोवर पर चढ़ाई करदी जब यह खबर मंडोवर में पहुंची तब नाहर राजजी नें यह तजबीज करी कि आप तो फौज लेकर अनिहलपुर पाटण की तर्फ रवाने हुवे और चार हज़ार ४००० मीने और मेर उन घाटों को रोकने वास्ते भेजे कि जो अनिहलपुर पाटण के रस्ते में हैं जब रस्ते में पृथ्वीराजजी १७७ ने यह बात सुनी तो अपनी फौज की बाग भी अनिहलपुर पाटण की तर्फ मोडी जब रस्ते में मीने और मेर मार भगाये तब नाहरराजजी फौज लेकर आपहुंचे बहुतसी लड़ाई होने पीछे नाहररा-

जजी भाग कर अनिहलपुर पाटण के किले में घुसगये वहाँ सें अपनी लडकी व्याह देने के वास्ते कहला भेजा जब यह बात पृथ्वीराजजी ने मंजूर करी तो नाहरराजजी ने मंडोवर में आकर अपनी बेटी पृथ्वीराजजी १७७ को व्याहदी पृथ्वीराजजी १७७ अजमेर में पधारे इन दिनों में आबू के राजा पंवार सलखजी के एक १ बेटी ऐसी खूब सूरत हूई कि जिन का जिकर सुन कर अनिहलपुर पाटण के राजा भोलाराय भीमजी उन पर मोहित होगये और टीला नाम १ अपना कामदार दोस्ती की तरह का कागज देकर सलखजी पास भेजा और यह अच्छी तरह समझा दिया कि जब तक बन सके नर्मी सें काम करना जो नहीं बने तो ज़ोर दिखा कर भी काम निकालना जब वहाँ जाके टीलाने नर्मी सें काम निकलता नही देखा तब हुक्म के माफिक ज़ोर दिखाया यह सुन कर सलखजी ने यह विचारा कि जो जबरदस्ती सें लड़की छीनलेंगे तो इज्जत में फर्क-

पडेगा और लडकी के लायक तो चाहुवाण पृथ्वीराजजी १७७ हैं यह विचार कर आप तो रण वास सुधाँ अजमेर की तर्फ रवाने हुवे और राज की निगहवानी वास्ते फौज को आबू पर छोडगये यह जब भोलाराय भीमजी ने सुनी तो गुस्से में आकर आबू पर चढाई करदी और सलखजी की फौज को मार कर उन के मुल्क में अपना कब्जा करलिया और थोडी फौज सलखजी की तर्फ भी रवानें करीथी परंतु इस बात की खबर पाकर सलखजी और रस्ते होकर सोमेश्वरजी १७६ के मुल्क में नागोर तक पहुंचगये और वहाँ जाकर सोमेश्वरजी १७६ सें यह कहला भेजा कि भोलाराय भीमजी हमारी लडकी को जबर्दस्ती में लिया चाहते थे हम आप के महाराज कुमार पृथ्वीराजजी १७७ के साथ लडकी का व्याह करने वास्ते यहाँ तक आपहुंचे हैं अब आप को अख़्तियार है यह सुन कर सोमेश्वरजी १७६ ने कैमास नाम सामंत को जो अकल मंद कामदार भीथा बहुतसी तस-

ल्ली की बातें समझा कर भेजा और सगाई भी मंजूर करी इस तर्फ भोलाराय भीमजी भी सगाई की बात सुनते ही फौजलेकर चहुवाणों को जीतने वास्ते सोकत शहर के पास आपडे इधर सें पृथ्वीराजजी १७७ ने भी भोलाराय भीमजी का आना सुनकर सोमेश्वरजी १७६ सें बिना कहे ही कैमास की मदद वास्ते कितनेक सामंतों के साथ फौज भेजी इहांजब फौज कैमास के शामिल हुई तो सब बहादुरों के यही सलाह ठहरी कि नागोर में तो थोडी सी फौज के साथ कैमास को छोडें और बाकी फौज भोलाराय भीमजी की फौज में रात के वक्त धावा मारे सो सलाह के मुवाफिक थोडीसी फौज के साथ कैमास तो नागोर में रहा बाकी फौज सोकत के सामने आपडी सलखजी पंवार भी उसी फौज में थे इधर भोलाराय भीमजी ने कैमास को दगे सें क़ैद करने वास्ते थोडी सी फौज के साथ अमरसिंह नाम कामदार भेजा उसने वहां जाकर सब तरह उपाय किया

परंतु इस के जाल में कोई नहीं फँसा फिर कैमास की फौज ने रात को छापा मारकर अमर सिंहकी फौज सुधाँ मार भगाया और उस के डेरे लूट लिये फिर कैमास भी उस फौज में जो भोलाराय भीमजी की फ़ौज में छापा मारने वास्ते गई थी शामिल जा हुवा फिर इनों ने रात में छापा मारा बहुत बडी लडाई हुई आखिर भोलाराय भीमजी ने भाग कर अनिहलपुर पाटण का रस्ता लिया फतह पृथ्वीराजजी १७७ की हुई इस से पीछे वही फ़ौज आबू के मुल्कपर सलखजी को बिठाणे वास्ते और भोलाराय भीमजी की फ़ौज आबू में थी उस के निकालने वास्ते गई जब दुश्मन निकाले गये और सलखजी का मुल्क उन के हवाले अच्छी तरह होगया तब सलखजी ने पृथ्वीराजजी १७७ को बुलाकर बेटी का ब्याह कर दिया पृथ्वीराजजी १७७ ने अजमेर में आकर सलखजी और उन के पुत्र जैत्त कुमारजी दोनों बहादुरी के कारण से बुलाकर उहाँही रख लिये एक बार का

ज़िकर है कि गज़नी का बादशाह शाहाबुद्दीन मुहम्मद ग़ोरी की एक मज़ीदार पातर औरत थी उस पर हुसैन नामी मुहम्मद गोरी के घराने का एक आदमी आशिक होगया था यह खबर पाकर बादशाह ने हुसैन को बहुत सा धमकाकर यह कहा कि तू मेरे मुल्क सें निकलजा वह चुपके ही उस औरत को भी साथ लेकर हिंदुस्तान में आगया इहाँ बादशाह के डर सें और जगह तो नहीं रह सका परंतु नागोर में आकर पृथ्वीराजजी १७७ के पास कुछ नज़र के साथ यह अर्ज करा भेजी कि मेरा बचाना आप के हाथ है यह सुन कर पृथ्वीराजजी १७७ नें उस को रखलिया यह बात जब बादशाह ने सुनी तो सुनतेही पृथ्वीराजजी १७७ के नाम लिख भेजा कि यह हमारा चोर है इस कों सोंप देना चाहिये यह सुन कर जब पृथ्वीराजजी १७७ ने मंज़ूर नहीं करी तब बादशाह ने दूसरी बार सोमेश्वरजी १७६ के नाम इस तरह का खत भेजा कि आपके महा

राजकुमार ने हमारा चोर रख लिया है इस वास्ते आप को चाहिये कि महाराजकुमार को समझा कर हमारा चोर पीछा दिवाया जाय इस को सुन कर सोमेश्वरजी १७६ तो चुप रहे परंतु पृथ्वीराजजी १७७ ने यही फर्माया कि हम ने इस को अपनी पनाह में रक्खा है अब कभी नहीं सोंपेंगे इस बात पर बादशाह चढ आया परंतु हार कर ६ दिन तक पृथ्वीराजजी १७७ की क़ैद में रहा फिर सर्दारों के कहने से पृथ्वीराजजी १७७ ने जीता छोड दिया पृथ्वीराजजी १७७ के नाना अनंगपालजी के बेटा नहीं था इस वास्ते उन ने पृथ्वीराजजी १७७ को अपनी गोद लेकर संवत् ११२८ मार्गशीर्ष सुदी ५ को राज देदिया अब अजमेर और दिल्ली का एक ही राज होगया अनंगपालजी गंगाजी पर रहने लग गये कोई दिनों में पृथ्वीराजजी १७७ अपने नानाजी से मिलने वास्ते गंगाजी पधारे थे यह वक्त पाकर भोलाराय भीमजी ने जिन के काका के बेटे

७ सातभाई पृथ्वीराजजी १७७ के दरीखाने में मारेगये थे और इस वात सें उन के दिल में दुश्मनी थी दिल्ली पर चढाई करदी इहां दिल्ली में सोमेश्वरजी १७६ थे इन ने उन का सामना किया परंतु सोमेश्वरजी मारेगये भोलाराय भीमजी फतह पाकर अनिहल्लपुर पाटण आगये जब पृथ्वीराजजी १७७ ने यह खबर सुनी तो फौजलेकर भोलाराय भीमजी पर चढाई करी और उन को मारलिया जब पृथ्वीराजजी १७७ दिल्ली में थे कोई दिनों मैं पहली दुश्मनी के सबब सें शहाबुद्दीन इन पर फिर चढ आया परन्तु फिर हार कर पीछागया संवत ११५१ में कन्नोज के राजा राठोड जयचंद्रजी ने अपनी बेटी संयोगिता का स्वयंबर बनाया कि बहुत से राजा बुलाकर अपनी बेटी के हाथ मैं माला दी कि जिस को वह पसंद करे उस के गले मैं माला डाल दे इस स्वयंवर में जयचंदजी ने पृथ्वीराजजी को तो नहीं बुलाये और उन की मूरत बना के दरवान की जगह रखदी यह वात सुन कर

पृथ्वीराजजी २७७ अपने सर्दारों के साथ धावा मार कर संयोगिता को लेगये इस में उन के बडे शूरवीर १०८ सर्दारों में से चौंसठ ६४ सरदार मारेगये ये संयोगिता पर ऐसे मोहित हुवे कि रात दिन रनवास मैं ही रहने लगगये इस वक्त को पाकर शहाबुद्दीन फिर इन पर चढ आया इस लड़ाई में पृथ्वीराजजी २७७ पकडे गये इन पृथ्वीराजजी २७७ ने और भी मुहबा वगैरह की कई लडाई जीती और कई लडाइयों मैं राजों को जीतकर उन की लड की ब्याही शहाबुद्दीन तो फत्तह पाकर अपनी तर्फ से दिल्ली में कुतुबुद्दीन ऐबक को छोडकर ग़ज़नी को गया पीछे से कुतुबुद्दीन के साथ लड़ाई मैं पृथ्वीराजजी २७७ के बडे बेटे रत्नसिंहजी २७८ मारेगये छोटे सामंत सिंहजी २७८।२ बालक थे उन को बुलाकर कुतुबुद्दीन ने मेवात का परगना दिया इस वक्त से ही दिल्ली में मुसलमानों का राज होगया सामंत सिंहजी २७८ के जयमल्लजी २७९ हुवे उन को प्रल्हादजी

१७९ भी कहते हैं उन के गोविंदजी १८० हुवे उन कौं सोमेश्वरजी १८० भी कहते हैं गोविंदजी के शूरजी १८१ और जयपालजी १८१।२ ये दो २ बेटे हुवे शूरजी को वीरबागभट्टजी १८१ और नारायणजी भी कहते हैं शूरजी १८१ के जैतराजजी १८२।१ और रणधीरजी १८२।२ हुवे इन दोनों ने रणथंभोर के रहने वाले भीलों को मार कर वहां अपणा राज कर लिया जैतराजजी १८२।१ अपणे छोटे भाई रणधीरजी १८२।२ को पांच लाख की जागीर के साथ छाण का किला देकर आप रणथंभोर के मालिक रहे इन के हम्मीरजी १८३ हुवे ये बडे शूर वीर थे इन की यह हकीकत है कि बादशाह अलाउद्दीन की किसी बेगम को लेकर मुहम्मद शाह नाम एक आदमी ने हम्मीरजी १८३ के इहां पनाह लीथी जब अलाउद्दीन ने हम्मीरजी को १८३ कहला भेजा कि इस आदमी को मेरे हवाले करदो तब हम्मीरजी ने कहला भेजा कि मैं इस को

कभी नहीं सौंपौंगा जब सं.१३१२ में अल्लाउद्दीन उन पर चढ़ आया रस्ते में छान के क़िले मैं हम्मीरजी १८३ के काका रणधीरजी १८२ थे इन नें बादशाह का सामना किया कोई दिनों तक लड़ाई करकें रणधीरजी १८२ मारेगये क्षण मैं अलाउद्दीन का क़ब्ज़ा होगया अलाउद्दीन ने आलणपुर मैं जो रणथंभोर से ३ कोस पर है फौज डालदी और सब घाटे रोक लिये एकरात में हम्मीरजी के १८३ हराम खोर कामदार ने छाण के किले मैं अपना क़ब्ज़ा रहणे के लालच सें अलाउद्दीन के आगे किले के सब भेद बतादिये और यह ठहर गई कि हम हम्मीरजी १८३ के आगे यह अर्ज करदेंगे कि भंडार मैं तो नाज रहा नहीं और बाहर सें आसक्ता नहीं जब सवेरे यही बात कामदार ने हम्मीरजी १८३ के आगे अर्ज करदी तब सरणागत मुहम्मदशाह ने कहाकि अब आप मुझे बादशाह को सौंपदीजिये फिरभी हम्मीरजी १८३ ने यही कहा कि मेरे मरणे पीछे जो कुछ होसो

हो जीते तो तुम को न सौंपूंगा आख़िर हम्मीरजी १८३ के मारे जाने पीछे मुहम्मद शाह मारा गया इज़्ज़त बिगड़ने के डर सें सारा रणवास आग में जल गया हम्मीरजी के १८३ एक बेटे पूर्णपालजी १८४ नाम थे जिन को रत्नजी १८४ भी कहते हैं सो इस लड़ाई सें पहले उदयपुर के राणा लछमनजी के पास भेज दिये थे उन के वंश में नीमराणजी नाम राजा हुवे थे उन ने नीमराणा नाम छोटा सा शहर बसाया और हाल तक उन के वंश के वहां ही राज करते हैं इलाका बहुत छोटा है जो पृथ्वीराजजी १७७ के काका कन्हजी १७६ थे उन के वंश के चहुवाण पहले तो मैनपुरी नाम शहर के परगने में मालिक थे अब भी उसी तर्फ़ बसते हैं इस किताब में ऊपर लिख आये हैं कि भरतजी २४६ का वंश पहले लिखकर फिर उदयजी २४६ का लिखेंगे सो अब उदयजी २४६ का वंश लिखते हैं सोमेश्वरजी २४५ के छोटे बेटे जो उदयजी २४६ थे उन के

चक्रपाणिजी २४७।१ मकरदेवजी २४७।२ गोष्टपालजी २४७।३ जामजी २४७।४ और बकुटजी २४७।५ ये पाँच बेटे हुवे उन में से मकरदेवजी २४७।२ के मकरा कहलाये और गोष्टपालजी २४७।३ के गोठवाल जामजी २४७।४ के जामा बकुटजी २४७।५ के बउडा कहलाये चक्रपाणिजी २४७ एक बार अपने भाइयों समेत चूड़ामणिजी नाम यादव मामा के शहर कालपी में गये थे जब मामाजी से रुखसत मांगी तब मामाजी नें यह कहा कि भरतजी के २४६ बेटे बुहेष्टजी २४७ तो राज करते हैं तुम वहां जाकर उन के चाकर कहलाओगे इसवास्ते यहां ही रहना ठीक है यह सुनतेही चक्रपाणिजी २४७ को गुस्सा आया और अपने सिपाहियों को लेकर मैनपुरी पर चढ़ाव कर दिया वहां चूड़ामणिजी के घराने के कोई राजा थे उन को मार कर राज लेलिया चक्रपाणिजी २४७ के देवकीनंदजी २४८ हुवे उन के यशोदानंदजी २४९ हुवे ये दिल्ली के राजा तंवर

भवनपालजी के साथ लड़ाई में मारे गये उन के नंदनंदजी २५० हुवे इन्हों ने पित्ता का बदला लेने वास्ते दिल्ली पर चढ़ाई करी इस लड़ाई में भवन पालजी भागगये और डर सें इन को बेटी व्याह दी नंदनंदजी २५० ने अपना राज बहुत बधालियाथा इन के केशवराजजी २५१ हुवे विजयपुर के राजा पँवार चंद्रराजजी के हाथ सें लड़ाई में मारे गये इन के मोहनजी २५२ हुवे उन के समुद्रराजजी २५३ हुवे उन के गोपालजी २५४ हुवे उन को गायग्वालजी २५४ भी कहते हैं जब इन पर कालपी के राजा यादव प्रतापजी मैनपुरी के राजा के मारने सें पैदा हुई पुरानी दुश्मनी सें किसी मुसल्मान राजा को चढा लाये तो ये उस लड़ाई में हारकर फौज समेत्त तापी नदी के पास आसेर में आगये वहां मँकुवाण हम्मीरजी नाम राजा थे उन को मार कर राज लेलिया और वहां एक बडा संगीन किला बनवाया उन के भीमचंद्रजी २५५ हुवे उन को

चंद्रसेनजी १५५ भी कहतेहैं इन के घर के सब लोग अपनी कुलदेवी आशापूराजी की भक्ति बहुत करते थे उन के संवत् १४८१ में भानुराजजी १५६ नाम बेटे हुवे थे ये अपने साथियों के साथ जंगल में खेल रहे थे उस वक्त अचानक गभीरारंभ नाम राक्षस आकर उन को खागया उस वक्त आशापूराजी देवी ने अपने भक्त के बेटे की यह दशा देखकर उन की हड्डी इकट्ठी कर के अपनी करामात सें उन को जीते करदिये और फर्माया कि हे बेटे जो कि तू हड्डियों सें जीता हुवा है इससें तेरा नाम अस्थिपाल १५६ होगा और तेरे वंश के हाडा कहलावैंगे और आश्विन शुदि ६ छठ के दिन तू जिलाया इस वास्ते तेरे वंश के इस दिन मेरी जियादा पूजा किया करैं और तेरा प्रताप बढता रहैगा यह फर्मा कर और एक बरछी देकर देवीजी अंतरध्यान होगई भानुराजजी १५६ ने देवी की करामात सें जोर पाकर उस राक्षस को ढूंढ कर उसी बरछी सें मारडा·

ला और अपने पिताजी के पास आकर सारी हकीकत कही भौमचंद्रजी २५५ नें राजी हो कर आशापूराजी का मंदिर बनाया और यह मुकर्रिर कर दिया कि हमारे वंश के आश्विन सुदि ६ के दिन आशापूराजी की ज़ियादा पूजा किया करैं इस के पीछे महाराज कुमार भानुराजजी २५६ जिन का आगे अस्थिपालजी २५६ नाम लिखाजायगा देशों कोजीत ने चढे पहले ही अनिहलपुरपाटण पर चढाई हुई वहां के राजा गोभिलराजजी सोलंखी ने पहलें तो लडाई करी फिरहार कर २००००००० रुपये देकर मेल कर लिया अस्थिपालजी २५६ ने कितनाक तो उन का मुल्क अपने कब्जे में रक्खा बाकी उन को देदिया यह खबर पाकर कुबेरजी नाम मंकुवाण ने कि जिनके बडे हम्मीरजी को अस्थिपालजी २५६ के दादा गोपालजी २५४ ने आसेर में सें निकाल दियाथा वे वहां सें निकल कर मोरी नाम शहर में रहने लगगये थे मारे डर के अस्थिपा

लजी १५६ को नाल बंदी देना मंजूर किया और अपनी बेटी ब्याह दी पीछे अस्थिपालजी १५६ ने कच्छभुज के राजा यादव भीमजी को जीता और वहां आशापूराजी का मंदिर बनाया वहां सें द्वारका में भगवान का दर्शन कर के हिंगुलाज देवी का दर्शन करके वहां भी एक आशापूराजी का मंदिर बनाया वहां सें आकर मारवाड सिंध और कश्मीर देश जीत कर ज्वालामुखी का दर्शन किया फिर अपने शहर में आये और भी कई राजाओं ने इन के वास्ते नजरें भेजी मुल्क भी इन के नीचे बहुत आगये भीमचंद्रजी १५५ पीछे ये राजा हुवे इन्हों ने गोदावरी नदी के पास अस्थिपालपुर नाम अपने नाम का शहर बसाया इन के पृथ्वीपालजी १५७ हुवे उन को धारपालजी १५७ चंडकिरणजी १५७ चंद्रराजजी १५७ भी कहते हैं उन के सेनपालजी १५८ हुवे उन को आज्ञा कीर्तिजी १५८ और लोकपालजी १५८ भी कहते हैं उन के शत्रुशल्यजी १५९ हुवे उन के

रामोरजी १६० हुवे उन के नृसिंहजी १६१ हुवे उन के हरिवंशजी १६२ हुवे उन के हरजसजी १६३ हुवे उन के सदाशिवजी १६४ हुवे उन के रामदासजी १६५ हुवे उन के रामचंद्रजी १६६ हुवे उन के भागचंद्रजी १६७ हुवे उन के रूपचंद्रजी १६८ हुवे उन के मंडनजी १६९ हुवे ये सदा शिकार खेलने मेंही रहा करते थे एक दिन ये तो शिकार खेलने पधारे थे और पीछे सें एका एकी उज्जैन के राजा पंवार लल्लजी आसेर के किले में घुस आये किले में अपना कब्ज़ा कर लिया यह खबर सुनकर मंडनजी १६९ थोडी बहुत फौज लेकर मेवाड के राज में आगये वहां के राजा रावल तेजसिंहजी तो एक वर्षसें मारवाड के राजा पडिहार अज्जजी के साथ लड रहे थे इन्हों ने इस मुल्क सें थोड़ास मुल्क दाबलिया और थोडेही दिनों में अपने नाम का मंडन गढ नाम किला बनाया जिस को अब मांडलगढ कहते हैं जब रावल तेजसिंहजी मार वाड की लडाई सें पीछे आये तो इहाँ

अपना मुल्क दूसरे के नीचे दबा हुवा देखा इस वास्ते दो बार मांडलगढ पर चढाव किया परंतु कुछ फायदा नहीं मिला मंडनजी १६९ के आत्मारामजी १७० हुवे उन के आनंदराजजी १७१।१ और जयराजजी १७१।२ ये २ दो महाराजकुमार हुवे जयराजजी तो सोमेश्वरजी १७६ के सर्दारों में थे सो कन्नोज की लडाई में मारे गये उन के बेटे अक्षयराजजी १७२ शहाबुद्दीन गोरी की लड़ाई में काम आये आनंदराजजी १७१ के हम्मीरजी १७२।१ और गंभीरजी १७२।२ ये दो बेटे हुवे हम्मीरजी १७२ ने मांडलगढ के पास हम्मीरपुर नाम गांव बसाया और रहिया जात के राजपूत रणधीरजी को मारकर नैणवा नाम शहर लेलिया जो हाल बूंदी के नीचे है हम्मीरजी १७२।१ और गंभीरजी १७२।२ ये दोनों भाई तो पृथ्वीराजजी १७७ के सर्दारों में रहे और कन्नोज की लडाई में मारे गये हम्मीरजी १७२ के सुमेरुजी १७३ हुवे उन के बेटा नहीं था गंभीरजी १७२ के रणधवलजी

२७२ हुवे ये अपने दादा आनंदराजजी २७२ के पास रहे और आनंदराजजी २७२ के पीछे एही उन की गद्दी पर विराजे उन के सरदारजी २७४ हुवे उन के जोधराजजी २७५ हुवे इन को भीमसेनजी २७५ बीरमदेवजी २७५ रायचंद्रजी २७५ चंद्रजी २७५ और कलिकर्णजी २७५ भी कहते हैं इन्हों ने चीतोड के राणा दिनकरजी को जीता उन के रत्नसिंहजी २७६ हुवे इन को वत्सजी २७६ और रणुजी २७६ भी कहते हैं ये अफीम बहुत खाते थे यह जानकर चीतोड के राणा नागपालजी ने दिल में दगा रखकर इन से ऊपरी दोस्ती करी एक दिन इन को चीतोड में बुलाकर बडी मिहमानी करी तब तो रत्नसिंहजी २७६ ने भी बदले की मिहमानी देने वास्ते राणाजी मांडलगढ में बुलाये जब राणाजी के बहुत से आदमी किले में घुस आये तब लड़ाई कर के रत्नसिंहजी २७६ बाहिर निकाल दिये रत्नसिंहजी २७७ ने भागकर बंबावदा नाम गाँव में आकर वहां के पास के शहर दाब

लिये और वहां १ किला बनाया उस के पास ही दूसरा रत्नगढ नाम किला बनाया इन दोनों में रहकर सिंहोली १ खेडी २ अठाणा ३ जावद ४ नीबडी ५ बेयूं ६ बीजोल्यां ७ वग़ैरह किले भी दाबलिये और राणाजी मन में दुख पाते रहे इन के कूल्हणजी १७७।१ और बीजूराजजी १७७।२ ये दो बेटे हुवे बीजूराजजी १७७।२ को इन्द्रराजजी १७७ भी कहते हैं इन को जागीर में बीजोल्यां मिली इन नें नये सिरे अच्छी तरह बसाई और शिवजी के बहुत से मंदिर बनाये ये धोडगांव में जहां मुसलमान गायों को मारते थे उन के रोकने में मुसलमानों के साथ लडाई में काम आये रत्नसिंहजी १७६ के पीछे कोल्हणजी १७७ गादीपर विराजे ये शिवजी के बडे भक्त थे छ ६ बार तो केदारनाथजी की यात्रा करी सात ७ वीं वार ज़मीन पर दंडवत करते हुवे यात्रा करणा कबूल किया यहां तक कि १६ सोलह दिनों में १६ सोलह कोस पहुंचे तो उस रात स्वप्न में शिवजी ने

यह फर्माया कि मैं तेरी भक्ति सें राजी हुवा और तू अब दुःख मत उठा इन्हों ने सवेरे उठकर स्वप्न को यादकरके उहां एक १ शिवजी का मंदिर बनवाया यह मंदिर बूँदी सें पौण कोस पर हाल मौजूद है कोल्हणजी १७७ लाखेरी नाम शहर मैं जो हाल बूँदी के इलाके मैं है मुसलमान गायों को घेर लेजाते थे उनके रोकणे में मुसलमानों के साथ लडाई मे मारे गये इन के आसुपालजी १७८ हुवे थे उनका कोल्हणजी के आगे ही स्वर्गवास होचुका था परंतु उन के विजयपालजी १७९ होगये थे सो अपने दादा कोल्हणजी १७७ की गद्दी पर विराजे उन के बंगदेवजी १८०।१ के सरखानजी १८०।२ कर्मसिंहजी १८०।३ कुंभराजजी १८०।४ और वीरमदेवजी १८०।५ ये पाँच महाराजकुमार हुवे बिंजयपालजीकेपीछे बंगदेवजी १८० गद्दीपर विराजे इनके देवसिंहजी १८१।१ कर्मणजी १८१।२ सिंहणजी १८१।३ नयनसिंहजी १८१।४ अईडकजी १८१।५

बडैक जी १८१।६ नाथूजी १८१।७ पाथूजी १८१।८ हिंगुल्लूजी १८१।९ खड्गहस्तजी १८१।१० मोहनजी १८१।११ स्वामिदासजी १८१।१२ कल्लदासजी १८१।१३ ये तेरा १३ हुवे बंगदेवजी १८० ने चीतोड १ जीरण २ दसोर ३ भाणपुर ४ पुरमांडल ५ पानगढ ६ मांडागढ़ ७ हिंगलाजगढ ८ खैरोली ९ कैथोली १० भैंसरोड ११ वग़ैरह छोटे बडे २४ किलेदाबलिये इन के बडे महाराजकुमार देवसिंहजी १९१ ने भी बहादुरी सें इन्हीं दिनों में बूंदी में कब्जा कर लिया इस की इस तरह बात है कि बूँदी नाम गाँव में ३०० घरों की बस्ती थी इसमें जैता नाम मीणे का राज था और इस के नीचे छोटे २ बारा १२ गाँव और भी थे जैते के कामदार जसराजजी नाम गोलवाल चहुवाण थे उन के दो बेटी थी जैते ने अभिमान सें यह चाहा कि मेरे दोनों बेटों का व्याह जसराजजी की लडकियों सें हो जावे तो ठीक है यहाँ तक कि जैते ने एक दिन यह बात

जसराजजी सें भी कहदी यह सुन कर जसराजजी के फिकर तो बहुत हुवा परंतु उपाय कुछ नहीं था इनने बंबावदे में आकर यह अर्ज देवसिंहजी १८१ सें करी इन को सुनतेही गुस्सा तो ऐसा आया कि अभी उनपर चढाई करीजावै परंतु जबजसराजजी ने यह अर्ज करी कि वे घर में ही बहादुर हैं लडाई में कब ठहर सक्ते हैं तब तो महाराजकुमार देवसिंहजी १८१ ने यह विचारा कि लडाई में तो भाग कर बच रहेंगे इस्सें उन को धोका देकर मारना ठीक है यह विचार कर आपस में बातचीत ठहराली जसराजजी ने भी मन सूबै के माफिक जैते के पास आकर बेटी देना मंजूर किया और ऊमर थूणा नाम गांव में जो बूंदी सें च्यार ४ कोस पर जगह है ब्याह ठहराया जसराजजी ने देवसिंहजी १८१ कों भी ब्याह के बहाने सें बुला लिये जब मीने लोग आगये तो बात की बात में मारडाले बचे सो भागगये और उसी दिन संवत १२९८

आषाढ बदि ६ के दिन बूँदी में देवसिंहजी २८१ का क़ब्ज़ा होगया जसराजजी की दोनों बेटी टोडा के राजा सोलंखी गोविंदराजजी के बेटे कुंभराजजी और कन्हडजी को ब्याही गई देवसिंहजी २८१ बूँदी में क़ब्ज़ा कर के खटकड के मालिक गोड गजमलजी को पाटण के मालिक गोहिल मनोहरदासजी को गैणोली और लाखेरी के मालिक गोडों को और करवर के मालिक दहिया जसकर्णजी को मार कर वहाँ अपना क़ब्ज़ा कर के बूँदी को पधारे इस बात को सुनकर बंगदेवजी २८० भी राजी होकर बूँदी में पधारे देवसिंहजी २८१ बहुत सराहे पाँच ५ दिन पीछे बंगदेवजी २८० तो बंबावदे को पधारे और देवसिंहजी २८१ ने जो जो इला के जीते थे वे उन के ही हवाले करें पीछे देवसिंहजी २८१ को बूँदी में इकल्ले समझ कर वे सब ठाकुर लोग जिन के मुल्क छीने गये उन पर इकट्ठे होकर चढ आये यह खबर सुनते ही बंगदेवजी

१८० फिर फौज लेकर बूंदी में आपहुंचे आखिर दुश्मन हार कर भाग गये बंगदेवजी १८० फिर बंबा वदे को पधारे इन बंगदेवजी १८० के वक्त में देवसिंहजी १८१ ने बूंदी से २॥ कोस पर नैऋत कोण की तर्फ एक बंगेश्वरी देवीजी का मंदिर और बावड़ी २ बनवाई सो मौजूद हैं देवसिंहजी १८१ ने ही लाखेरी के पास कोल्हणजी १७७ की छत्री बनवाई थी बंगदेवजी के पीछे देवसिंहजी १८१ गद्दी पर विराजे इन के छोटे भाइयों में से सिंहणजी १८१।३ के घुघुलजी १८३ हुवे उन के घुघुलोत कहलाये मोहनजी १८१।११ के वंश के मोहनोत कहलाये बाकी दश १० भाइयों के बेटे न हुवे इन में हिंगुलजी १८१।६ तो राणाजी के पास रहे और अलाउद्दीन के साथ राणाजी की लड़ाई में मारे गये वहां उन के महल हैं देवसिंहजी १८१ के हरराजजी १८२।१ हस्यजी १८२।२ उन को अप्यजी १८२।२ भी कहते हैं भटम्भर·

जी १८२।३ उन को भोजजी १८२।३ भी कहते हैं वरघजी १८२।४ बलिबालजी १८२।५ उन को कुसमजी १८२।५ भी कहते हैं चाहड्जी १८२।६ समरसिंहजी १८२।७ मोकलजी १८२।८ इन को कर्मचंद्रजी १८२।८ भी कहते हैं जैत्रमल्लजी १८२।९ उन को सौंडजी १८२।९ भी कहते हैं गोविंदराजजी १८२।१० कुंभपालजी १८२।११ शालिबाहनजी १८२।१२ ये बारा महाराजकुमार हुवे देवसिंहजी १८१ नें बंबावदे के मुल्क सें थोडा बहुत मुल्क निकाल कर बूंदी के नीचे लगाकर बंबावदा और बूंदी ये दो २ राज बराबर के बना दिये आप तो बंबावदे में रहे और बूंदी का राज अपने प्यारे बेटे समरसिंहजी १८२।६ के जो उस वक्त सात ७ वर्ष के थे संवत् १३०० में हवाले करदिया देवसिंहजी १८१ के पीछे हरराजजी १८२ तो बंबावदे में और समरसिंहजी बूंदी में राज करने लगे हस्यजी १८२।२ के बंश के हस्याउत कहलाये इन तीनों भाइयों सें सिवाय ९ भाइयों के बेटा नहीं हुवा

हरराजजी १८२ के हालूजी १८३।१ लालूजी १८३।२ लोहराजजी १८३।३ हमीरजी १८३।४ बलिराजजी १८३।५ अक्षयराजजी १८३।६ श्यामजी १८३।७ सुरताणजी १८३।८ हरदोलजी १८३।९ लखणकर्णजी १८३।१० खेमपालजी १८३।११ हल्लपालजी १८३।१२ ये बारा महाराजकुमार हुवे हालूजी १८३ का वृत्तांत आगे लिखा जायगा समरसिंहजी १८२ के सं॰ १३१० में नरपालजी १८३।१ जिन को नापालजी १८३।१ भी कहते हैं हरपालजी १८३।२ जैतसिंहजी १८३।३ और डूँगरसिंहजी १८३।४ ये चार महाराजकुमार हुवे समरसिंहजी १८२ ने केथोण १ सीसवाली २ बडोद ३ रैलावण ४ रामगढ ५ मऊ ६ सामोद ७ इन में भीलों को मार कर इन परगनों में अपना थाना बिठादिया जब समरसिंहजी १८२ बूंदी को पधारने लगे तब चंबल के किनारे जहाँ अब कोटा बसता है वहां समरसिंहजी १८२ के पास

थोडी फौज देखकर भील फिर इकट्ठे होगये इतने में फौज भी आपहुंची बहुत से भील मारेगये बाकी भागगये जहां लडाई हुई वहां भीलों का गांवथा उस में कोटा नाम भील मालिकथा वहभी भागगया समरसिंहजी १८२ नें बूंदी आकर हरपालजी १८३।२ को जजावर नाम गांव जागीर में बख़्शा हरपालजी १८३।२ के वंश के हरपालपोत्ते कहलाये जब जैत्तसिंहजी १८३।३ को जयथलगांव बख़्शने लगे तब उन ने अर्ज करी कि जहां आप के साथ भीलों सें लड़ाई हुई वहां मैं एक नया शहर बसाया चाहताहूं जब यह बात समरसिंहजी १८२ ने मंजूर करी तो जैतसिंहजी १८३ ने वहां आकर कोटा भील को मारकर शहर बसाया वही अब कोटा शहर है जैतसिंहजी १८३।३ कें जैताउत्त कहलाये परंतु उन की तीसरी पीढी में खंधलजी नाम बडे शूरवीर हुवे जो मांडू के बादशाह के साथ लडाई में मारेगये उन के वंश के जैतावत्त खांधलोत्त कह

लाये डूँगरसिंहजी को १८३।४ खजूरी नाम गाँव बख्शा इस वास्ते उन के वंश के खजूरी के हाडे कहलाये जब अलाउद्दीन की फौज ने सं॰ १३२८ में चीतोड के राणाजी पर चढाव किया तब वक्त पाकर समरसिंहजी १८२ ने मांडलगढ फिर दाब लिया जब अलाउद्दीन का मेवाड में कब्जाहोगया तो मेवाड के पहले कामदारोँ ने बादशाह के कानोँ तक यह बात पहुंचाई कि जिस वक्त आप की फौज मेवाड पर चढीथी उन्ही दिनों में समरसिंहजी १८२ने मांडलगढदाबलियाहै और बंबावदा वग़ैरह इलाके जो हरराजजी १८२के पास हैं वेभी पहले मेवाडके नीचेहीथे तबतो अलाउद्दीन ने समरसिंहजी १८२ से कहला भेजा कि यह मांडल गढजो आपने दाबलिया है सो मेवाड में है सोछोड दिया चेहिये क्योंकि अबराणाजी के राज के हम मालिकहैं यह बात सुन कर समरसिंहजी १८२ ने सोच विचार कर मांडलगढ खाली कर दिया जब अलाउद्दीन ने मांडलगढ में कब्जाकरके हर-

राजजी के ऊपर फौज इस वास्ते भेजी कि जो मुल्क राणाजी का उन ने दाब लिया है सो छुडाना चाहिये तब अपने भाई हरराजजी १८२ की मदद वास्ते समरसिंहजी १८२ बंबावदे में पधारे हरराजजी १८२ ने समरसिंहजी १८२ से बहुत कहा कि तू मेरे पीछे बूंदी क्यों खोता है परंतु उस वक्त समरसिंहजी ने बूंदी को लौटना मुनासिब नहीं समझा आखिर इस लडाई में हरराजजी १८२ समरसिंहजी १८२ वग़ैरह भाई काम आये फक्त मोकलजी १८२ बाकी रहे यह लड़ाई सं. १३३२ में हुई समरसिंहजी १८२ ने सं. १३३० में बूंदी को बहुत बडी करी थी सं. १३२१ में कोटा बसाया था समरसिंहजी १८२ के पीछे नापाजी १८३ गद्दी पर विराजे इन के हम्मीरजी १८४।१ जिन को हामाजी १८४।१ भी कहते हैं नोरंगजी १८४।२ और स्थिरराजजी १८४।३ ये तीन महाराजकुमार हुवे नापाजी १८३।१ बहुत गाफिल थे इन के वक्त में रैलावण १ रामगढ २

मऊ ३ माँगरोल ४ लाखेरी ५ करवर ६ केथोण ७ चौरह परगने दुश्मनों ने दाबलिये चैत्रसुदि ३ तीज के दिन गणगोर का त्योहार था इस से गणगोर निकाली थी उस को सेरगढ के राजा पँवार हरराजजी जबरदस्ती से छीन लेगये परंतु नापाजी देखते रहे कुछ नहीं बनपडा ये सं॰ १३४३ में अपने सुसरे के इहां टोडे में पधारे थे वहां एक अच्छा पत्थर देखकर जबरदस्ती बूंदी लाने लगे इस बातपर तकरार होने से लडाई में साले के हाथ से मारेगये इन के हाथ से साले का हाथ कट गया इन के पीछे १५ वर्ष की उमर में हामाजी १८४ गद्दी पर बिराजे इन के बरसिंहजी १८५।१ और लालसिंहजी १८५।२ ये दो २ महाराज कुमार हुवे इन्हों ने नापाजी के वक्त के दबे हुवे परगने दुश्मनों से छुडा लिये जो हरराजजी नापाजी के वक्त में गणगोर छीन लेगये थे उन को जीत कर उन की राणी और आप की गणगोर दोनों छीन ली और जिन ने नापाजी मारे थे उन

के बेटे सातलजी जीते और टूंक भी जीता बंबावदे में हरराजजी १८२ के पीछे सं· १३३२ में १३ वर्ष की उमर में हालूजी १८३ गद्दी पर विराजे इन के पास केवल बंबावदा १ बेघूं २ बीकोली ३ भैंसरोड ४ रत्नगढ ५ और सींगोली ६ येही परगने रहे बाकी सब बादशाह के नीचे आगये थे ये बडे शूरवीर थे इन्ने गद्दी पर विराजने से दो वर्ष पीछे ही जीरणपुर के राजा पंवार जैत्तसिंहजी को जीतकर हिंगलाजगढ ले लिया और भाणपुर के राजा खींची भरतजी और दसोर के राजा को जीतकर खेडी और जीनोद के किले लेलिये जब ये वर्ष २७ की उमर में पहले ही स्योपुर में ब्याह के वास्ते पधारे थे पीछे से जैत्तसिंहजी पंवार और खीचीभरतजी दोनों ने बंबावदा घेरलिया बंबावदे में हालूजी के भाई लालसिंहजी १८३ और लोहराज जी १८३ ये बहुत बडी लडाई हुई जब ब्याह करके पीछे पधारते हुवे हालूजी १८३ ने यह बात सुनी तो अपने राणीजी को कोटे में भाई

जैतसिंहजी के यहां छोडकर आप ५००० पाँच हजार सवारों के साथ आकर दुश्मनों को मार भगाया हालूजी १८३ ने अभी व्याह का कंकण भी नहीं खोलाया कि थोडे ही दिनों में जैतसिंहजी राणाजी की फौज को इन पर चढा लाये इन्हों ने राणाजी की फौज भी मार भगाई और बूंदी के मालिक नापाजी १८३ की मदद करके पलायता १ और सीसवाली शहर नापाजी १८३ के कब्जे में करदिये जब जीरणपुर के राजा जैतसिंहजी के बेटे सुंदरदासजी ने चीतोड के राणा हम्मीरजी से फिर फौज लेकर इन पर चढाव किया उस वक्त इन की मदद वास्ते बूंदी से हामाजी १८४ पधारे इस लडाई में राणाजी के काका बिंकराजजी और राणाजी के बेटे खेतलजी के बहुत घाव आये राणाजी की फौज भाग गई इस से पीछे हालूजी १८३ ने जोर में आकर पुरमांडल शहर जो राणाजी के नीचे था उस में भी अपना कब्जा करलिया जब यह बात राणाजी ने सुनी तो यह मनसूबा

पक्का बाँधा कि हालूजी का खोजही खोदेना चाहियेजीरन १ और दसोर २ के मालिक फौजसुधाँ बुलाये और अपनी फौज लेकर हालूजी १८३ पर चढाव कर दिया हामाजी १८४ बूँदी पधारयाहीथे ये राणाजी का चढाव सुनतेही सीधे राणाजी की फौज में पधार कर राणाजी से मिले और यह कहा कि आप के महाराजकुमार खेतलजी के जो घाव हैं सो मेरे हाथ से लगे हैं सो मैंहीं कुसूर वार हूं और आप को यह नहीं चाहियेथा कि खींची और पँवारों की हिमायत्त कर्के हालूजी १८३ के ऊपर फौज भेजी राणाजी ने यह कहा कि मेरे काके मारे गये और पुरमाँडल में कब्जा कर लिया इसका बदला क्या चाहिये तब हामाजी ने कहा कि मैं मेरे बेटा लालसिंह १८५ की बेटी का ब्याह आप के महाराजकुमार खेतलजी से कर दूंगा और पुरमाँडल को हालूजी खाली कर देवेंगे इस बात्त पर राणाजी राजी होगये इसें पीछे हामाजी १८४ ने अपनी पोती की

सगाई खेतलजी सें करदी और हालूजी १८३ को समझाकर पुरमांडल खाली करवादिया और आप २५ वर्ष की उमर वाले वरसिंहजी १८५ को राजदेकर और लालसिंहजी १८५।२ को कसवा गेणोली जागीर में देकर सं॰ १३६३ में कासीजी पधारे और संवत् १४२३ में वहाँ ही स्वर्ग को पधारे वरसिंहजी १८५ के वैरीशालजी १८६।१ जावडजी १८६।२ और निम्मराजजी १८६।३ ये तीन महाराज कुमार हुवे एक चारण जात के कवि लोहटजी नाम हालूजी १८३ के पासगये थे उन दिनो मे हालूजी १८३ ने यह नियम कर रखवाया कि जैसे बणे तैसें लडाई में मरना ही ठीक है। हालूजी ने इन कवि को बहुत माल बखशा और यह कहा कि मेरी पाग बांधकर किसी के आगे सिर मत झुकाइयो इन ने भी मंज़ूर करी जब ये कवि मंडोउर के राजा पडिहार हम्मीरजी के यहाँ गये तो हम्मीरजी ने बुलाये परंतु इन ने यह कहलाभेजा

कि मेरे पास इस वक्त केवल हालजी १८३ कीदी हुई एकही पाग है इस को बांधकर किसी के आगे सिर नहीं झुकाऊंगा उस वक्त तो हम्मीरजी ने मंजूर करके कवि को बुला लिया पहलां तो बडी खातरी करी फेर आपनी तर्फ से पौशाक देकर कहा कि इसको पहरो जब कवि ने आपने कपडे उतारे और उन के दिये हुवे कपडे पहरे तब हालजी १८३ कीदी हुई पाग नौकर पास दी हम्मीरजी ने देखने के बहाने से लेकर वह पाग कुत्ते के सिर पर बांधदी कवि ने नाराज होकर बंबावदे में आकर यह बात हालजी १८३ से कही इन्होंने सुनतेही मंडोवर पर चढाई करदी वहां हम्मीरजी लडाई में जीतलिये उन की माने बहुतसी खुशामद करके राज बचालिया उस लडाई में हालजी १८३ के भाई रोपालजी भी मारेगयेथे हालजी ने बंबावदे में आकर जब यह जाण लिया कि मेरे भाग में तरवार से मरना नहीं है आपने महाराजकुमार चंद्रराज॰

जी १८४ को राजदेकर ८२ वर्ष की उमर मैं संवत्त १४११ मैं भद्रकाली के आगे अपना शिर चढ़ादिया हालूजी १८३ के वंश के हालू पोते कहलाये इन मैं चंबाउत वग़ैरह और भीऊवे लालजी वग़ैरह भाइयों का वंश नहीं चला लालसिंहजी १८५।२ ने गैणोली में रहकर अपने बेटी का जिन की सगाई राणाजी के कवर खेतलजी से हुईथी व्याह करना चाहा चीतोड सैं कवर खेतलजी के साथ बहुत बडी बरात चढ कर गैणोली मैं पहुँची जब व्याह होगया और दूसरे दिन शराब पीते वक्त सब हाजर थे उस वक्त पहले तो दोनों तर्फ से आप आप की बहादुरी की बातें हुई बरात मैं बारूजी नाम चारण ने राणाजी की बहुत बडाई करी जब लालसिंहजी १८५।२ ने कहा कि हमने सुना है कि पहले दिनों मैं चीतोडगढ मैं एक पत्थर की पूतली चार ४ हाथ वाली निकलीथी जब वह राणाजी के रूबरू खडी करीगई तब उसका एक हाथ तो राणा

जी की तर्फ़ था एक आसमान की तर्फ़ एक ज़मीन की तर्फ़ और एक गले के लग रहा था जब राणाजी ने इस्का कारण पूछा तो तुम ने यह अर्ज की थी कि यह पूतली यों कहती है कि इन राणाजी जैसा दाता और शूर बीर न तो पृथ्वी में है न आकाश में है जो होवै तो मेरा गला काटा जावै सो यह बात केवल तुम ने ही बनाई थी ऐसा क्या कोई दाता और शूर बीर नहीं है अब जो तुम माँगो सो मैं देताहूँ जो मेरा सिर भी माँगो तो तयार है और बहादुरी में जमाई के सिवाय जो कोई लडने को आवे तो देखाजाय अब जो तुम कुछ नहीं माँगो तो तुम नालायक हो और मैं नहीं दूं तो मैं नालायक हूँ और पूतली तो पत्थर की है उसके बदले तुम ने अपना सिर कटाया चाहिये यह सुन कर बारूजी ने शर्मिंदगी से डेरे पर जाकर अपने चाकर को कह दिया कि मैं मेरा सिर काटता हूँ तू लालसिंहजी पास पहुँचाइयो यह कह कर सिर काट डाला और

चाकर नैं लालसिंहजी पास पहुंचादिया लालसिंहजी को बडा शोच हुवा तब यह खबर चीतोड मैं राणाजी पास पहुंची राणाजी ने आप के कंवर सें कहला भेजा कि जो तू मेरा बेटा है तो लालसिंहजी १८५।२ को मार कर आणा यह खबर सुन कर लालसिंहजी १८५ ने और बरसिंहजी १८५ ने जमाईजी साहब को समझाया कि आप की हमारी लडाई इस छोटीसी बात पर न हुई चाहिये आखिर उन ने नहीं मानी और एक वर्ष की लडाई मैं लालसिंहजी के हाथ से कंवर खेतलजी मारे गये इस लडाई मैं लालसिंहजी यह बात चाहते थे कि मेरा जमाईजी सें सामना नहीं होय परंतु जमाईजी ने ही आप सामना कियाथा और पहले शस्त्र चलाया बरसिंहजी १८५ के भी इस लडाई में छःई घाव आये और लालसिंहजी की बाईजी कंवर खेतलजी के साथ सती हुईं फ़ौज लौट कर राणाजी पास गई

इन दिनों के भीतर राणाजी स्वर्गबास करचुके थे फौज से खेतलजी का मरण सुन कर इन्हौं खेतलसिंहजी के बेटे लाखणजी गद्दीपरबैठे लोगों ने यह अर्ज करी कि जो बूंदी के मालिक बरसिंहजी १८५ मदद पर न होतेतो गैणोली के जागीरदार से क्या हो सक्ताथा यहसुन कर लाखणजी ने यह नियम किया कि जब तक बूंदीवालों को नहीं जीतोंगा तबतक रोटी नहीं खाऊंगा तब लोगों ने यह अर्ज करी कि यह बात कब हो सक्ती है कि आप थोडे ही दिनों में बूंदी जीत सकें जब लाखणजी ने नहीं मानी तो यह अर्ज़ करी कि हाल तो एक मिट्टी की बूंदी बणा कर उसमें थोडे से आदमी रखकर सरकर लीजिये तब लाखणजी ने कहा कि उसमें कोई हाडा जात्त का रजपूत रखना चाहिये उस वक्त कुंभकर्णजी १८४।२ हाडा जो हालजी १८३ के दूसरे पुत्रथे और चंद्रणजी १८४ की दीहुई जागीर को छोड कर राणाजी के पास आरहेथे लोगों ने बणावट

की बूँदी मैं रखने वास्ते तयार किये ओर यह समझा दिया कि जब राणाजी चढ कर आवैं तब तुम शस्त्र गेर दीजो कुंभकर्णजी ने बहुत सा कहा कि मैं हाडा हूं बूँदी की रखवाली मैं कसर नहीं करूंगा परंतु लोगौं ने हाँसी समझ के उस बूँदी में थोडे से लड़ाई के सामान के साथ रख दिये उन के पास ३०० तीन सो नौकर थे जब राणाजी चढे तब इनो ने अपने नौकरौं से कहा कि सिवाय राणाजी के कोई वार में आवे मार डालो यह सुन तेही पहलैं तो पैंच लाई फेर निकल कर वडी वहादुरी सें लडे आखिर थोडे आदमी थे बहुत सी फौज को मार कर आप भी काम आये बरसिंहजी १८५ ने जब देखा कि हमारी साथ बहुतों की दुश्मनी होगई ओर आस पास के मुल्कों में मुसलमानों का गदर मच रहा है बूँदी के ऊपर एक तारागढ नाम किला संवत् १४११ में बनवाया पहले दिनौं में मंडनजी के बेटे हम्मीरजी ने नैणवाँ मैं अपना

क़ब्ज़ा कियाथा पीछे से दहियौं नैं उसे क़ब्ज़ा कर लियाथा अब नैनवां के मालिक दहिया भीमजीने ज़ोर पाकर बूंदी घेरली ॥ उस वक़्त बरसिंहजी १८५ गंगाजी की यात्रा में थे इहां नैणोली में लालसिंहजी १८५।२ ने आकर ऐसी बहादुरी करी कि दुश्मन भगा दिये बरसिंहजी १८५ ने आकर यह बात सुनी तो राजी होकर मारवीदा का किला भाई के वास्ते दिया आप नैनवा पर चढ़ गये और दहियों को निकाल कर नैनवा में अपना क़ब्ज़ा कर लिया और संबत १४५० में बरसिंहजी १८५ का स्वर्ग बास हुवा बंबावदे में चंद्रदेवजी १८४ सें पीछैं उन के बेटे धीरदेवजी १८५ गद्दी पर बिराजे हालूजी १८३ की बहुतौं की साथ दुश्मनी थी परंतु जब तक बरसिंहजी १८५ सलामत रहे तब तक तो चंद्रदेवजी १८४ और धीरदेवजी १८५ दोनों पर दुश्मनों का दाव नहीं चला बरसिंहजी १८५ के पीछे बहुत से परगने दुश्मनोंने दाब लिये और

राणा लाखणजी के बेटे मोकलजी ने धीरदेवजी १८५ को मार कर बंबावदा छीन लिया और कोई हालूजी के बंश के रहे उन को थोड़ा बहुत खाणे वास्ते रहणे दिया लालसिंहजी १८५।२ के जैतसिंहजी १८६।१ और नौब्रह्मजी १८६।१ ये दो २ बेटे हुवे जैतसिंहजी १८६।१ के जैतावत नौब्रह्मजी के नौब्रह्म के हाडे कहलाये बरसिंहजी के पीछे बूंदी में ३२ वर्ष की उमर में बैरीशालजी १८६ गद्दी पर विराजे इन के अखैराजजी १८७।१ चूंडाजी १८७।२ उदयसिंहजी १८७।३ सुभांडदेवजी १८७।४ जिन को भारमल्लजी १८७।४ और भांडाजी १८७।४ भी कहते हैं शौंडजी १८७।५ जिन को शांडाजी १८७।५ भी कहते हैं लोहटजी १८७।६ कर्मचंद्रजी १८७।७ और श्यामजी १८७।८ जिन को केशवदासजी १८७।८ भी कहते हैं ये आठ महाराजकुमार हुवे जाबदजी के एक तो सारणजी हुवे जिन के बेटे सांवतजी के बंश के सांवत के हाडे कहलाये दूसरे सेवाजी

हुवे जिन के बेटे मेवाजी के बंश के मेवाउत कहलाये नीमराजजी के बंश के नीमाउत कहलाये बैरीशालजी २८६ के वक्त में मांडू के बादशाह ने इस तर्फ के राजों को जेर कर लिया केवल चीतोड के राणाजी और बैरीशालजी २८६ उसके हुक्म में नहीं थे और बैरीशालजी २८६ ने उसके वकील भी धमकाये थे इस वास्ते पहलां उन ने बूंदी पर चढाई करी पहलां तो दोनों तर्फ सें तोपें चलती रही परंतु जब मुसलमानों ने तोपों के साम ने बैल और गाय करदिये और आप भी गायों को मारणे लगे तब तो सब लोगों ने बैरीशालजी २८६ में अर्ज करी कि अब तो अपनी तोपों सें गायें मरती हैं सो शहर सें बाहर निकल कर लडाई में मरणा ठीक है जब अर्ज मंजूर करके बैरीशालजी ने मोतबिर आदमियों को हुक्म दिया कि मुसलमानों की फौज बहुत है जो हम मारे जावें तो रणवास लडका लडकी वगैरह को निकालकर

नैणवाँ मैं लेजाणा यह हुक्म देकर बूँदी के दरवाजे खोल दिये और सब बहादुरों को बाहर निकलने का हुक्म दिया परंतु अखैराजजी १८७।१ चूँडाजी १८७।२ और उदयसिंहजी १८७।३ ये तीन बेटे अपनी अपनी जागीरके गाँवों मैं रहे और लडाई मैं नहीं आये उस वक्त बैरीशालजी १८६ ने यह फर्माया कि हमारे पीछे जो पाँच भले आदमी रहैं इन तीनों को न तो राज में दखल करणे देवें और न हमारी क्रिया कर्म करने दें इन दोनों बातों मैं भाँडाजी १८७।४ ही मुकर्रिर किये जाँय यह फर्माकर लडने को निकले बहुत बडी लडाई हुई आखिर मुसलमान बहुत थे वैरीशालजी १८६ मारेगये और जाबदजी और निम्मदेवजी बहुत घायल हुवे उन को तो कोई भले आदमी अपने घर मैं ल्याकर इलाज करने लगे और किले के रखवाले लोग रणवास को लेकर नैणवाँ को चले इस तर्फ मुसल्मानों ने बूँदी मैं घुस कर लूट मचाई जब रात के वक्त

हुवे जिन के बेटे मेवाजी के बंश के मेवाउत कहलाये नीमराजजी के बंश के नीमाउत कहलाये बैरीशालजी २८६ के वक्त में मांडू के बादशाह ने इस तर्फ के राजों को जेर कर लिया केवल चीतोड के राणाजी और बैरीशालजी २८६ उस्के हुक्म में नहीं थे और बैरीशालजी २८६ ने उस्के वकील भी धमकाये थे इस वास्ते पहलां उन ने बूंदी पर चढाई करी पहलां तो दोनों तर्फ सें तोपें चलती रही परंतु जब मुसलमानों ने तोपों के साम ने बैल और गाय करदिये और आप भी गायों को मारणे लगे तब तो सब लोगों ने बैरीशालजी २८६ सें अर्ज करी कि अब तो अपनी तोपों सें गायें मरती हैं सो शहर सें बाहर निकल कर लडाई में मरणा ठीक है जब अर्ज मंजूर करके बैरीशालजी ने मोतबर आदमियों को हुक्म दिया कि मुसलमानों की फौज बहुत है जो हम मारे जावें तो रणवास लडका लडकी वगैरह को निकालकर

नैणवाँ में लेजाणा यह हुक्म देकर बूंदी के दरवाजे खोल दिये और सब बहादुरों को बाहर निकलने का हुक्म दिया परंतु अखैराजजी १८७।१ चूंडाजी १८७।२ और उदयसिंहजी १८७।३ ये तीन बेटे अपनी अपनी जागीरके गाँवों में रहे और लडाई में नहीं आये उस वक्त बैरीशालजी १८६ ने यह फर्माया कि हमारे पीछे जो पाँच भले आदमी रहें इन तीनों को न तो राज में दखल कराणे देवें और न हमारी क्रिया कर्म करने दें इन दोनों बातों में भाँडाजी १८७।४ ही मुकर्रिर किये जाँय यह फर्माकर लडने को निकले बहुत बडी लडाई हुई आखिर मुसलमान बहुत थे बैरीशालजी १८६ मारेगये और जाबदजी और निम्मदेवजी बहुत घायल हुवे उन को तो कोई भले आदमी अपने घर में ल्याकर इलाज करने लगे और किले के रखवाले लोग रणवास को लेकर नैणवाँ को चले इस तर्फ मुसल्मानों ने बूंदी में घुस कर लूट मचाई जबरात के वक्त

कितनेक उमराव और थोडी फौज के साथ रणवास नैणवाँ को रवाने हुवा उस वक्त मुसलमानों ने किले में घुसकर देखातो रणवास में सें कोई नहीँ पाया तब तो इधर उधर ढूंढने लगे तो एकधाय जिस के पास महाराजकुमार श्यामजी १८७।८ थे हाथ आगई मुसलमानों ने उस को बादशाह पास सौंपा इस तर्फ रणवास दुबलाणे गाँव में पहुंचगया और पीपलदे सें उदयसिंहजी १८७।३ भी दुबलाणे में आगये जब श्यामजी की खबर नहीँ पाई और यह निश्चय होगया कि वे बादशाह के हाथ आगये तबतो सब उमराव लोगों को गुस्सा आया और रात के वक्त धावा करने की ठहरी बादशाह के डेरे बूंदी सें दक्षिण की तर्फ पौण कोस जहाँ अब गणेश बाग है पड रहे थे रात को बहादुरों ने धावा मारा इस सें बादशाह भाग निकला परंतु श्यामजी को साथही लेगया जब इहाँ किल्ला दुश्मनों से खाली पाया तो अमीर उमराव लोगों ने दुबलाणे से रणवास

बुलाकर बूंदी में दाखिल किया यह लडाई संबत १४९० में हुई जिसमें ७२ बर्ष की उमर पाकर बैरीशालजी २०६ काम आये बादशाह ने श्यामजी को मुसलमान बणादिये अब बैरीशालजी २०६ के हुक्म माफिक पाँच आदमियों ने ९ वर्ष की उमर में भाँडाजी २०७ गद्दीपर बिठादिये इन के नारायणदासजी २०८ नरबदजी २०८।२ और नृसिंहजी २०८।३ ये तीन महाराजकुमार हुवे अखैराजजी के अखवाउत चूँडाजी के चूँडाउत और उदयसिंहजी के ऊदाउत हाडे कहलाये बाक़ी भाइयों का बंश नहीं चला भाँडाजी २०७ को कम उमर देख कर उन के बड़े भाइयों ने जिन को राज नहीं मिला था मुल्क दाबना शुरू किया खटकड के जागीरदार अखैराजजी ने पाटण १ जैथल २ खेडा ३ लाखेरी ४ लबान दाबलिये और बरूंधर के जागीरदार चूँडाजी ने नमाणा १ खीणा २ और डाभी ३ दाबलिये और पीपलदा के जागीरदार उदयसिंहजी ने बीस २० गांव तो खाल से के

और मारवी दे का किला जो गैणोली वालों पास दाब लिये यहां तक कि बाहर के दुश्मनोंने भी बूंदी का मुल्क बहुत सा दाब लिया इस राज के यह चार आदमी ख़ैरख़ाह थे सारणजी सांडाजी १८७।५ और लालसिंहजी १८५।२ के बेटे जैतजी १८६ और खेतल कामदार जो ये नहीं होते तो राज जावुकाथा और उन दिनों में नीमाजी के बेटे तोगजी १ नवब्रह्मजी २ सेवाजी ३ अमरसिंहजी ४ बिजयसिंहजी ५ ये भी राज के ख़ैरख़ाह रहे सांडाजी १८७।५ बहुत शूरवीर थे परंतु उस वक़्त लड़ाई का वक़्त नहीं होणें से खेतल कामदार इन को रोक देता था जब मेवाड़ के लोगों ने बड़ी लूटमार मचाई और दिन दिन रैयत की खराबी की खबर आणेलगी उन दिनों में खेतल तो कुछ बीमार था और सांडाजी ने आपके बड़े भाई भांडाजी १८७ लड़ने पर तयार किये दोनों भाई फौज लेकर हींडोली की तर्फ जहां मीणे और मेवाडे राजपूतों ने लूट मार मचा रक्खी थी रवाने हुवे बहुत बड़ी लड़ाई

होणे पीछे मीणे लोग और मेवाडे राजपूत भागनिकले उसलडाई में ८ आठ मेवाडे राजपूत हाडों की क़ैद में आगये तो गजी सारणजी और सांडाजी ने भांडाजी १८७ तो बूंदी की तर्फ रवाने किये और आप ५०० जवानों को साथ लेकर अमरगढ की तर्फ जो हाल में भी राणाजी के कब्जे में है रात को रवाने हुवे इनों ने ऐसा दाव किया कि जो ८ आठ राजपूत क़ैद में थे उन के वास्ते कुछ जागीर देने का लालच देकर यह कहा कि इस वक्त तुम किले के पास जाकर किले के सिपाहियों से यों कहो कि जो आदमी किले से निकलकर बूंदी के मुल्क को लूटने वास्ते गये थे वे तो हाडों ने सब मारडाले केवल हम ८ आठ आदमी बचे हैं जो हम को किले के भीत्तर नहीं लोगे तो हम भी मारे जांयगे उन्हों ने भी कहे माफिक पहर के तडके किले के पास जाकर उसी तरह कहा किले वालों ने उन के भीतर लेने वास्ते दरवाजा खोला उसी वक्त ५०० जवान किले में घुस गये

किले वालों को सब को मार कर भाँडाजी की दुहाई फेरदी जब यह खबर बूँदी में पहुँची तब भाँडाजी १०७ ने तो गजी तो उहाँ किला दार रक्खे सारणजी और साँडाजी बूँदी बुलालिये जब हाडों का कब्जा अमरगढ में होगया तो इस बात को सुन कर राणा कुंभाजी ने बूँदी पर चढाई करी उस वक्त उन के राणीजी ने यह पूछा कि आप कितनेक दिनों में पधारोगे राणाजी ने कहा कि हाडों को मारकर श्रावणसुदि ३ तीज सैं पहलाँ आजाऊँगा राणीजी ने कहा कि जो आप तीज तक नहीं आवोगे तो आप का परलोक जाण कर चिता में जल जाऊँगी राणाजी ने सौगंद खा कर तीज पर आने वास्ते कहा राणाजी ने यह चढाई इस ढब सैं करी कि थोडी थोडी फौज जहाँ तहाँ रखकर चुप के घोडों की डाँक में मांडलगढ आ पहुँचे इहाँ फौज भी जियादा रक्खी थी जब फौज को लेकर राणा जी ने अमरगढ घेर लिया उस वक्त किले में लडाई का सामान नाज

वग़ैरह बहुत थोडाथा आखिर उहाँ के किलेदार तो गजी नै किले सैं बाहर निकलकर बहुत बडी बहादुरी सैं लडाई करी बहुतसे राणाजी के सरदारौं को मार कर आप भी मारे गये इस सैं पीछे राणाजी नै अमरगढ में क़ब्ज़ा करके बूँदी के घेरा देलिया कितनेक दिनौं तक लड़ाई होती रही जब सावन की तीज पास आने लगी तो राणाजी ने फ़ौज के सर्दारौं सैं फ़रमाया कि हम तो हमारे बचन के बमूजिब चीतोड़ को जावेंगे तब सर्दारौं ने अर्ज़ करी कि जो आप पधारते हो तो आप की पाग इहाँ छोड़जावो कि हम उसकूँ मुजरा करके लड़ाई पर जाया करैंगे राणाजी ने तो आप की पाग रखकर चीतोड़ की तर्फ़ कूँच किया इस तर्फ बूँदी के सरदारौं ने यह खबर अच्छी तरह जान ली उस वक़्त सारणजी और साँडाजी ने यह मनसूबा बाँधा कि जैसे बनैं तैसे राणाजी की पाग छीन लेवैं यह बिचार कर अचाणक रात के वक़्त फ़ौज लेकर दुस्मनौं की फ़ौज

पर धावा मारा उस वक़्त दुश्मन अचेत पड़े थे सो भाग निकले जब देरों में ढूँढने लगे तो गोहिल जात के राजपूत हरिसिंहजी के जो बूँदी के सरदारों में थे राणाजी की पाग हाथ आगई उस को लेकर बूँदी के सरदार तो किले में दाख़िल हुवे राणाजी की फ़ौज ने भाग कर कितनेक दिनों में यह ख़बर राणाजी के पास पहुँचाई राणाजी शर्मिंदगी से रणवास के बाहर भी नहीं निकले और दो महीने पीछे स्वर्ग को पधारे कितने दिनों में भाँडाजी १८७ नै अपने भाई साँडाजी को बहादुरी और खैरख़्वाही के सबबसे करवर नाम कसबा बख़्शा उन्हीं दिनों में सारणजी जैतजी और साँडाजी ने ऊदाजी चूँडाजी और अखयराजजी की दाबी हुई ज़मीन भी सरकारी क़ब्ज़े में करदी और साँडाजी नैं वैर लेने वास्ते यह चाहा कि माँडू के बादशाह सें लड़ाई करनी चाहिये उस वक़्त भाँडाजी १८७ नै और कामदार नै इन को रोका कि वह इस वक़्त बड़े ज़ोर में

हैं उस सें लडना ठीक नहीं तब तो सौंडाजी नेचुपकेही ४०० चारसौ सवारों को साथ लेकर माँडू के बादशाह के बहुत्त से खासा घोडे लूट के भाँडाजी १८७ की नज़र किये उस वक्त भाँडाजी १८७ जैतजी और सारणजी ने यह कहा कि यह घोडे नहीं लाये हो बल्कि बूंदी पर आफत लाये हो जब माँडू के बादशाह ने नाराज होकर बूंदी का खोजही खोना बिचारा उस वक्त श्यामजी नाम भाँडाजी १८७ के छोटे ही छोटे भाई ने जो बैरीशालजी के वक्त की लडाई में बादशाह के हाथ आगये थे और बादशाह ने मुसलमान बनाकर समरकंद नाम रक्खाथा और बादशाह उन सें बहुत राजी था बादशाह सें यह अर्ज करी कि जो मेरे पर महरबानी होय तो मेरे साथ फौज दीजावे कि बूंदी फत्तह करूं बादशाह ने उन की अर्ज मंजूर करी और यह फर्माया कि जो बूंदी को फत्तह करै तो बूंदी तेरेही वास्ते दीजावे जब समरकंद ६०००० साठ हजार

बादशाही फ़ौज लेकर भाणपुर तक आपहुँचा तबतो भाँडाजी को भी खबर पहुँची इहाँ सब के यही सलाह ठहरी कि अब लड़ना ठीक नहीं यह बिचार कर सारणजी जैतजी और खेतल कामदार ये तीनों कुछ भेट लेकर चंबल तक पहुँचे उहाँ समरकंद के आगे सब तरह की नरमी दिखाई समरकंद ने कहा कि भाँडाजी १८७ को तो जागीर की तरह बारा १२ गाँव सुद्धाँ दबलाणा दिया जायगा और साँडाजी १८७ को पाँच गाँव दिये जाँयगे बाकी मुल्क मैं हमारा राज रहेगा यही इन्हों ने भी मंज़ूर करी और उसी तरह हुई बूँदी मैं समरकंद का क़ब्ज़ा होगया भाँडाजी १८७ दुबलाणे मैं रहने लगे खेतल्ल कामदार ने दबलाणे सैं एक १ कोस पर जहाँ हाल मैं भवानीपुरा नाम गाँव बसता है खेतोलाव नाम तलाव और एक खेताला देवी का मंदिर बणाया इसी ने किसी रीत सैं यह जाण लिया था कि अगले वर्ष मैं काल पडेगा इस वास्ते भाँडाजी १८७ के

हुक्म सें बहुतसा नाज खरीद कर लियाथा जब काल के दिन आये तब बहुत सें राजों को भी उस वक्त भांडाजी १८७ ने नाज देकर पालाथा जब समरकंद नें यह बिचारा कि औरों को तो बहुतसा नाज देते हैं और हम को थोडाही दिया इस के दिल में पहलों सें यहथी किसी तरह सें इस वंश का नाश करदूं परंतु कोई बहाना नहीं मिलताथा अब कुछ खुशी का बहाना करके भांडाजी १८७ के सारे घरके लोगों की मिहमानी करी और हींडोली नाम गांवमें यह ठहरी कि भांडाजी १८७ को खेतलजी नें बहुत से मना किया परंतु भांडाजी १८७ नें नहीं मानी सांडाजी को भी जोरावरी सें सौगंद देकर लेगये वहां यह नोबत हुई कि जब यह भोजन करने लगे उस वक्त मुसलमानों ने समरकंद के हुक्म माफिक भांडाजी १८७ वगैरह २७ आदमी मारडाले यह खबर जब १६ वर्ष की उमर वाले नारायणदासजी १८८ ने सुनी उस वक्त सोचतो हुवा परंतु कुछ बस नहीं

या इस वास्ते मोका ढूंढत्ते रहे और जो लोग मात्तिम वास्ते आत्ते उन सें यही फर्मात्ते रहत्ते कि मेरे पित्ताजी और काकाजी दोनौं आप के मालिक समरकंदजी के बदख़ाह थे सो मारे गये बहुत्त अच्छा हुवा ॥ और मेरे तो समरकंदजी और बेगम साहिबा ये दोनौं हीं मात्ता पित्ता हैं जब यह बात्त कानौं कान समरकंदने सुनी तो राज़ी होकर अपणा बेटा और बेगम मातमपुरसी के वास्ते भेजे वहां बेगम से यही बात्त कही कि मेरे तो आपही मात्ता हो तब तो राज़ी होकर यही बात बेगम नैं बूंदी मैं समरकंदको कही उस वक्त बूंदी मैं बुलाकर समरकंदने इन को १२ बारा गांव और दिये इन के सूर्य्यमल्लजी १८९।१ रायमल्लजी १८९।२ और कल्याणमल्लजी १८९।३ ये तीन महाराजकुमार हुवे नरबदजी के अर्जुनजी १८९।१ भीमजी १८९।२ पूरजी १८९।३ और मोकलजी १८९।४ ये चार बेटे हुवे और कर्मवत्तीजी नाम बाई हुई ये चीतोड के राणा संग्रामसिंहजीको ब्याही

गई थीं अर्जुनजी १८९।२ के सुरजनजी १९०।१ अखयराजजी १९०।२ खाँधलजी १९०।३ और रामजी १९०।४ ये चार बेटे हुवे अर्जुनजी १८९ के वंश के अर्जुन पोता अखयराजजी १८९।२ के अखयराज पोता खाँधलजी १८९।३ के बेटे जसराजजी थे उन के जैसावत कहलाये रामजी १८९।४ के राम के हाडे कहलाये एक दिन वक्त पाकर नारायणदासजी १८८ अपणा बहादुरों को लेकर किसी बहाने से बूँदी पधारे चार ४०० सौ सिपाही तो दरवाजे से बाहर रक्खे और आप सात ७ बहादुरों के साथ जाकर समरकंद को जहाँ वह थोडे से आदमियों के साथ बुलबुल लड़ा रहा था मारडाला वहाँ ही खटकड के जागीरदार अखयराजजी के बेटे संग्रामसिंहजी भी हाजर थे उन्होंने नारायणदासजी १८८ को मारणा विचारा नारायणदासजी १८८ ने उन को भी मारडाला उस जगह को अबतक भी पूजते हैं तब तो सब अपने सिपाही शामिल होगये

समरकंदका बेटा दाऊद जो उस वक्त शिकार को गयाथा आता हुवा चतुर्भुजजी के मंदिर पास जो बूँदी के बाजार मैं है मारागया उस वक्त हसनखाँ और चाँदखाँ जो समरकंद के बडे बहादुरथे हवेली पर चढ़कर नारायणदासजी १८८ सैं कहने लगे कि जो आप हमारे एक तीरसैं बचजावोगे तो हम शस्त्र छोडकर फ़क़ीर होजावैंगे जब इन्हों ने हुक्म पाकर नारायणदासजी १८८ के ऊपर गोली के टप्पेसैं तीर चलाया तो नारायणदासजी १८८ के थोडासा घाव लगा तब तो वे भी दोनों फ़क़ीर होगये नारायणदासजी १८८ ने एक तो मीडकदरे पर और दूसरी केदारनाथजी के रस्ते मैं इन के नाम की चौकी बणवाई और चतुर्भुजजी के मंदिर के पास समरकंद और दाऊद की कबरैं बणवाई समरकंद की बेगम ने बूँदी के पास भी बनबा नाम गाँव बसाया और वहाँ एक बावडी बनाई ॥ नारायणदासजी १८८ अफीम बहुत लेने लगे यहाँ तक कि विशेषकर इस के नशे मैं

ऊँघते रहते एक वक्त चीतोड पधारे थे वहाँ राणाजी के दरीखाने में विराजे हुवे ऊँघ रहे थे उस वक्त ढकूजी नाम पूर्बिया चहुवाण जो राणाजी के सरदारों में थे जिन्हों ने पहले दिनों में राणाजी के साथ बूंदी में आकर दरीखानें में नारायणदासजी १०८ को ऊँघते देखकर हाँसी करी थी अब उन्हों ने नारायणदासजी १०८ का फिर ठट्ठा किया जो कि बूंदी में हाँसी की खबर पाकर भी नारायणदासजी १०८ नें कुछ न फर्माया था अब इन्हों ने उस नालायक को दरीखाने में ही मारडाला संबत् १५८१ में मांडू के बादशाह ने नालबंदी लेणे वाले दो इक्के जो बडे बडे बहादुर थे चीत्तोड में भेजे थे उन दिनों में नारायणदासजी १०८ चीतोड बुलाये गये थे सो उन्हों ने १ एक इक्का सांगसें घोडा सुधाँ मार लिया दूसरा इक्का भाग गया उस वक्त राणाजी ने इन सें बडी दोस्ती दिखाई नारायणदासजी १०८ तो बूंदी में

पधार आये राणाजी ने नरबदजी १८८। २ के बेटे अर्जुनजी जो अपणे बहण कर्मावतीजी को पहुंचाणे वास्ते चीतोड आये थे ६५००० की जागीर देकर चीतोड मैं ही रख लिये जब इसके के मारणे की खबर सुनकर अहमदाबाद और मांडू के बादशाह महमूद और मुजफ्फर नैं अपनी फौज सैं चीतोड घेर लिया उस वक्त भी नारायण दासजी १८८ नैं राणाजी की मदद करी रातके धावे मैं हारकर दोनों दुश्मन भगगये इस लडाई मैं अर्जुनजी के भी बहुत घाव लगे मांडू का कामदार इन्होंने मार लिया नारायणदासजी १८८ के छोटे भाई नरसिंहजी इस लडाई मैं काम आये जब बाबरशाह दिल्ली सैं बडी फौज लेकर चीतोड पर चढ आयाथा उस वक्त भी नारायणदासजी १८८ राणाजी की मदद पर थे पील्याखाल पर आकर लडाई हुई उस वक्त राणाजी ने बादशाह की फौज बहुत देख कर भागणा चाहाथा परंतु नारायणदासजी १८८ ने

कहा कि आपकी दीवान पदवी है सो दुश्मनौं की फौज सैं भागजाना ने सैं अच्छी नहीं दीखैगी तब राणाजी ने कहा कि दीवान पदवी आप को मुबारिक है यह कह कर चीतोड को चलेगये नारायणदासजी २८८ नैं बाबरशाह सैं बडी लडाई करी और फतह पाई उसवक्त सैं बूंदी वालौंको दीवान कहते हैं इस लडाई मैं नीसाउत नृसिंहजी हरपाल पोता भीमजी नोरंग पोता भरतजी डूंगरसिंहजी खजूरीवालौं के वंश के अमरसिंहजी थिरराज पोता गंगादासजी वगैरह बहुत काम आये मोहणोत देवसिंहजी जैताउत राघवदासजी ये दोनौं हाडे लडाई सैं भागकर बूंदी मैं आछिपेये नारायणदासजी २८८ भी बहुत घायल हुवे जबभागता हुवा बाबरशाह रस्ते मैं बूंदी के मुल्क को लूटने लगा तो बूंदी सैं सूर्यमल्लजी २८९ तयार हुवे नरबदजी ने इन को बालक समझ कर बहुत रोके परंतु जब इन्हौं ने किसी तरह नहीं मानी तो किसी बहाने सैं मकान मैं ताले सैं

बंद करदिये इस के पीछे नरबदजी फौज को लेकर चंबल के किनारे कुशक के घाट पर बादशाह सैं लडने को जापहुंचे बहुत बडीलडाई हुई इसमें नरबदजी १८८।२ मारेगये और हाथावत हम्मीरजी घुरघुलोत्त तेजजी लाखाजी कुबेरजी हाल पोता अनोपजी खजूरी के खेमजी वग़ैरह कई काम आयेथे पीछेसैं नारायणदासजी १८८ बूंदी मैं आये एक दिन थोडे से लवाजमैं के साथ ऋांतरी के गुढ के पास शिकार वास्ते पधारे थे उस वक्त खटकड के जागीरदार नरबद जिसके बाप संग्राम सिंहजी समरकंद के साथ नारायणदासजी १८८ के हाथ सैं मारेगये थे खाल मैं छिपकर नारायणदासजी १८८ पर गोली चलाकर पहाड की तर्फ भागा नारायणदासजी १८८ नें उस के पीछे घोडा दौडाया परंतु पहाड पर चढ नहीं सका उसीगोलीसैं संवत १५८४ सैं नारायणदासजी १८८ का परलोक हुवा और इन के पीछे सूर्य्यमल्लजी १८९ वर्ष २१ की उमर मैं गद्दी पर विराजे राणाजी ने

टीके का दस्तूर १ हाथी २ घोड़े १ पोशाक और जड़ाऊ गहणे भेजे थे इन के सुरताणजी १८० हुवे सूर्य्यमल्लजी १८९ ने बदला लेने वास्ते खटकड़ घेरली उस वक्त नरबद तो छिपकर भागगया इन्हों ने उस का माल लूट लिया और सिवाय खटकड़ के कि जो नरबद के घर के लोगों के गुज़रान वास्ते छोड़ा गया सारे जागीर के गांव ख़ालसे कर लिये नरबद ने भाग कर सारंगपुर के राजा मक्खन मुसलमान के यहां जो नरबद का दोस्त था पनाह ली सूर्य्यमल्लजी १८९ ने मखन से कहलाभेजा कि जो तुम्हारा भला चाहते हो तो हमारे बदख़्वाह को सौंपदो जब उस ने क़बूल नहीं करी तो उस पर चढ़ाई हुई वहां कुछ लड़ाई करके मखन और नरबद दोनों भागगये सारंगपुर को लूटकर सूर्य्यमल्लजी १८९ बूंदी पधार आये इन्हीं दिनों में राणाजी के साथ मालवे के महमूद शाह और गुजरात के मुज़फ़्फ़र शाह की लड़ाई में मुसलमानों

ने किले को सुरंग लगा कर उडाना चाहा था उस वक्त जिस बुरज पर नरवदजी के बेटे अर्जुनजी जो राणाजी ने चीतोड में ही रखलियेथे मौजूदथे वह बुर्ज बारूत सें उड़गई उसी के साथ अर्जुनजी भी उडगये जीत होजाने पीछे राणाजी ने अर्जुनजी के बेटे सुर्जनजी को दूणी जागीर दी चीतोड में राणा संग्रामसिंहजी का देहांत हुवा और उनके बेटे रत्नसिंहजी गद्दी पर बैठे ईनवार के राजा पँवार सारंगसिंहजी की बडी बेटी तो राणा रत्नसिंहजी को ब्याहे छोटे बेटी सूर्य्यमल्लजी १८६ को ब्याहेथे और इन राणाजी का बडा कामदार कोठारे का ठाकुर पूरणमल्ल था यह नालायक सूर्य्यमल्लजी सें नाहक दुश्मनी रखता था और हाथी १ घोडे २ जडाऊ मूठ की तलवार सरपेच पोशाक कमठा और कबाण ये चीजें नारायणदासजी १८८ के हाथ सें इक्का सवार मरणे पीछे राणाजी की तर्फ सें हर साल बूँदी को भेजी जाती थी और बाबर

शाह की लडाई के पीछे ये चीजें दूणी भेजी जातीथीं सो पूर्ण मल्ल नैं सब बंद करदी मांडू और गुजरात के बादशाह सें मेल करके सूर्य्यमल्लजी को मारणा चाहाथा परंतु यह बण नहीं सकी । और खटकड के जागीरदार नरबद के बेटे पूरजी नैं इस बात की सूर्य्यमल्लजी १८९ के आगे अर्ज भी करदीथी पूर्णमल्ल राणाजी के कानों मैं भी यही भरा करता था कि आप तो बूंदी वालों सें दोस्ती रखते हो वे आपका मुल्क लिया चाहते हैं एक वार सूर्य्यमल्लजी १८९ आप के सुसराल श्रीनगर मैं पधारे थे उहां इन सें राणाजी की राणीजी नैं जो इन की बडी सालीथे यह कहा कि आपनैं बडा शेर तीर सें मारासुना है सो ऐसाही एक शेर इहांभी हिलरहा है उसको आप मारैं तो हम भी देखा चाहती हैं सूर्य्यमल्लजी १८९ नैं सुनकर दूसरे दिन उहां माला दिवाया

और दूसरे दिन रात के वक़्त आप उसमैं विराजगये रणवास की स्त्रियों नैं इन के पास जोरावरी सैं इन के राणीजी भेजे कितनी देर पीछे हिलाया हुवा शेर भी आपहुंचा इन्हौं नैं उस को तीर सैं मारलिया इन की सालीजीनैं जिन नैं यह हक़ीक़त आँखौं सैं देखीथी बड़ा तअ़ज्जुब हुवा और सवेरे इन की नछरावल करी यही बात इन की सालीजी नैं राणाजी के पास आकर सारी सुनाई राणाजी नैं पूर्णमल्ल सैं कही पूर्णमल्लनैं अर्ज़ करी कि आप की राणीजी की सूर्य्यमल्लजी २८९ सैं दोस्ती होगई है इसैं शक नहीं राणाजी के चित्त मैं यह पक्की ठहरगई और किसी बहानैं सैं सूर्य्यमल्लजी २८९ को मारडालना ठहराया कोई बहाना करके बूंदीमैं आये मुलाक़ात होने सैं पीछे राणाजीने यह कहा कि आप के यहां शेर की शिकार अच्छी सुनी जाती है जो होय तो हम शिकार खेलाचाहते हैं दूसरे दिन सूर्य्यमल्लजी २८९ शेर की शिकार की जगह राणाजी को लेगये उहां राणा

जीनें दग़ा तो किया परंतु चला नहीं दूसरे दिन राणाजी को हरिणों की शिकार का शौक़ हुवा राणाजी नें कहा कि हरिणों की शिकार में ज़ियादा आदमी अच्छे नहीं हमारे साथ जो पांच आदमी हैं सो आपके ही हैं तब यह सुनकर एक २ राजपूत जो पानी पिलानें वाले नौकर के पास में पानी की शीशी लेकर साथ हुवे थे वे भी सूर्य्यमल्लजी १९८ नें पीछे भेज दिये परंतु वे कुछ दूर पर पीछे पीछे आते रहे राणाजी नें अपणे आदमी समझा रक्खे थे जब शिकार की जगह में पहुंचे और मौक़ा पाकर पूर्णमल्ल नें सूर्य्यमल्लजी पर तीर चलाया सो सूर्य्यमल्लजी १९८ के लगकर पार निकल गया तब तो सूर्य्यमल्लजी १९८ नें सम्हल कर एक १ आदमी को जो पीछे बैठ कर सूर्य्यमल्लजी १९८ के कटारी की घूंस दिया चाहता था पीठ का ज़ोर देकर मार डाला जो कि तीर बड़े ज़ोर से लगा था और अब इन्हों नें आदमी पर ज़ोर दिया इस से सूर्य्यमल्लजी १९८ को मूर्छा आगई जब राणाजी

नें पूर्णमल्लजी को पूछा कि सूर्यमल्लजी मार लिये तब पूर्णमल्ल नें खुसी सें अर्जकरी कि मारलिये उस आवाज में सूर्यमल्लजी को कुछ होस आया उस वक्त राणाजी के पूर्णमल्ल वगैरह तीन ३ आदमी एक कतार में खडे हुवे थे सूर्यमल्लजी २९ नें एकतीर इस जोर सें छोडा कि तीनों में फूटनिकला उस वक्त मरते हुवे पूर्णमल्लनें राणाजी सें अर्जकरी कि जो इन को जीते छोडोगे तो ये आप को जीते नहीं छोडेंगे यह सुन कर राणाजी नें सूर्यमल्लजी २९ के कि जो फिर तीर छोडने के जोर सें वे होश होरहे थे शिर पर तलवार चलाई इन्हों नें होश में आकर राणाजी को घोडे सें नीचे गिरा कर कटारी सें पेट फाड डाला और एक आदमी जो राणाजी को पानी पिलाने वाला था उस को भी लात सें मार डाला ऐसे राणाजी और पाँच उन के आदमियों को मार कर उसी वक्त सं॰ १५८८ में आप भी स्वर्ग को पधारे एक राजपूत जो सूर्यमल्लजी २९ के पीछे पीछे आते थे देखरहे थे उन नें आकर यह

बात बूँदी में कही दूसरे दिन दोनों तर्फ की फौज आपस में लडी और जो राणाजी की फौज बची सो चीतोड को गई सूर्यमल्लजी १८९ के पीछे उन के महाराज कुमार सुरताणजी ८ वर्ष की उमर में गद्दीपर बिराजे इन की ऐसी बुरी आदत्त थी कि इन्हों नें आप के सब अमीर उमराव नाखुश करदिये जो कोई इन के आगे अच्छी अर्ज करता उस की बेइज्जती करते या मरवाडालते इस वक्त को पाकर केसरखां और डागरखां इन मुसलमानों नें जैतावत्त राघवजी के बेटे बीरमजी और कन्हजी को निकालकर कोटे में अपना कब्जा कर लिया इन को तो फेर भी होश नहीं हुवा जो कोई इन को अच्छी सलाह देता उस की बेइज्जती ही करते यहां तक कि सब उमराव लोग अपणे अपणे घर बैठवाये इस मौक़े पर मांडू के बादशाह नें बूंदी फिर घेरली परंतु उस वक्त सामंतसिंहजी और काका रायमल्लजी और कल्याणमल्लजी वग़ैरह बहादुरों नें अपणी अपणी जागीरों से आकर

बादशाह को हटा दिया रायमल्लजी कल्याणमल्लजी सैंहसाजी सातलजी येमारेगये बाक़ी सब उमराव अपणे अपणे ठिकाने चलेगये एक सामंतजी सुरताणजी के पास रहे जब इन को भी सुरताणजी १८० ने मारडालणा चाहा तो ये बूँदी सैं निकलकर अपणीजागीर बाँसी मैंजाकर ७०० आदमीजो उन के नौकर थेलेकर शाहसलीम के पास चलेगये जो शेरशाह का बेटा था शाह सलीम नैं इन को रणथंभोर के क़िलेदार बनादिये तो ये अपने साथ को लेकर रणथंभोर चलेगये बूँदी में सुरताणजी १८० के ज़ुल्म सैं अमीर ग़रीब पंच सब दुखी होगये थे सब नैं मिलकर अर्जुनजी के बेटे सुर्जनजी जो चीत्तौड़ में थे उन के पास इस तरह की अर्ज़ी भेजी कि अब सुरताणजी १८० के ज़ुल्म सैं हम सब दुखी होगये हैं जो आप इन को गद्दी सैं दूर करके बूँदी को अपणे क़ब्ज़े मे नहीं लोगे तो यह राज हाडों के हाथ सैं जाता रहैगा सुर्जनजी नैं यह राणाजी के आगे ज़ाहर करके उन

के कहनैं सैं यह लिख भेजा कि फौज खर्च वास्ते बीस हजार रुपैये भेजो तो मेरा आणा होसके जब बूंदी से लिखे मुवाफिक रुपैये आगये तो येभी फौज को लेकर बूंदी के पास सतूर मैं पधारे सुरताणजी १६० नैं यह खबर सुनकर राज के आदमियों सैं सबब पूछा तो उन्हों नैं ऊपरी दिल सैं यह अर्ज करी कि ये बडों के चौंतरैं के दर्शन वास्ते आये हैं परंतु आपपाटणमैं पधारिये नहीं तो कुछ दंगा होजायगा सुरताणजी यह सुन कर राज के आदमियों की साथ पाटण को पधारे वे लोग सुरताणजी को छोड कर सुर्जनजी सैं आमिले सं· १६११ मैं २६ वर्ष की उमर मैं सुर्जनजी १६१ गादीपर बिराजे और अमीर गरीब सब को राजी किया सुरताणजी नैं जब यह खबर जाण ली तो अपणे राणीजी वगैरह को लेकर राय मल्लजी खींची पास पधारे उन नैं इन के गुजरान वास्ते बडोद का परगना दिया इन के वंश के सुरताणोत के हाडे कहलाये सुर्जनजी १६१ के दूदाजी १६२

भोजजी १९२।२ औररायमल्लजी १९२।३ ये तीन महाराज कुमार हुवे दूदाजी के दूदावत और रायमल्लजी के रायमल्लोत हाडा कहलाते हैं सुर्जनजी नैं सं·१६१४ मैं केसरखां और डागरखां को जिन नैं कोटा दाबलिया था मारकर कोटा पीछा लेलिया और रायमल्लजी खीची सैं मऊका परगना लेलिया इन दिनौं मैं शेरशाह और सलीमशाह के अमीर जो पहलां रणथंभोर के किले मैं रहते थे उनौं नैं सामंतसिंहजी किलेदार सैं कही कि किले मैं आय रहिये और हम को निकालदीजिये नहीं तो अकबरशाह मारडालेगा सामंतजीनैं ये तो निकालदिये और सुर्जनजी १९१ के नाम यह लिख भेजा कि अब किले मैं अपना कब्जा करलेना ठीक है तब सुर्जनजी १९१ सं·१६२० मैं उहां थोडीसी फौज लेकर पधारे और अपनी तर्फ सैं सामंतसिंहजी कूं ही क़िलेदार रक्खे उन दिनौं मैं सुरताणजी अकबर के पास जारहेथे अकबर नैं इन को कितनेक तोपखाने

के मालिक करदिये जब चीतोड पर अकबर की चढाई के वक्त लाखेरी के मुकाम सें सुरताणजी नें कित्तनीक फौज के मालिक को कुछ लालच देकर बूंदी की तर्फ मोड कर बूंदी पर लडाई करणा चाहा बूंदी मैं सुर्जनजी के भाई रामसिंहजी थे उन्हौं नें दो बार तो रात को धावा मार कर फौज भगादी और कुछ बादशाही फौज की तोपैं लूटली जब सुरताणजी और फौज के अफसर के आपस मैं बिगाड होगया रामसिंहजी नें इस बिचार सें कि सुर्जनजी १९१ तो रणथंभोर मैं हैं और यहां बादशाह सें बिगाड ठीक नहीं बादशाह की तोपैं पीछी देकर अफसर के साथ ऐसा मेल कर लिया कि उस नें बादशाह का दिल सुरताणजी सें फेरदिया और बादशाह नें भी बिना परवानगी बूंदी पर चढने के कुसूर सें सुरताणजी बेतर्फ कर दिये तो सुरताणजी निरास होकर रायमल्लजी खींची पास चलेगये अकबरशाह चीतोड मैं अपना दखल करके रणथंभोर किला लेणे वास्ते उहां आया पहलौं

तो कोई दिन लडाई रही और जब किला टूटनैं की उम्मेद कम होगई तो सुर्जनजी २८१ को जोर दिल्ही के रस्ते समझाणे वास्ते जयपुर के राजा भगवंतसिंहजी भेजे जब जोरसैं काम नहीं हुवा तो अकबर नैं भगवंतसिंहजी सैं यह कहा कि तुम हिंदू लोग तुम्हारी जात की तर्फदारी सैं कहते नहीं हो यह कहकर जलेबदार की सूरत बणा कर भगवंतसिंहजी के साथ एक दिन अकबर आपही गया जब भगवंतसिंहजी नैं पहली तरह सैं कहा तो सुर्जनजी २८१ नैं यही जबाब दिया कि हम डर सैं किला कभी नहीं छोडैंगे जब भगवंतसिंहजी नैं कहा कि आज कल मुसलमानों का प्रताप वधरहा है और जो आप का बिगाड कुछ बादशाह सैं न हो सका तो आप के बेटे पोतौं पर कोई तरह की तक्लीफ पहुँचैंगी इस वक्त जो आप इकरार किया चाहैं सो भी हो सक्ता है सो उस इकरार पर किला खाली कर देणा ठीक है तब तो कुछ दिल मैं बिचार कर सुर्जनजी २८१ नैं यह कहा

कि ये सात ७ बातैं जो नीचे लिखी हैं सो मंजूर होवैं ॥ और कुछ मुल्क भी मिले तो किला खाली हो सक्ता है पहले १ हम हमारी बेटी बादशाह को नहीं देवैं २ दूसरी हमारे रणवास के लोग नौरोजे में नहीं जावैं तीसरी अटक पार हम नहीं उतरैं चौथी हम आमखास दरीखाने में शस्त्र लेकर जावैं पाँचवीं लाल कोट तक हमारा नक्कारा बजे छठी हमारे घोडौं के दाग नहीं लगैं सातवीं हम किसी हिंदू राजा के हुक्म में होकर लडाई में नहीं जावैं जब यह बात अकबर नैं सुनी तब तो डेरे मैं आकर सातौं ७ कलमों की और सात ७ परगनों की लिखावट लिख कर भेजदी और एक लिखावट इस तरह की भी भेजी कि जो तुम गुडवाणा फतह करो तो ५२ परगने जैसा चाहो वैसे मिलैंगे इन लिखावटों को लेकर सुर्जनजी ८८१ नैं किले में सैं दो भगवान की मूर्ति और धूलधाणी १ और कटक बिजली नाम दो तोपैं निकाल कर संवत् १६२८ मैं किला खाली कर दिया

इन मूर्त्तौं मैं सैं एक तो बूंदी के बाजार मैं चतुर्भुजजी की है दूसरी बारां मैं कल्याणरायजी की है जो उहां रावराजा रत्नजी १८३ की माताजी नैं पधराई है जब बादशाह के वास्ते किला खाली किया तो सामंतसिंहजी नैं सुर्जनजी १८१ सैं कहा कि आप तो बादशाह की बंदगी करो हम तो इस किले को मरे बिना नहीं छोडैंगे आखिर बादशाह की फौज सैं लड कर मारे गये किले मैं बादशाह का कब्जा होगया सुर्जनजी १८१ नैं गुडवाणे मैं बारीगढ के गौडों को जीत्त कर बारीगढ मैं बादशाह का कब्जा करदिया वहां अपनें नाम का दरवाजा बनाया वहां के राजा की बादशाह आगे बडाई ककै और कुसूर माफ करा के बारीगढ पीछा दिवाया इस बात्त पर अकबर नें सुर्जनजी १८१ को रावराजा पदवी और अपनी सवारी का हाथी १ घोडा १ पोशाक गहणा हथियार और पंजहजारी का मुनसब दिया साथही ५२ परगने दिये और काशी सिवायदी इन परगनौं मैं हिंगुलाजगढ १ शाहाबाद २ मालपुरा ३ टोडा ४ टौंक ५

रामपुरा ६ सेरगढ ७ केकडी ८ सिरोंज ९ बरवाडा १० बालाभेट ११ खाताखेडी १२ भिलसा १३ खंडार १४ मलारणा १५ चैनपुर १६ बाडी १७ खेडी १८ रतनगढ १९ सिंघोली २० भैंसरोड २१ कैथोली २२ साढोरा २३ गूगेंर २४ खलचीपुर २५ आगर २६ ये परगने तो बूंदी के पास दिये और चनारगढ मांडारामगढ वग़ैरह २६ परगने काशी के पासदिये इन को लेकर सुर्जनजी २६१ बूंदी में पधारे इन दिनों में सुर्जनजी की राणी कनक वतीजी नें डुधारी में कनक सागर नाम तालाब बणाया सुर्जनजी २६१ नें दूदाजी को बूंदी और पाटण भोजजी को लाखेरी और खटकड रायमल्लजी कों पलायता और सोगोद बखशे आप रणवास सुधां काशी में पधार कर राजमंदिर बणाया जो हाल तक मौजूद है इसें पीछे बादशाह पास आकर दूदाजी और भोजजी को बुलाकर बादशाह के आगे हाजर किये परंतु बादशाह नें खूब सूरती अच्छापहरावगहणा वग़ैरह देखकर भोजजी को बडे समझ कर

उन कोंही पहली खिलअ़त दी उससैं पीछे दूदाजी कोदी उस वक्त दूदाजी नाराज होकर डेरे को आते वक्त बादशाह को सलाम भी नहीं करी तब बादशाह नैं हँसकर इन को दूदालकाडखाँ का खिताबदिया दूदाजी १९२ नैं रस्ते मैं आते वक्त भोजजी १९२ को मारडालनें का उपाय कियाथा सोभोजजी की होशयारी सैं टलगया जबबादशाह को खबर हुई कि बडे तो दूदाजी १९२थे हमनैं पहली खिलअ़त भोजजी १९२ को दी तबतो सुरजनजी १९१ सैं कहकर दोनों भाई फेर बुलाये और जैसी ठीकथी वैसी उन के साथ मुलाकात करी जिस वक्त सूरत मैं एक मुसलमान नैं अपनैं को जुदा बादशाह बणा कर गुजरात तक कब्जा करलिया था उस वक्त की लडाई मैं अकबर की साथ दूदाजी १९२।१० और भोजजी १९२।१२ दोनौं थे वहाँ भोजजी १९२।१२ नैं बडी बहादुरी सैं सूरत का बादशाह मारलिया उस वक्त राजी होकर अकबर नैं कहाकि अब हमारी तर्फ सैं बूँदी का राज तुम को मिला भोज-

जी १६२ नै भी राजी हो कर सलाम करी और जब दखण मैं अहमदाबाद की चाँद सुलताना बेगम जो बडी बहादुर औरत थी उसकी साथ अकबर की लडाई मैं भोजजी १६२ भी थे वहाँ इनौं नैं सीढी लगा कर किले मैं जाकर किला फतह किया और वहाँ एक बुर्ज बणाई जो अब भोज बुर्ज कहलाती है जब इस फतह सैं खुश हो कर अकबर नैं कहा कि बूँदी तो तुम कौं पहली ही दी है अब फिर जो तुम माँगो सो हम देते हैं तब भोजजी नै यह माँगा कि हमारी फौज के पास गायौं का मारणा और भगवान के मंदिर और मूर्तौं का फोडना नहीं होय और बरसात के दिनौं मैं रुखसत के विना भी हम हमारे देश मैं चले जाया करैं और बादशाह की सवारी के वक्त हम हुक्म के बिना भी घोडे पर सवार हो कर साथ चलैं ये सब बातैं बादशाह नैं मंजूर करी सुरजनजी १६१ भी काशी सैं दिल्ली पधार आये थे जब दूदाजी नैं सुर्जनजी १६१ का चित्त भी भोजजी की ही तर्फ देखा तब तो

खुला खुली भोजजी सैं दुश्मनी करने लगगये और बादशाह सैं बागी होगये फतहपुर मीकरी मैं बादशाह का तबेला लूट लिया राठोड बलभद्र जो मारवाड का रहने वाला धाडी बादशाह का बदख्वाह था और रामपुरैं चंद्रावतौं के अपणा ब्याह करने को जानैं मैं बादशाह की फौज सैं डरता था उस की मदद ककैं ब्याह कराया और अच्छी तरह उसके घर पहुँचादिया एक बार बलभद्र सुद्धां बादशाही फौज सैं घिर भी गये थे परंतु कुछ उन का विगाड नहीं हुवा और बूंदी मैं आगये और बादशाहनैं भोजजी को बूंदी दिलाने वास्ते उनके साथ सुजनजी २८१ के काका के बेटे भाई सिंहजी और मुहब्बतखाँ फौज सुद्धां भेजे जब यह फौज दूदाजी नैं बडदाकुमारती के बीचले मुक़ाम मैं रात को धावा मार कर मुहब्बतखाँ समेत मार भगाई तो फेर सुजनजी १ के साथ भोजजी और नब्बाब रणमस्तखाँ फौज देकर भेजे और यह कही कि दूदाजी को समझाकर

यहाँ ले आओ यहाँ आजाने पर उन को बूँदी के एवज दूसरा राज मिलेगा जब बूँदी के पास आकर सुजनजी १८१ ने दूदाजी सें यह बादशाह की कही हुई बात फर्मा भेजी तो दूदाजी ने जबाब भेजा कि भोज और रणमस्त खां के साथ एक लडाई होणे पीछे जो आप फर्मावोगे सो करूँगा दूसरे दिन बूँदी के पास मयूर में देवीजी की पूजन कर्त्ते हुवे दूदाजी बादशाही फौज नें घेरलिये इन्हों नें खूब लडाई करकें फौज भगादी दूसरे दिन रात के वक्त धावामारा भोजजी और रणमस्त खां भागकर छिपगये माल बहुतसा दूदाजी नें लूटलिया सुबह के वक्त दूदाजी आकर सुर्जनजी १८१ के कदमों में गिर पडे रणमस्त खां नें कहा कि हमारे तुमारे बीच में अल्लाहै तुम को जीव का डर कभी नहीं होवेगा जब ये इन के कहनें सें बादशाह सें आमिले ॥ तो बादशाह नें ऊपर सें तसल्ली करी कोई बहानें सें दूदाजी और रणमस्तखां तो पहली लाहोर को भेजदिये पी-

छे सैं जयपुर के राजा मानसिंहजी को क़ाबुल भेजते वक्त यह कहा कि दूदाजी को मारकर या पकडकर काबुल को जाइयो जब यह खबर रणमस्तखाँ के बेटे ने अपने बाप को लिख भेजी इस नैं दूदाजी सैं कही तो दूदाजी बूंदी आये रस्ते मैं नानणा के मुक़ामपर जब यह खबर पाई कि बूंदी मैं भोजजी का कब्जा करणे वास्ते जो बादशाह नै फौज के साथ नौशेरख़ाँ भेजा है सो इहां पडा है तब रात मैं धावा मारकर इन नै उस को मार भगाया तब तो बादशाह नै बहुत फौज भेजी उस वक्त लडाई करकें सं· १६३२ मैं दूदाजी बूंदी सैं निकलगये बूंदी मैं भोजजी १६२ का कब्जा होगया दूदाजी नै बूंदी और दिल्ली के मुल्क मैं लूटमचाई दिल्ली मैं बीजापुर के बादशाह का राज करादेने के उपाय मैं बीजापुर को जाते थे परंतु मालवे के देवगाँव मैं वहाँ के आदमियों नैं जहर देदिया इस सैं सं· १६३८ मैं परलोक पधारे इनौं नैं बूंदी मैं तारागढ के नीचे महल

बनाये सो सूरजी के महल कहलाते हैं गोहडगढ नाम किला बनाया जो बूंदी सैं सात आठ कोस पर मौजूद है इन के चतुर्भुजजी १९३।१ जिन को अमरसिंहजी १९३ भी कहते हैं परशुरामजी १९३।२ और स्यामसिंहजी १९३।३ ये तीन बेटे हुवे सुर्जनजी १९१ ने काशी के पास एक बाग बनाया और सं· १६४२ मैं काशी मैं देहांत हुवा मणिकर्णिका के घाट के पास ब्रह्मनाली के बीच इन की राणियों के चौंतरे हैं जहां वे सती हुवेथे सुर्जनजी १९१ के पीछे ३४ वर्ष की उमर मैं भोजजी १९२ गद्दी पर विराजे इन के रत्नजी १९३।१ हृदयनारायणजी । १९३।२ केशवदासजी १९३।३ मनोहरजी १९३।४ ये चार महाराजकुमार हुवे एक दिन जयपुर के महाराज मानसिंहजी ने बादशाह के आगे यह चुगली करी कि जहांपनाह जब सूरत का बादशाह भोजजी १९२ के हाथ सैं मारा गया था उस वक्त उस की पाग के सरपेच मैं जो बड़े मोल का हीरा था सो भोजजी १९२ के

हाथ आगयाथा सोइन के पास है जब बादशाह नै दरीखानैं मैं भोजजी १९२ से कहाकि वह हीरा तुमारे पास है सो हम को भी दिखाओ इन्हों नें कटारी पर हाथ रख के कहा कि वह इसी जगह में है जिस ने कहा है वे वक्त पाकर देखही लेंगे इस बात सैं मानसिंह को बडारंज हुवा जबकि बादशाह की मा मरगई उस वक्त बादशाह ने हुक्म दिया जो हिंदू सरदार हैं वे अपणी चाल के माफिक सब डाढी मूंछ मुडवावें उस वक्त और सरदारों ने तो बादशाह का हुक्म माना इन्हों नै डाढी मूंछ नहीं मुंडवाये उस वक्त किसी का मकदूर नहीं थाकि जो जबरदस्ती सैं इन की मूंछ मुंडवाता परंतु बादशाह ने नाराज होकर बूंदी के पास के २६ परगने और काशी के पास के १९ परगने उतार लिये फक्त काशी के पास ७ सात परगने रहे जब इन्हों नैं बादशाह के हुक्म सैं हीरासिंह नाम सिक्ख को जिस ने लाहोर की तर्फ लूट मार मचार क्खी थी मारडाला सोइन के वास्ते

मालपुरा १ टौंक २ टोडा ३ ये परगने फेर मिले जब कि बुंदेलौं के बंदोबस्त वास्ते इलाहाबाद का सूबा शरीफ खाँ को मिला और उसकी अर्ज के माफिक बादशाह ने चरनार का किला उसके नीचले परगनौं सुद्धां शरीफ खाँ को देदेणे का परवाना रत्नजी १९३ के नाम भेजा तो रत्नजी १९३ ने कहा कि मैं मेरे पिताजी की परवानगी बिना नहीं दूंगा इस बात पर तकरार होने सें रत्नजी १९३ नैं शरीफखां को मार डाला तो बादशाह नें खफा हो कर सात परगनें सुद्धां काशी भी उतार ली अकबरशाह के मरने पीछे जब जहांगीर तख़्त पर बैठगाया तब भोजजी १९२ ने बूंदी में आकर हृदयनारायणजी १९३।२ के वास्ते आंवाँ १ दूणी २ कोटा ३ ये जागीर मैं बखसे केशोदासजी १९३।३ को बंडोद और मनोहरजी १९३।४ को बंभोरी और डाबरी दिये संबत १६६४ के आषाढ सुदि ४ के दिन भोजजी १९२ का देहांत हुवा इन्होंनैं नवलखा

बाग बनाया जहाँ अब नवल खा तालाव है और बादलमहल फूलमहल और हथियांसाल ये बणाये इन की राणीजी साहिबा बालणोतजी नै पहले कटले में बावडी बणाई कालीजी नै रंगमंडप बणाया इन की खवासजी फुल्ललता नै संवत् १६५९ में कोकू का तालाव और उस की पाल पर बाग बणाया भोजजी २६२ के पीछे रतनजी २६३ गद्दी पर बिराजे इन के गोपीनाथजी २६४।१ माधवसिंहजी २६४।२ हरिसिंहजी २६४।३ जगन्नाथजी २६४।४ ये चार महाराज कुमार हुवे हृदयनारायणजी २६३।२ के हरदावत केशोदासजी २६३।३ के केशोदासभोज पोता कहलाये और मनोहरजी २६३।४ के सबलसिंहजी और भोपालसिंहजी इन दोनों के बेटा नहीं हुवा जब रतनजी २६३ दिल्ली को पधारे उन दिनों में जहाँगीर बादशाह के बेटे खुर्रम नै दखण में लूट मार मचा रखी थी उस के पकडनें वास्ते बादशाह नै रतनजी २६३ को भेजे इन्होंनें खुर्रम

को हराकर भगादिया और बुरहानपुर मैं रहे उन्हीं दिनों मैं संवत १६७१ मैं २५ वर्ष की उमर मैं महाराजकुमार गोपी नाथजी का स्वर्गवास हुवा इन के शत्रुशालीजी १९५।१ इंद्रशालजी १९५।२ बैरीशालजी १९५।३ राजसिंहजी १९५।४ मुहकमसिंहजी १९५।५ महासिंहजी १९५।६ उदयसिंहजी १९५।७ सूरसिंहजी १९५।८ स्यामसिंहजी १९५।९ केसरीसिंहजी १९५।१० कनकसिंहजी १९५।११ नगराजसिंहजी १९५।१२ रामसिंहजी १९५।१३ ये हुवे. माधवसिंहजी १९४।२ के माधाणी हरीसिंहजी १९४।३ के हरीजी के हाडा और जगन्नाथजी १९४।४ के जगन्नाथोत कहलाये रत्नजी ९३ ने बुरहानपुरसैं बारीगढ के पास तिमरनी के गौड जीते और महाराज कुमार गोपीनाथजी १९४ की खबर सुनकर बहुंत उदास हुवे बुरहानपुर का सूबा बादशाह ने इन के हवाले किया जब खुर्रम भागकर उदयपुर के राणा करणसिंहजी के पास चलागयाथा उसवक्त

कर्णसिंहजी के भाई भीमसिंहजी सैं लडाई वास्ते बादशाह की फौज आई थी उस मैं हृदयनारायणजी थे सो लडाई सैं भागकर बूंदी मैं आगये इस कुसूर पर कोटा और कोई गाँव उन के रतनजी २८३ मैं उतार लिये जब उदयपुर सैं भागकर खुर्रम नैं दखण मैं जाकर फेर एक लाख १००००० फौज इकट्ठी करली और आधी फौज बुरहानपुर पर लड़ने कौं भेजी आधी फौज सैं थोडी सी दूर पर आप रहा जब रतनजी २८३ नैं शहर से बाहर निकल कर फौज भगादी और बहुत दूर तक उस्का पीछा किया तो पीछे सैं खुर्रम किले के सिपाहियों को मारकर बुरहानपुर के किले मैं आघुसा इस बात्त को सुनकर रतनजी २८३ पीछे आये तो शहर के दखणी दरवाजे को हाथी सैं तुडा कर शहर मैं शामिल हुवे और लडाई करके खुर्रम को पकड लिया और उस्की फौज के जो मरहटे और मुसलमान थे घेर लिये जब रतनजी सैं उन मरहटे और मुसलमानौंनें यह अरज करी कि आप हम को

जीवते छोडदीजिये और जो हम को हथियारों समेत इज्जतके साथनिकालदेवें तो यहकौल करते हैं कि जब दिल्ली की फौज के साथ हमारीलडाई होय तो हम हाडों सें कभी नहीं लडेंगे और हाडों के निशान देखतेही चलेजायाकरेंगे यह इकरार सदार हेगा इस में कुरान और देवता हमारे आप के बीचमें है रत्नजी १९३ नें इस तरह की लिखावट लिखा कर रात्त को निकाल दिये खुर्रम और मुहम्मद तक़ी क़ैद में रक्खे दारकासजी फौजदार को करवर हरीसिंहजी को कापरण माधोसिंहजी को कोटा और केशोदासजी को ९ गांव दिये और खुर्रम की हिफाजतपर हरीसिंहजी रक्खे इन नें खुर्रम को बहुत दुःखदिया कितनेक दिनों के पीछे जब बादशाह का यह हुक्म आया कि खुर्रम और मुहम्मद तक़ी को दरबार में भेजदो तो यह हुक्म रत्नजी १९३ ने खुर्रम को सुनाया खुर्रम नें घबरा कर बडी खुशामदी के साथ कहाकि जोमेरे को आप दर बार में भेजोगे तो बादशाह मुज को

मारडालेगा और यह हरिसिंहजी मुज को बहुत दुःख देते हैं इस वास्ते मेरी निगह बानी पर और कोई रक्खा जाय यह सुन कर रत्नजी १९३ नैं खुर्रम की निगह बानी वास्ते माधोसिंहजी मुकर्रिर किये और यह समझादिया कि इन को किसी तरह की तकलीफ नहीं होवै और मुहम्मद तकी के पैरों मैं लोह की सांकल डाल कर उन सैयदों के कि जो बादशाह के फर्मान लेकर खुर्रम और मुहम्मद तकी के लेने वास्ते आयेथे हवाले किया और खुर्रम के वास्ते यह कहला भेजा कि अभी वे बीमार है सो रस्ते मैं मरजाणे के डरसैं नहीं भेजे इस बात को सुन कर बादशाहनैं रत्नजी १९३ खुर्रम सुदां बुलाये जब यह हुक्म खुर्रम को सुनाया तो वह बहुत घबराया तब रत्नजी १९३ इन की निगह बानी वास्ते माधवसिंहजी हरिसिंहजी और केशोदासजी को छोड कर और उन की खबरदारी की बातैं समझाकर आप बादशाह पास गये और यह अर्ज करी कि जो मैं उन को

लाता तो रस्ते में मर जाते और अब भी उम्मेद है कि वैसी ही खबर सुन नें में आवेगी बादशाह ने इन को हाथी घोडा सिरोपाव इनाम दिये और टौंक टोडा रामपुरा मालपुरा चेचकजीरपुर खैराबाद ये परगने दिये और यह फर्माया कि तुम्हारे बडों ने भी दुश्मन को पकड कर हाजर नहीं किया तुम नें दुश्मन को पकड कर हाजिर किया यह बहुत बहादुरी का काम किया जब अटक के पार कोई किलासर नहीं होता था बादशाह ने उस के सर करने वास्ते रत्नजी १८३ को कहा और रत्नजी १८३ नें सुर्जनजी १८२ की लिखाई हुई सात कलमों के माफिक अटक सें पार जाने वास्ते इनकार किया तो बादशाह ने भी समझ कर यह कहा कि तुम बुरहानपुर जाते ही खुर्रम को मारडालना जब इन को वज़ीर नें चुपके कहा कि बादशाह के यह एक ही बेटा है इस का मारणा ठीक नहीं रत्नजी १८३ ने बूंदी में आकर माधवसिंहजी और केशवदासजी के नाम लिख भेजा कि खुर्रम को रात

मारडालेगा और यह हरिसिंहजी मुज को बहुत दुःख देते हैं इस वास्ते मेरी निगह बानी पर और कोई रक्खा जाय यह सुन कर रत्नजी १९३ नैं खुर्रम की निगह बानी वास्ते माधोसिंहजी मुकर्रिर किये और यह समझादिया कि इन को किसी तरह की तकलीफ नहीं होवै और मुहम्मद तकी के पैरों मैं लोह की साँकल डाल कर उन सैयदों के कि जो बादशाह के फर्मान लेकर खुर्रम और मुहम्मद तकी के लेणे वास्ते आयेथे हवाले किया और खुर्रम के वास्ते यह कहला भेजा कि अभी वे बीमार है सो रस्ते मैं मर जाणे के डरसैं नहीं भेजे इस बात को सुन कर बादशाहनैं रत्नजी १९३ खुर्रम सुद्धां बुलाये जब यह हुक्म खुर्रम को सुनाया तो वह बहुत घबराया तब रत्नजी १९३ इन की निगह बानी वास्ते माधवसिंहजी हरिसिंहजी और केशोदासजी को छोड कर और उन की खबरदारी की बातैं समझाकर आप बादशाह पास गये और यह अर्ज करी कि जो मैं उन को

लाता तो रस्ते में मर जाते और अबभी उम्मेद है कि वैसीही खबर सुननें में आवेगी बादशाह ने इन को हाथी घोडा सिरोपाव इनाम दिये और टौंक टोडा रामपुरा मालपुरा चेचकजीरपुर खैराबाद ये परगने दिये और यह फर्माया कि तुम्हारे बडौंने भी दुस्मन को पकड कर हाजर नहीं किया तुमनैं दुश्मन को पकडकर हाजिर किया यह बहुत बहादुरी का काम किया जब अटक के पार कोई किलासर नहीं होताथा बादशाह ने उस के सर करने वास्ते रत्नजी १६३ को कहा और रत्नजी १६३ नैं सुर्जनजी १६१ की लिखाई हुई सात कलमों के माफिक अटक सें पारजाने वास्ते इनकार किया तो बादशाह ने भी समझ कर यह कहा कि तुम बुरहान पुर जातेही खुर्रम को मारडालना जब इन को वज़ीरनैं चुपके कहा कि बादशाह के यह एकही बेटा है इसका मारणाठीक नहीं रत्नजी १६३ नै बूंदीमैं आकर माधवसिंहजी और केशवदासजी के नाम लिख भेजा कि खुर्रम को रात

मारडालेगा और यह हरिसिंहजी मुज को बहुत दुःख देते हैं इसवास्ते मेरी निगह बानी पर और कोई रक्खाजाय यह सुनकर रत्नजी १८३ नैं खुर्रम की निगह बानी वास्ते माधोसिंहजी मुकर्रर किये और यह समझादिया कि इन को किसी तरह की तकलीफ नहीं होवै और मुहम्मद तकी के पैरों में लोह की सांकल डाल कर उन सैयदों के कि जो बादशाह के फर्मान लेकर खुर्रम और मुहम्मद तकी के लेणे वास्ते आयेथे हवालै किया और खुर्रम के वास्ते यह कहलाभेजा कि अभी वे बीमार हैं सोरस्ते में मरजाणे के डरसैं नहीं भेजे इस बात को सुन कर बादशाहनैं रत्नजी १८३ खुर्रम सुद्धां बुलाये जब यह हुक्म खुर्रम को सुनाया तो वह बहुत घबराया तब रत्नजी १८३ इन की निगहबानी वास्ते माधवसिंहजी हरिसिंहजी और केशोदासजी को छोड़कर और उन की खबरदारी की बातें समझाकर आप बादशाह पास गये और यह अर्ज करी कि जो मैं उनको

लाता तो रस्ते में मर जाते और अबभी उम्मेद है कि वैसीही खबर सुननें में आवेगी बादशाह नें इन को हाथी घोडा सिरोपाव इनाम दिये और टोंक टोडा रामपुरा मालपुरा चेचकजीर पुर खैराबाद ये परगने दिये और यह फर्माया कि तुम्हारे बडों नें भी दुश्मन को पकड कर हाजर नहीं किया तुमनें दुश्मन को पकड कर हाजिर किया यह बहुत बहादुरी का काम किया जब अटक के पार कोई किलासर नहीं होताथा बादशाह ने उस के सर करने वास्ते रत्नजी १५३ को कहा और रत्नजी १५३ नें सुर्जनजी १५१ की लिखाई हुई सात कलमों के माफिक अटक में पारजाने वास्ते इनकार किया तो बादशाह ने भी समझ कर यह कहा कि तुम बुरहान पुर जातेही खुर्रम को मारडालना जब इन को वज़ीर नें चुपके कहा कि बादशाह के यह एकही बेटा है इसका मारणा ठीक नहीं रत्नजी १५३ ने बूंदी में आकर माधवसिंहजी और केशवदासजी के नाम लिख भेजा कि खुर्रम को रात-

में निकाल देना जब रतनजी १९३ के लिखे माफिक खुर्रम को निकालने लगे उस वक्त खुर्रम नैं अहसानमंद होकर यह लिख दिया कि मेरा जीव रतनजी १९३ नै बचाया है और जो परगने बादशाह नैं हाल दिये हैं सो बने रहैंगे हरिजी की बे अदबी माफ करी जावेगी और तख्त पर बैठने पीछैं माधवसिंहजी को कुछ मुल्क दिया जायगा खुर्रम सैं इस लिखावट को लेकर माधवसिंहजी केशवदासजी और हरिसिंहजी नैं उस को निकाल दिया दिन निकलतेही खुर्रम के भागने की खबर हुई तो किलेदारों ने पहरे के सिपाही क़ैद करदिये और रतनजी १९३ के पास खुर्रम के भाग जाने की अर्जी भेजी रावराजा रतनजी १९३ नैं वह अर्जी तो दिल्ली को रवानैं करी और आप बुरहानपुर जाकर माधवसिंहजी और हरिसिंहजी को नजर क़ैद कर केशवदासजी किलेदार मुकर्रिर किये जब खुर्रम के भागने की खबर सुन कर खुर्रम के निकाल देणे वाले की तलाश

करनें वास्ते वेही सय्यद जो खुर्रम को पकड
ने आये थे भेजे और उन्हों नें दर्याफ्त कर के
हार का दासजी का मारणा विचारा तो लडाई हो
ने में सैयद और हारका दासजी दोनो ही मारे
गये जब इस बात सें गुस्से में आकर बादशाह
की तर्फ सें बूंदी पर हमला करणे वास्ते अजमेर
का सूबेदार अमानतखां आया तो उस की फौज
में अखैराजजी के वंश के दयालजी के बेटे भूप·
तिजी थे उन्हों नें बूंदी पर लडनें सें इनकार कि·
या और भी कई उस फौज के रजपूत इसी बात
में शामिल हुवे तो अमानत खां अजमेर को च·
लागया जब बादशाह महावतखां की क़ैद में
था उस वक्त महावतखां के पास गोपीनाथजी
१८४ के बेटे स्यामसिंहजी और लाखेरी वाले
केशोदासजी के बेटे स्यामसिंहजी थे उन्हों ने महा·
वतखां के इशारे सें बादशाह की बेगमों के
गहणे लूटलिये थे जब बादशाह क़ैद सें छूटा
तो गोपीनाथजी १८४ के बेटे तो किसी रीत सें
मारडाले और केशोदासजी के बेटे के वास्ते जो

भागकर लाखेरी मैं आघुसेथे रत्नजी १९३ को लिख भेजा कि स्यामसिंहजी को जरूर मारडालना रत्नजी १९३ नैं यह बात बूँदी मैं शत्रुशालजी १९५ को लिखी तो इन्हों नैं स्यामसिंहजी मारडाले इसबात परबादशाहराजी होगया संवत १६८४ मैं जहाँगीरमरगया और खुर्रम शाहजहाँ के खिताब मैं तख्त पर बैठा जब रत्नजी १९३ बूँदी मैं पधारे माधवसिंहजी १९४।२ के वास्ते खजूरी १ अरंडखेडा २ केथून ३ आवाँ ४ कनवास ५ मधुकरगाढ ६ डीगोद ७ ये परगने सिवाय दिये और माधवसिंहजी के माताजी भी कोटे मैं पधार गयेथे इस सैं नानता वग़ैरह ५ गाँव जो माधवसिंहजी १९४।२ के माताजी की जागीर के थे सो भी उन के परलोक होनैं पीछे माधवसिंहजी १९४।२ के नीचे आगये ऐसैं हरिजी १९४।३ को सारसलामक वग़ैरह ७ गाँव और दिये जगन्नाथसिंहजी को १९४।४ बालाहेडा वगैरह गाँवदिये गोपीनाथजी १९४ के बेटे इंद्रशालजी कों अणघोरा १ ढीपरी २

ककरावदा ३ ये जागीर मैं दिये और इंद्रगढ नाम शहर उन्होंनैं अपनैं नाम सैं बसाया और इंद्रशालजी के छोटे पोते अमरजी नैं गौडों कौं मार कर खातोली मैं कब्जा कर लिया और इंद्रशालजी के छोटे बेटे अणदसिंहजी को इन के मामाजी नै अपना मुल्क नीबोल्ला दे दिया और रत्नजी १९३ नै बैरीशालजी कौं बलवण १ आमथूण २ वगैरह जागीर मैं बख़्शे और मुहकमसिंहजी को करवर महासिंहजी को जजावर और राजसिंहजी को हरिगढ बख़्शा जब कि शाहजहां नैं हरिजी बुलाये और रत्नजी ने नहीं भेजे तब तो इन के वास्ते नये दिये हुये ७ परगने उतार लिये फिर बादशाह के हुक्म सैं रत्नजी १९३ बुरहानपुर को पधारे उस वक्त शत्रुशालजी १९५ के बेटे भावसिंहजी १९६ साथ थे उहां बहुत से मुल्क बादशाह के कब्जे मैं करे और संवत १६८८ मैं गोदावरी नदी के किनारे स्वर्ग को पधारे इनौं नैं नोढाण १ रत्नदोलत नाम दरीखाना २ रत्ननिवास ३ रत्नमहल ४ जिस कों नारीकुंजर भी

कहते हैं रत्नमंदिर ५ जिस कों खरबूजा महल भी कहते हैं जनाना मैं रसोई ६ रत्नमंडप ७ और शहर के चौतर्फ कोट बुर्ज वग़ैरह बणाये और बाग १ रत्नबाग २ ये दो बाग बणाये ये सब हाल मौजूद हैं रत्नजी १९३ के पीछे २५ वर्ष की उमर मैं उन के पोते शत्रुशालजी १९५ गद्दी पर बिराजे जिन को छत्रशालजी भी कहते हैं उन के भावसिंहजी १९६।१ भीमसिंहजी १९६।२ भारतसिंहजी १९६।३ भगवंतसिंहजी १९६।४ भूपतिसिंहजी १९६।५ भूपालसिंहजी १९६।६ और ईश्वरीसिंहजी १९६।७ ये सात महाराजकुमार हुवे इंद्रसालजी के इंद्रसालोत वैरीशालजी के वैरीसालोत मुहकमसिंहजी के मुहकमसिंहोत महासिंहजी के महासिंहोत कहलाये राजसिंहजी का वंश ४ चार पीढी सैं पीछे नहीं रहा बाकी भाइयों के बेटा नहीं हुवा छत्रशालजी १९५ के वक्तमैं केशव नाम सोमाणी जात के महाजन को जिसनै रत्नजी १९३ के स्वर्गवास पीछें कहतसाली मैं बुरहानपुर मैं जो रत्नजी १९३

की फौजथी उस की बडी निगहवानी करी और अच्छी तरह से फौज कों बूंदीमैं ले आयाथा दलथंभण की पदवी मिली ये जब दिल्लीमैं शाहजहां के पासगये शाहजहांने इन को वह शिवप्रसाद हाथी जोरलजी १९३ ने बादशाह की नजरकियाथा घोडे सुद्धां दिया उन दिनों मैं दखण मैं मुसलमान और मरहटों ने लूट मार मचारक्खी थी उन को मारणे वास्ते १०००० फौजके साथ छत्रशालजी भेजे इन्हों ने उन को मार भगाया उन का सरदार जहांनखां कीलागढ मैं जा घुसाथा उस्के ३ बेटे तो मार लिये और वह छिपकर भागगया उन की लूट शत्रुशालजी १९५ के हाथ आई फत्त तोपैं बादशाहने ली जब ये दिल्ली मैं आये बादशाह बहुत राजी हुवा उस वक्त शत्रुशालजी १९५ ने अर्ज करी कि यह फत्तह मेरे काका हरीजी की बहादुरी सैं हुई है जो वे नहीं होते तो जीतना मुश्किलथा अबयह अर्ज है कि जो पहले दिनों मैं इन्हों ने बेअदबी करी थी सो माफ होय बादशाह ने राजी होकर हरि-

जी कौं गूंगोर का पट्टा दिया इस सैं पीछे शत्रुशालजी २९५ बूंदी पधारकर उदयपुर के राणा जी की बहण सैं व्याह करने पधारे वहां ७०० हाथी और एक एक हाथी के साथ खासा पोशाख बख्शी इन दिनौं मैं वरसिंह नाम बुंदेलखंड का रहणे वाला जो जात मैं किसीरीत कमथा और शाहजहां की मिहरवानी सैं जोर पकड बैठा था उस नैं अपनी लडकी का व्याह भावसिंहजी २९६ सैं करने वास्ते बूंदी को वकील भेजा जब लालच देने सैं भी यह छत्रशालजी २९५ नै नहीं मानी तो वकील पीछे गये बरसिंह इस बात सैं बूंदीपर चढ आया और लडाई मैं मारा गया इन दिनौं मैं शाहजहां काबुल पर चढा था उस वक्त अटक सैं पार उतरनैं मैं सब हिंदुस्तानी राजाओंनैं नाह करी परंतु माधवसिंहजी बादशाह के साथ अटक के पार चलेगये जीत होजाने पीछे बादशाह नै खुश होकर बारां २ मऊ २ ये दो परगने जो बूंदी के नीचे थे माधवसिंहजी को देदिये कोटा पहली इन के पास जागी

रमैंहीथा बादशाहनैं इन को राव पदवी देकर जुदाराजा बणादिये कितनेक दिनौं पीछे छत्रशालजी १९५ शाहजहां की तर्फसैं उस के बेटे औरंगजेब के साथ दखवण मैं पधारेथे वहां उन की वहादुरी सैं नासिक १ त्र्यंबक २ विदर ३ कल्याणी ४ और धामनी ५ गोलकुंडा ६ के किलेसरहुवे बादशाह ने खुश होकर टौंक १ मालपुरा २ केकडी ३ हथणीगढ ४ हिंगलाजगढ ५ केथोली ६ पानगढ ७ भैंसोद ८ ये परगने दिये परंतु बारांमऊ जो माधवसिंहजी को दिवादियेथे नहीं दिवाये जबकि शाहजहां ने औरंगजेब सैं दाराशिकोह की लडाई के वक्त छत्रशालजी १९५ बुलाये उस वक्त सैं पहलां हीं बारां १ मऊ २ के परगने इन को लिख दियेथे इनौं ने दोनौं परगनौं पर अपना कब्जा करलिया और बादशाह के हुक्म सैं दिल्ली जाते वक्त इनौं ने भावसिंहजी १९६ को राज देदियाथा और यह अच्छी तरह सैं जान लियाथा कि अब इस लडाई मैं नहीं बचैंगे बादशाह ने बडी मिहर्बानी

करी उसवक्त आगर १ सागर २ छबडा ३ वग़ैरह परगने और दिये और हफ्त हजारी का मुनसब देकर औरंगजेब सें लडने को भेजे इसलडाई मैं धौलपुर मैं बडी बहादुरी सें संवत् १७१५ मैं काम आये उन के अबतक वहां चौंतरे मौजूद हैं धौलपुर के लोग उन को रण के चौंतरे कहते हैं इनौं नें पाटण मैं केशोरायजी का मंदिर १ बूंदी के चौगान मैं हर्षदादेवी का मंदिर २ चौगान दरवाजा ३ और मींडकदरा ४ ये शैहर के दरवाजे छत्रमहल ४ बणाये और भी सहर के पास बाग और बूंदी के पास तालाब वग़ैरह बनाये इन के पीछे भावसिंहजी ३५ वर्ष की उमर मैं गद्दी विराजे इन के महाराजकुमार नहीं थे इस वास्ते अपने छोटे भाई भीमसिंहजी। १९६।२ के बेटे कृस्नसिंहजी १९७ गोद लिये भीमसिंहजी १९६।२ कें कृस्नसिंहजी सें सिवाय कोई बेटे नहीं थे बाकी भारत्तसिंहजी वग़ैरह के बेटे नहीं हुवे जो कि शाहजहां की तर्फ सें छत्रसालजी १९६ औरंगजेब से लडे थे और उसी लडाई

मैं काम आये थे और छत्रशालजी १२५ के चौथे महाराजकुमार भगवंतसिंहजी १२६।४ पहली सैं हीं औरंगजेब की तर्फ थे इस वास्ते जब भावसिंहजी दिल्ली में पधारे तब तख़्त औरंगजेब के हाथ आगया था उसी दुश्मनी सें भावसिंहजी १२६ का ढाई हजारी मुनसब रहणे दिया बारांमऊ और टौंक मालपुरा वग़ैरह परगने जो दखण की फतह सें शाहजहां नें दिये थे सब उतार कर भगवंतसिंहजी १२६।४ कों दे दिये और ढाई हजार का मुनसब देकर राव खिताब के साथ जुदा राजा मुकर्रिर कर दिये जब संबत ७२२ में शाहजहां के मरनें पीछे औरंगजेब तख्त पर बैठा और सब राजा बुलाये और यह कहा कि तुम लोग बेटी देकर दूर होजाते हो अब यह ठीक है कि सब हमारे शामिल बैठ कर खाना खाओ कि तुम भी हमारे दीन को मंजूर करो और तुम को दूणा राज दिया जायगा तब तो सब घबराये और मनसूबा करने लगे भावसिंहजी १२६ नें कहा कि एक दिन मरणा जरूर है फेर धर्म कों

छोड कर जीणा ठीक नहीं तब जयसिंहजी जयपुर वालों नें बादशाह के आगे एकांत में नर्मी के साथ अर्ज करी कि हम लोग जो मुसलमान हो जाँयगे तो बूँदी और उदयपुर के राजा जो हालतक बादशाह को बेटी नहीं देते हैं हम को भी नहीं देंगे न हमारी लेंगे और मुसलमान लोग भी हमसें नफरत करेंगे फेर हमारे बेटा बेटी कुमारे रहेंगे इस सें इस वक्त आप बूँदी वाले भावसिंहजी २२६ सें मंजूर करावो तो हम भी मंजूर करलेंगे तब तो बादशाह ने गुस्से में आकर यह हुक्म और दिया कि जहाँ जहाँ देवतों के मंदिर हैं सब फोडे जावें और उनके मसाले सें मस्जिदें बणवाई जावें जब यह भावसिंहजी २२६ नें सुनी तो महाराजकुमार कृस्नसिंहजी २२७ के नाम बूँदी में यह हुक्म भेजा कि हम को तो यह बादशाह मुसलमान बनाया चाहता है इस वास्ते हम नें तो यहाँ मरणा पडेगा परंतु बादशाह के भेजे हुवे आदमी मंदिरों को फोडनें वास्ते आवें तो जब तक तुम जीवते रहो तब तक यह

काम नहीं होने पावे इन्हीं दिनों मैं बादशाह के भेजे हुवे ५००० आदमियों नै पाटण मैं केशवरायजी का मंदिर फोडना शुरू किया परंतु मंदिर के ऊपर का सोने का कलसही उतार ने पाये थे इतने मैं कृस्नसिंहजी १९७ नैं बहादुरी सैं उन को मार भगाया और उन के डेरे लूटलिये इनहीं दिनों मैं मक मैं भगवंत सिंहजी १९६।४ मरगये उन की मातानैं बूंदी सैं कृस्नसिंहजी बुलाकर भगवंत सिंहजी की गद्दी पर बिठादिये जब यह भावसिंहजी १९६ नै सुनी तो बूंदी मैं आप के कामदारों के नाम लिख भेजा कि अब कृस्नसिंहजी को बूंदी मैं मत आणे देणा और उस का बेटा अनिरुद्धसिंह हमारी तर्फ से गोद लेलेणा जब बादशाह ने केशवरायजी का मंदिर फोडने पर आप के आदमियों का यह हाल सुना तो गुस्से मैं आकर भावसिंहजी १९६ मैं कहा कि कृस्नसिंहजी को पकड कर यहां लाओ इनौं ने अर्ज करी कि वह तो हम सैं बदल कर भगवंत सिंहजी के मरणे पीछे उन की जगह बैठ-

गया तब तो बादशाह नैं कहा कि तुमारे मकबारौं जो परगनैं थे उन पर तुम कब्जा कर लो तब तो उनौं ने खुशी सैं वहाँ कब्जा कर लिया जब कि संवत ७२६ मैं भादौं सुदि १० के दिन बादशाह नैं यह कहा कि तुम हिंदू लोग तुमारा धर्म नहीं छोडते हो इस का फल अच्छा नहीं होगा जो काल्ह के दिन तुमारे मूर्त्तौं को बाहर निकालते हैं सो कोई निकालनैं नहीं पावे जब रात के वक्त सब राजा मनसूबा करने लगे कि काल्ह क्या करना चाहिये तब भावसिंहजी १२६ नैं कहा कि एक दिन मरणा तो जरूर है तो धर्म के वास्ते ही मरणा ठीक है जब एकादशी के दिन नारायण की मूर्त्ति बडी धूम धाम सैं पधराई गई उस वक्त भावसिंहजी १२६ आप की फौज के साथ निगहबानी मैं रहे जब बादशाह नैं इन के ऊपर फौज भेजी तो ये भी बहादुरी सैं लडनैं को तयार होगये फक्त आप की फौज को यह हुकम दिया कि पहलाँ बादशाह की फौज का वार होणे दो फेर जैसी बणे तैसी बहा·

दुरी करणी परंतु औरंगजेब की मानैं जब औरंगजेब बहुतसा समझाया तो फौज पीछी हटली परंतु इन पर बहुत नाराज रहा संवत १७२५ मैं औरंगजेब नैं बीकानेर सैं वहाँ के राजा कर्णसिंहजी बुलाये थे जो कि शाहजहाँ के साथ काबुल की लड़ाई के वक्त कर्णसिंहजी के पिता बहुत बीमार थे इसवास्ते बादशाह का साथ छोड़कर कर्णसिंहजी बीकानेर चले गये थे इस बात सैं औरंगजेब के दिल मैं दुश्मनी थी और कर्णसिंहजी के दिल मैं भी इसका डर था सो कर्णसिंहजी नैं शहर सैं बाहर ही डेरा किया भावसिंहजी १९६ की बहण कर्णसिंहजी को ब्याहे थे जब बादशाह नैं पिछले कुसूर की सजा देने वास्ते कर्णसिंहजी पर फौज भेजी तो ये बहुत डरे परंतु उसी वक्त आप की फौज को लेकर मदद पर भावसिंहजी आपहुंचे बीकानेर वालों के बड़ी खुसी हुई उसी वक्त बादशाह सैं कामदारों ने अर्ज करी कि हाल तो भाव सिंहजी ही मिले हैं परंतु आपसैं धर्म के मुकद्दमे मे सब हिंदू नाराज हैं

लडाई शुरु होने की देर है कि सब हिंदू इन में जा मिलेंगे तब तो बादशाह नें समझ कर फौज पीछी हटाली इस सें पीछे भावसिंहजी १९६ बूंदी मैं पधारे संबत् १७३४ मैं औरंगजेब नें अपणे बेटे को दखण की तर्फ भेजा जो कि केशवरायजी का मंदिर तोडने पर कृस्नसिंहजी नैं बादशाह की फौज लूटी थी इस वास्ते बादशाह उन सैं नाराज था अब अपने बेटे को यह कह दिया कि इस तर्फ तुम कृस्नसिंहजी को साथ लेकर कोई बहाने सें मारडालना शाहजादा कृस्नसिंहजी को जब साथ लेकर उज्जैन मैं पहुंचा उसी वक्त किसी काम के बहाने सें बुलाकर दगा सैं मरवाडाले इस खबर को सुन कर इन के उमराओं नै जो दरवाजे पर थे उन के मारनेवालों को मारडाला भावसिंहजी १९६ की बहण कर्मवतीजी नाम जोधपुर के राजा जसवंतसिंहजी को व्याहे थे बादशाह जसवंतसिंहजी पर नाराज था सो इन सैं जोधपुर उतार लिया था और इन की फौज वग़ैरह दिल्ली मैं ही रक्खे और

ये काबुल की तर्फ लडाई मैं भेजदिये थे सो वहाँही मरे और दिल्ली मैं एक तो इन की राणीजी गर्भ मैं थे दूसरे कर्मवतीजी थे जब राणीजी के दिल्ली मैं बेटा हुवा तब बादशाह नैं कहला भेजा कि यह लडका हमारे हवाले करदिया चाहिये कर्मवतीजी ने वह लडका किसी तरह सैं मारवाड मैं भेज दिया जब बादशाह नैं रणवास मैं ढूंढाया तो लडका नहीं पाया तब यह हुक्म दिया कि राणियौं को हीं पकडलावो तब तो भावसिंहजी २९६ के बहण सब शस्त्र लेकर मरदाना पोशाक पहन कर हाथी पर सवार होकर फौज के साथ बाहर निकले और बहादुरी मैं बहुतसी बादशाह की फौज को मारकर संबत १७३५ मैं काम आये इन दिनों मैं भावसिंहजी २९६ दखण मैं थे औरंगाबाद के पास इनौं नैं भावपुरा नाम गाँव बसाया था वहाँ १० वर्ष रहकर संबत १७३८ मैं बैशाख बदि ८ के दिन इस संसार सैं कूँच फर्माया जब यह बात बूँदी मैं सुनी तो वहाँ १५ वर्ष की उमर मैं अनिरुद्धसिंहजी २९८

ये इन को बालक समझकर बैरीशालोत दुर्जनशालजी नैं बलवण सें आकर राज करने की उमेद पर बूंदी घेरली परंतु राणियों नैं अनिरुद्धसिंहजी १६८ को बूंदी के मालिक मान कर फौज को लड़ाई का हुक्म दिया दो दिन लड़ाई ककै दुर्जनशालजी भाग गये भावसिंहजी १६६ नैं बूंदी मैं मोतीमहल और रत्नबाग के पास एक बाग बणाया और फूल सागर सें उत्तर की तर्फ बाग चाहर और फंवारे बणाये भावसिंहजी बहुत अच्छे स्वभाव वाले थे और न्याय करने मैं बहुत ही अच्छे थे आज तक सबेरे महाजन लोक उन का नाम लेते हैं इन के पीछे संवत १७३८ मैं अनिरुद्धसिंहजी १६८ गद्दी पर बिराजे इन के बुधसिंहजी १६९।१ जोधसिंहजी १६९।२ अमरसिंहजी १६९।३ और बिजयसिंहजी १६९।४ ये च्यार ४ महाराजकुमार हुवे बादशाह नैं लालच मैं आकर बडोद १ और खैराबाद २ ये दो परगनैं इन सें उतार लिये बाकी राज इन के नीचे रहा जब बादशाह दखण की लड़ाई पर

औरंगाबाद को जाताथा उस वक्त रस्ते मैं अनिरुद्धसिंहजी २९८ उससे मिले और साथ हीरहे वहां बादशाह अपने बेटे कों और अनिरुद्धसिंहजी २९८ कौं छोडकर आप दिल्ली को आगया इहां अनिरुद्धसिंहजी २९८ नैं इस लडाई मैं मरहटों को जीता ऐसे तीन बार लडाई मैं फतह पाई चौथीबार बीजापुर भागनगर के मरहटे और मुसलमान औरंगजेब के बेटे आजम की बेगम को पकडले आये इस लडाई मैं इकले अनिरुद्धसिंहजी २९८ नैं ऐसी बहादुरी करी कि दुश्मनों को भगाकर बेगम को पीछे लाये इस लडाई मैं अनिरुद्धसिंहजी २९८ के बहुत बहादुर मारेगये और मरहटों मैं आनंद १ संतू २ नारू ३ नत्थेराव ४ ईश्वर ५ वग़ैरह मारेगये और मुसलमान लोग रत्नजी २९३ के कौल माफिक हाडों के निशानों के सामनें नहीं रहे इस बहादुरी सें आजम बहुत राजी हुवा और औरंगजेब सें अर्ज करकें बारां १ मऊ २ खैराबाद ३ चाचुरनी ४ खेडी ५ बडोद ६ ये परगने और सिरोपा·

व गहणा हाथी घोडा वग़ैरह दिलवाये अनिरुद्धसिंहजी २९८ की फौज मैं एकतो सावंतका हाडा भजनेरी का जागीरदार दुर्जनसिंहजी और कायथ विश्वनाथ ये दो आदमी हरामखोरी के कारण सैं मरहटों मैं मिलरहे थे जब इन का भेद खुलगया तो अनिरुद्धसिंहजी २९८ नैं बूंदी को लिख भेजा कि इन दोनों आदमियों की जागीर तो खालसै करलो और इन को बूंदी मैं मत आने दो जब ये दोनों फौज मैं सैं भाग कर थोड़े दिन छिपे हुवे बूंदी मैं रहे इस सैं पीछे बैरीसालोत दुरजनशालजी कों बहका कर बूंदी पर चढालाये इहां तक कि दुरजनशालजी नैं संवत १७४० मैं बूंदी पर कब्जा कर लिया और बदमिजाजी सैं पहली के कामदार क़ैदकरदिये और रणवास पाटण भेजदिया जब यह बात अनिरुद्धसिंहजी २९८ ने सुनी तो बादशाह के आगे कही बादशाह तो इन के ऊपरराजीहीथा बहुत सी फौज इन के साथ भेजी इनों नैं आकर बूंदी घेरली और दुर्जनशालजी सैं कुछभी नहीं बनी

छिप के दुरजनसिंह सावंत के हाडे की साथ भाग गये विश्वनाथ कायथ क़ैद मैं आगया दुरजनशालजी नैं भागकर बूंदी के मुल्क मैं लूट मचादी लाखेरी का कोटवाल मारडाला भीलौं सैं मिलकर लूट मचादी अनिरुद्धसिंहजी १४८ नैं कुसला नाम सिलहदार बहुतसे सवारौं के साथ भेजा और यह फर्मादिया कि दुरजनशालजी कहीं ठहरनैं नहीं पावैं यहां तक कि दुरजनशालजी इसी दौड धूप मैं मरगये इस सैं पीछे दुरजनशालजी के छोटे भाई फतहसिंहजी और जैतसिंहजी दोनौं अनिरुद्धसिंहजी १४८ के क़दमौं मैं आय पडे और कुसूर माफ कराया अनिरुद्धसिंहजी १४८ नैं फतहसिंहजी कौं रहटोदा और जैतसिंहजी को खेडा १ और दोलाड़ा २ ये गाँव बखशे इन दिनौं मैं स्योगिरी और सिनसिनी वाले जाटौं नैं दंगा मचादिया यह पुकार जब औरंगजेब के पास पहुँची तो उसने अपना पोता फौज के साथ भेजा और अनिरुद्धसिंहजी १४८ को भी इस लडाई पर बुलाया कि तुम जल्दी शामिल हो

इनौं नैं आप की फौज तयार करी परंतु फौज के लोगौं नैं यह अर्ज करी कि गणगौर का त्योहार नजदीक है इससैं गणगौर देखकर चलैंगे और जल्दी चलकर बादशाह की फौज के शामिल हो जावैंगे जब अनिरुद्धसिंहजी नैं भी यही करी और जल्दी करने सैं भी बादशाह की फौज मैं नहीं पहुंचसके तब तो सुन कर बादशाहकूं गुस्सा आगया इस तर्फ जाट लोगौं का जोर फिर भी बढ़गया जब अनिरुद्धसिंहजी २९८ लड़ाई मैं पहुंचे तो वहां जाटौं का जोर देख कर फिर पीछे बूंदी मैं दाखिल होगये और कोटेवाले बहुत अच्छे लड़े तब तो औरंगजेबनैं नाराज हो कर यह लिखभेजा कि तुम काबुल के सूबे पर जरूर जाओ जोकि रावराजा सुर्जनजी २९१ के लिखाये हुवे कौल के माफिक अटक के पार उतरना ठीक न था परंतु अनिरुद्धसिंहजी २९८ नैं लाचार होकर यह भी कबूल किया और काबुल की तर्फ पधारे वहां ६ वर्ष रहकर संवत १७५२ मैं इस संसार को छोड़ा इनौं नैं अनिरुद्धमहल और महलौं के

ऊपर छत्रियाँ और शहर के खुरे बणाये और कापरण मैं महल बणाया इन के धाभाई देवानैं बूँदी के पास देवपुरा गाँव बसाया वहाँही एक बावडी १ बाग २ महल ३ और बडी छत्री ४ बणाये और दूसरी छत्री किले मैं बणवाई अनिरुद्धसिंहजी १९८ के पीछे बुधसिंहजी १९९ इस १० वर्ष की उमर मैं गद्दी पर विराजे इन के देवसिंहजी २०० जिन को धोंकलसिंहजी २००।१ भी कहते हैं भाँवतसिंहजी २००।२ जिन को लालसिंहजी २००।२ भी कहते हैं पद्मसिंहजी २००।३ उम्मेदसिंहजी २००।४ चंद्रसिंहजी २००।५ दीपसिंहजी २००।६ ये छः ६ महाराजकुमार हुवे बाकी भाइयों का वंश नहीं चला संवत् १७५३ मैं इन को औरंगजेब नैं बुला कर अपने बेटे शाह आलिम के पास रक्खे इनों नैं अपनी नेकचाल बहादुरी वगैरह सैं शाह आलम को राजी कर लिया शाह आलम नैं औरंगजेब सैं अर्ज करकें टोंक १. का परगना इन को दिवा दिया इन दिनों मैं औरंगजेब नैं शाह आलम को काबुल की तर्फ

भेजा वहां बुधसिंहजी २९६ साथ थे लडाई में अनूपसिंहजी गुमानसिंहजी वग़ैरह सरदार हाडों के काम आये जीत शाह आलम की हुई एक दिन बुधसिंहजी २९६ शाह आलम के दरीखाने में पधारते थे दो २ डोढी के पीछे तीसरी डोढी में शाह आलम के एक मुसलमान सरदार नें इन सें बुरी जबान कही इन्हों नें कटारी सें उस को मारडाला जब यह बात शाह आलम नें सुनी तो सोच विचार कर यह कहा कि इस में बुधसिंहजी २९६ का कुछ कुसूर नहीं इन दिनों में औरंगजेब दखन के औरंगाबाद में मरगया तब इस तर्फ बादशाह का छोटा बेटा आजम तख्त पर बैठगया और उसी की तर्फ कोटा वग़ैरह के राजा शामिल थे उसनें बूंदी में कहला भेजा कि जो तुम बूंदी का राज रक्खा चाहते हो तो फौज लेकर जल्द हमारे शामिल होजावो जब बूंदी सें यह जवाब गया कि यहां तो बूंदी की निगहबानी के लायक ही फौज है और बुधसिंहजी २९६ काबुल की तर्फ हैं

तब तो आजम नैं कोटा के राव रामसिंहजीसैं कहा कि बूंदी तुम को बख्शी इनौं नैं भी सलाम करी जब औरंगजेब के मरनैं की खबर काबुल मैं शाह आलम नैं जिस को मुअज्जम और बहादुरशाह भी कहते हैं सुनी तब तो जल्दी सैं फौज लेकर आया परंतु इस की तर्फ एक बुधसिंहजी १९९ ही थे शाह आलम नैं बुधसिंहजी १९९ को फौज के सरदार बणाकर भेजे जाजव मैं बडी लडाई हुई बुधसिंहजी १९९ के पास तो थोडीही फौजथी दूसरी तर्फ दूणी सैं भी बहुत जियादाथी परंतु बुधसिंहजी १९९ नैं बहादुरी सैं फत्तह पाई और आजम को उस के बेटे सुद्धां मारलिया इस बहादुरी सैं खुश होकर शाह आलम नैं इन को महाराव राजा पदवी और पंजहजारी ५००० का मुनसब और बहुतसा गहणा और कोटा १ गागरून २ शाहाबाद ३ सेरगढ ४ बडोद ५ चेचत ६ छबडा ७ गूगोर ८ पचपहाड ९ पिडावा १० डग ११ वगैरह चौवन ५४ परग

ने दिये जब शाह आलम दखण की तर्फ गया उस वक्त बुधसिंहजी १८६ तो बादशाह के साथ थे उनौं नैं बूंदी हुक्म भेजा कि बादशाह नैं कोटा हम को दिया है सो कोटे पर फौज भेजकर खाली करालो जब यह खबर कोटे मैं पहुंची तो वहां के राव भीमसिंहजी नैं बूंदी कहला भेजा कि सिवाय कोटे के और मुल्क मैं कब्जा करलो और कोटा हमारे पास रहने दो जब यह बात्त बूंदी के सरदारों नैं नहीं मानी और फौज लेकर चढगये तब तो भीमसिंहजी भी लडने को तयार हुवे ऐसे लडे कि बूंदी की फौज हार कर पीछी आई कित्तनेक दिन पीछे बूंदी की फौज फेर चढी परंतु हार कर पीछी आगई उस मैं मुहकमसिंहोत जोगीरामजी जो फौज के सरदार थे मारे गये जब दखण सैं शाह आलम दिल्ली की तर्फ रवाने हुवा तो रस्ते मैं मनोहरपुर सैं बुधसिंहजी १८६ बूंदी पधारे तब जैतसागर को देखकर आप के भाई जोधसिंहजी की बात याद कर के बहुत उदास हुये

वह बात इस तरह है कि जिन दिनौं मैं बुधसिंहजी २९९ काबुल की तर्फ थे और बूंदी मैं गणगोर के दिन जोधसिंहजी नाव मैं विराज कर कितनेक सरदारों के साथ गणगोर का दरीखाना करके जैत सागर मैं सैर करते थे उस वक्त रज का हाथी जो सवारी के हाथियों मैं मैं दूर खडा था और थोडा मस्त भी था जोधसिंहजी के हुक्म से महावत ने तालाब के बीच मैं चलाया उसने तालाब मैं घुसकर नाव उलट दी उस वक्त जोधसिंहजी का स्वर्गवास हुवा कितनेक अर्से के पीछे बहादुर शाह के मरने की खबर पहुंची इस खबर से बुधसिंहजी २९९ के मन पर ऐसा फिकर हुवा कि रियासत के जरूरी कामों से भी मन उखड गया आगे जो जो काम बेखबरी के इन से हुवे इन की मुख्य जड यही फिकर है जब दिल्ली के तख्त पर फर्रुखसियर बैठ गया था इसनें तख्त पर बैठकर सब राजा बुलाये बुधसिंहजी २९९ बूंदी मैं ही विराजे रहे तब तो रूपनगर के राजा राजसिंह

जीनैं जो बुधसिंहजी १९९ को आपकी बेटी दियाचाहतेथे और बुधसिंहजी १९९ नैं यह बात मंजूर नहीं करीथी और कुछ करडी बातभी कहीथी बादशाह के आगे चुगली खाई कि जहांपनाह बूंदीवाले तो आप के हुक्म सैं बाहर होकर जोधपुर वालों सैं मिलकर दंगा किया चाहते हैं इस वास्ते यह ठीक है कि कोटावाले भीमसिंहजी को बुलाकर बूंदी उन को बख्शदी जावे जब बादशाह ने भीमसिंहजी को बुलाकर महारावपदवी देकर यह कहा कि बूंदी तुम को दी बुधसिंहजी १९९ को वहांसे निकालदो भीमसिंहजीने कोटे में आकर फौज तयार करी जब जयपुर के महाराज जयसिंहजी नैं बूंदी होकर बादशाह के हुक्म से दखण की तर्फ कूंच किया तो बुधसिंहजी उन को पहुंचाने पधारे जब बूंदी को पीछे पधारते वक्त बुधसिंहजी १९९ ने नमाणा नाम गांव में जो बुधसिंहजी १९९ के नानाजी की जगह थी मुकाम किया पीछे सैं भीमसिं-

हजी नैं संवत् १७७० मैं बूंदी घेरली गजमुखजी पुरोहित्त नैं बूंदी मैं घुस कर गोला चलाणा शुरू किया परंतु जब भीमसिंहजी नै यह कहा कि तुम पुरोहित हो तुमारी तर्फ सैं तो दोनौं तर्फ के बराबर हैं तब तोलालच मैं आकर भीमसिंहजी के पास चले गये भीमसिंहजी नै इन को क़ैद करके बूंदी मैं कब्जा करलिया जोगीरामजी के बेटे सालिमसिंहजी नै अपनी जागीर का करवर के किले मैं आकर बंदोबस्त करलिया इन दिनौं मैं उणियारे के मालिक नरूके संग्रामसिंहजी नैं कुछ मुल्क दाबलिया और बुधसिंहजी के राणीजी साहब अपणे २ पीहर को पधारे बाकी सारे रणवास के नौकर चाकरौं का बेघूं के ठाकुर देवसिंहजी नै गुजारा चलाया ये भी बुधसिंहजी १८८ के साले थे भीमसिंहजी नै १८ अठारा दिन तक करवर पर लड़ाई करी परंतु करवर हाथ नहीं आई जब फर्रुखसियर को यह दर्याफ्त हुआ कि बुधसिंहजी सिर्फ बहादुरशा-

ह के फिकर के सबब सैं नहीं आसके थे और उन का कसूर नहीं तबतो फर्रुखसियर नै दिलावरखां के साथ फौज भेज कर बूंदी मैं संवत १७७२ मैं बुधसिंहजी १९९ का कब्जा करदिया परंतु मऊ बारां मैं भीमसिंहजी का ही कब्जा रहा जब बादशाह नै बुधसिंहजी १९९ बुलाये तब दिल्ली को पधारे इन के साथ ईडरगढ के महाराजा मेघसिंहजी के बेटे छित्तरसिंहजी और करवर वाले सालिमसिंहजी और पलोधी के जागीरदार जैतसिंहजी बलवण वाले अभयसिंहजी वगैरह साथ हुवे उसवक्त करवर मैं भीमसिंहजी की साथ लडाई की बहादुरी सैं राजी होकर बुधसिंहजी १९९ नै सालिमसिंहजी को नैणवा का परगना बख्शा बुधसिंहजी १९९ नैं दिल्ली मैं पहुंचकर कितनेक दिनों मैं फर्रुखसियर को राज़ी करलिया और बुधसिंहजी १९९ नैं आपकी तर्फ सैं बूंदी की कामदारी पर सालिमसिंहजी भेजे जब सैयदों नैं कोटे वाले भीमसिंह

जी और रूप नगर वाले राजसिंहजी और जोधपुर के अजितसिंहजी को मिलाकर फरुखसियर मारडाला और भीमसिंहजी के बहकाणे सैं सैयदों की फौज नैं बुधसिंहजी १९९ का डेरा घेरलिया तब बुधसिंहजी १९९ तो फौज को फाडकर आमेर मैं जयसिंहजी सैं आमिले इस तर्फ लडाई होती रही पीछे सैं भीमसिंहजी नैं कोटे मैं आकर फौज चढाकर बूंदी घेरली सालिमसिंहजी एक दिन लडाई करकै भागगये बूंदी मैं संवत् १७७६ मैं भीमसिंहजी का दूसरी बार कब्जा होगया जब कलीजखां की साथ लडाई मैं भीमसिंहजी मारेगये उस वक्त भीमसिंहजी की तर्फ सैं बूंदी का कामदार धाभाईया उसनैं बूंदी मैं बुधसिंहजी १९९ की दुहाई फेर कर अपणे थाणे बैठालिये सालिमसिंहजी जो बूंदी पर दंगा खडा करकै भागगये थे कैलाय सैं आकर फेर बूंदी के कामदार बणगये उस वक्त जयसिंहजी के बहण कछवाहीजी और बेघूं के चूंडाउ-

तजी और भणाय के राठोड़जी ये तीन ३ ही बुधसिंहजी १९९ के राणीजी थे राणावतजी पहली शांत होगये थे चूंडाउतजी के संवत १७८६ मैं आषाढवदि अमा ३० के दिन उम्मेदसिंहजी २०० का जन्म हुवा बुधसिंहजी १९९ कछवाहीजी पर नाराज थे चूंडाउतजी और राठोड़जी पर राजी थे इस वास्ते जयसिंहजी भी इन से नाराज होगये थे और मन मैं यह ठहराई कि इन के पास बूंदी का राज नहीं रहा चाहिये यह विचारकर सालिमसिंहजी मुहकमसिंहोत कों कहलाभेजा कि मैं तुमारे बेटे कूं बूंदी की गद्दी पर बिठलाहूं तब इन के छोटे बेटे दलेलसिंहजी नें मंजूर करी जब दलेलसिंहजी जयपुर मैं गये तो जयसिंहजी नें बराबर गद्दी पर बिठाकर यह कहा कि तुम अब से बूंदी के मालिक हो और अपणी बेटी दलेलसिंहजी को व्याहदी इसबात को सुणकर कई बुधसिंहजी १९९ के चाकर बाना महाजन जो जोधराज प्रधान का

भागजाथा १ सुखराम कायथ २ और उदयभान चौधरी ३ जगदीस नागर ब्राह्मण ४ भिंनू हाडा ५ भवान हाडा दुघारी का ६ सुभराम धाभाई ७ अलोद का जागीरदार महाराम ८ वग़ैरह दलेल सिंहजी में मिलगये जब दलेल सिंहजी ने आकर बूँदी में क़ब्ज़ा कर लिया तब बुधसिंहजी २६९ भी कामाखोह को जो जयपुर के इलाके में बुधसिंहजी २६९ के बिराजणे की जगह थी छोडकर बूँदी की तर्फ़ पधारे संवत् १७८६ में जब जयसिंहजी दलेलसिंहजी कूँ साथ लेकर मालवे की तर्फ़ रवाने हुवे और सालिमसिंहजी कूँ अच्छी तरह समझा गये कि बुधसिंहजी २६९ कूँ बूँदी में मत आणे देणा जब बुधसिंहजी २६९ कूँ पधारते सुणकर सालिमसिंहजी बूँदी की सरहद पर लडाई वास्ते ३००० फ़ौज भेजी तो बुधसिंहजी २६९ कुसथला में जो वैरीसालोत जैतसिंहजी के बेटे देवसिंहजी की जागीर का गाँव था दाखिल हुवे दोनों तर्फ़ सैं

लडाई सुरूहुई बुधसिंहजी १५९ का तो रियासत की तर्फ कुछ अच्छी तरह खयाल ही नहीं था बहादुरशाह के फिकर में मनउलझा ही रहता था इस लडाई में १०००० दश हजार फौज बुधसिंहजी १५९ की तर्फ थी १३००० तेरह हजार सालिमसिंहजी की तर्फ थी दोनों में १२०० बारा सौ मारे गये एक हजार घायल हुये सालिमसिंहजी की जीत हुई फौज भी बुधसिंहजी के पास १००० एक हजार ही रही थी बाकी सब सालिमसिंहजी सैं जा मिली अभयसिंहजी के बेटे नाथूसिंहजी पहलां हीं सालिमसिंहजी सैं जा मिले थे इससे उन के पास बलकम रहगई इस तर्फ जयसिंहजी नैं मालवे सैं आकर संवत् १७८७ मैं दलेलसिंहजी गद्दी पर बिठादिये और कुसथल १ पाँचोलास २ वगैरह २८ अठाईस गाँव बूंदी सैं लेकर आपके उमराओं को बाँटदिये बुधसिंहजी १५९ संवत १७८८ मैं बेगूँ मैं पधारे जब कछवाहीजी नै छलाख ६००००० रुपये दणा करके मआरग·

वजी बूंदी पर चढाये इन दिनौं मैं जयसिंहजी और दलेलसिंहजी जयपुर मैं थे संवत् १७८१ मैं दखणियौं नैं बूंदी घेरली लड़ाई होणे पीछैं सालिमसिंहजी कैद करदिये और बूंदी मैं बुधसिंहजी १८९ की दुहाई फिरवाई कछवाहीजी नैं बूंदी मैं आकर दखणियौं की बडी खातरी करी और मल्हारराव जी आप के धर्म भाई बणाये दखणी तो अपणे देश कूं गये जयसिंहजी नैं बूंदी मैं बुधसिंहजी १८९ का कब्जा सुण कर फेर २०००० बीस हजार फौज भेजी यहां सामना करणे वाला कोण था जल्दी ही दलेलसिंहजी का कब्जा होगया कछवाही राणीजी बूंदी सैं बेघूं पधारे सालिमसिंहजी दो लाख २००००० रुपये देणे करकै दखणियौं की क़ैद सैं छूटे दलेलसिंहजी नैं तो अपणे बाप के छुडाणे वास्ते रुपये नहीं दिये परंतु सालिमसिंहजी नैं अपणी जागीर नैणवां मैं आकर रुपये भेज दिये संबत् १७९६ मैं वैशाख बदि ३ के दिन बेघूं सैं ३ कोस पर बाघपुर गांव मैं बुधसिंहजी १८९

ने इस संसार कूँ छोडा जब तक बहादुर शाह का फिकर पैदा न हुवा तब तक तो ये बडे बहादुर अच्छे स्वभाव वाले और सब ही बातों मैं अच्छे थे बहादुर शाह के फिकर सैं इन का चित्त उखड गया इन नैं जैतगाढ मैं एक बाग १ एक महल २ दिल्ली पधारणे सैं पहली बणाये थे इनकी राणीजी साहब कछवाहीजी ने गणेश घाटी सैं उत्तर की तर्फ जयनिवास नाम गाँव बसाणा शुरू किया था बीच मैं उसके मंदिर बणा है इन के छोटे भाई जोधसिंहजी नैं बूँदी सैं पश्चिम की तर्फ १ कोस पर जोधसागर नाम तालाब और गाँव बाग महल मंदिर ये पाँच ५ बणाये इन के धावड गंगाराम नै शहर सैं पूर्व की तर्फ बाग १ बावडी १ बणाये राजसुखजी पुरोहित नै शहर सैं पश्चिम की तर्फ थोडी दूर पर दधिमत्ती माताजी का मंदिर बावडी और छत्री बणाये और चौगान दरवाजे के पास हवेली बणाई जो अब पुरोहितजी के महल कहलाते हैं और एक चाकर गंगाराम

ने मे लखा तालाब के नाले के पास महल बणाया बुधसिंहजी १५९ के पीछे संवत १७९६ मैं वैशाखसुदि १३ के दिन १० दस वर्ष की उमर मैं उमेदसिंहजी २०० गद्दीपर विराजे इन के अजितसिंहजी २००।१ बहादुरसिंहजी २००।२ सरदारसिंहजी २००।३ त्रिलोकसिंहजी २००।४ ये च्यार महाराजकुमार थे और शिवसिंहजी संग्रामसिंहजी देखवासजी के बेटे थे दीपसिंहजी के दीपसिंहोत कहलाये गद्दी पर बिराजते बक्त इनौं ने पिछली चाल के बमूजिब वल्लभसंप्रदाय के गोपीनाथजी गुसांई मंत्र के उपदेश वास्ते बुलाये तो उनने जयसिंहजी और दलेलसिंहजी के डरसैं मंजूर नहीं करी तब उम्मेदसिंहजी २०० के माता चूंडावतजी ने कोटे सैं साठोतरे नागर बेणीरामजी जो रामानुजमत के थे उन सैं यह कहलाभेजा कि आज कल्ह हमारे दिन अच्छे नहीं हैं आप यहां आकर उम्मेदसिंहजी २०० कूं

उपदेश करो तो आजसैं हम आप कूं गुरु मानैंगे यह सुणकर बेणीरामजी नें आप के बडे बेटे श्रीगोविंदजी भेजे उनौं नें उम्मेदसिंहजी २०० कूं उपदेश किया कितनेक दिनौं मैं उम्मेदसिंहजी २०० नें शस्त्रविद्या घोडासवारी का इल्म भलाई होशयारी वगैरह अच्छी बातौंसैं नौकर और दोस्त लोगौं कूं बहुत राजी किया एक हरदावत हाडा दौलतसिंह नें उम्मेदसिंहजी २००।२ और दीपसिंहजी २००।२ इन दोनौं भाइयौं मैं दंगा उठाणा चाहाथा परंतु उम्मेदसिंहजी २०० की माता चूंडावतजी नें खबर पाकर उस कूं निकाल दिया इनदिनौं मैं जयसिंहजी नें राणा जगतसिंहजी के नाम लिख भेजा कि आप के भाइयौं मैं बेगूं के चूंडावत के यहां उम्मेदसिंहजी २०० रहते हैं सो निकलवा दिये चाहिये राणाजी नैं जयसिंहजी के डर सैं बेगूं कूं लिख भेजा कि तुम उम्मेदसिंहजी २०० कूं तुमारे मुल्क सैं निकाल दो तब उम्मेदसिंहजी २०० और दीपसिंहजी २००।२

उहाँ सैं कोटा मैं पधारे कोटे के महाराव दुरजनशालजी नै जयसिंहजी के डर सैं इन कूँ कोटे मैं तो नहीं रक्खा और मधुकरगढ मैं रक्खा जब इन दिनों मैं जयसिंहजी का देहांत होगया तो इन कूँ कोटा मैं बुलाकर इन सैं २००००० रुपया का गहणा लेकर इनके नाम सैं फौज रक्खी कोटे के महारावजी नै बेणीरामजी नागर जिन का पहलौं जिकर आया था सो जयपुर को भेजे उनौं नै जयपुर के महाराज ईश्वरीसिंहजी पास जाकर कहा कि आप बूँदी उमेदसिंहजी २०० कूँ देदीजिये यह कोटे ऊपर आप का अहसान रहेगा परंतु ईश्वरीसिंहजी नै कहा कि बूँदी तो अब हाथी के पेट मैं है सो निकलनी मुशकिल है तब तो बेणीरामजी नै जवाब दिया कि शेर मैं इतना जोर है कि हाथी का पेट फाड कर निकाल सक्ता है यह कह कर चले आये तब कोटे वालौं नै फौज इकट्ठी करणा शुरू किया और आप का फौजदार गोविंदराम नागर जोधपुर सैं मदद मांग-

णे वास्ते भेजा जब उहाँ सैं कुछ हाथ नहीं आया तो गोविंदराम नैं रस्ते में अजमेर आकर उहाँ नवाब फखरुद्दौला सैं जो बादशाह नैं गुजरात के सूबे का हाकिम बणाया था यह ठहराया कि एक लाख १००००० रुपये हम तुमकों देवैंगे हम कूं बूंदी लेदो नवाब नैं मंजूर करी तो वहाँ सैं कोटे को लिख भेजा कि आप तो उस तर्फ सैं पधारो और मैं नवाब कों लेकर दूसरी तर्फ़ सैं आता हूं सो मन सूबे के माफ़िक़ पूर्व की तर्फ सैं तो कोटे के महाराव दुरजनशालजी और महाराव राजा उम्मेदसिंहजी २०० नैं बूंदी के घेरा दिया और पश्चिम की तर्फ सैं नवाब की फौज नैं घेरा दिया शाहपुरा के राजा उम्मेदसिंहजी भी फौज लेकर पश्चिम की तर्फ़ में शामिल थे यह घेरा संवत् १८०१ में आषाढ सुदि १२ के दिन दिया लडाई होणे में बूंदी सर होगई इस्मैं कोटे वालों का फ़ौजदार गोविंदराम नागर मारागया दलेलसिंहजी भागकर नैणवां में घुसगये दुरजनशालजी

ने उम्मेदसिंहजी २०० सैं कह्याकि इसलडाई मैं हमारा बहुत रुपैया ख़र्च पडा गोविंदराम फौजदार मारागया और आपसैं राज दबणा भी मुश्किल है यह कह कर बूंदी के राज की अच्छी अच्छी चीजें कोटे वालों ने लेली लोचे का परगना उम्मेदसिंहजी २०० के गुजारे वास्ते छोडा बाकी मुल्क मैं अपणा थाणा बिठादिया इसबात सैं कोटा वालों सैं बेराज़ी होकर शाहपुरा के राजाजी आपके शहर कोगये जब दुर्जनशालजी कोटे कोगये तो उम्मेदसिंहजी २०० ने यह विचारा कि कोटे वालों ने हम सैं यह किया इस वास्ते पराये भरोसे बूंदी लेणा ठीक नहीं यह बिचार कर जोधपुर के महाराज अभयसिंहजी के पास पधारे उहां अभयसिंहजी ने इनकी खातरदारी करी जब ईश्वरीसिंहजी नैं मरहटों सैं मदद लेकर बूंदी फतह करी और उहां दलेलसिंहजी को गद्दी बिठा कर कोटा घेर लिया तो लडाई होणे पीछे १८००००० रुपैया फौज खर्च देकर

कोटा वालों नै मेल कर लिया उस लडाई मैं राणाजी सैंधिया के बेटे जियाजी के गोली लगी थी इस वास्ते ईश्वरीसिंहजी नै दलेलसिंहजी सैं कहकर संबत १८०२ वैशाख मैं पाटण का परगना मरहटौं कौं दिला दिया उम्मेदसिंहजी को जोधपुर सैं कुछ नहीं हाथ आया पीछे पधारते वक्त रास मैं व्याह किया और अपणे रणवास को उहाँ ही छोड कर आप बूंदी लेणे के उपाय मैं लगे जब ईश्वरीसिंहजी और दलेलसिंहजी जयपुर मैं थे और बूंदी मैं उन का कामदार नंदराम खत्री था उस वक्त थोडी सी फौज लेकर उम्मेदसिंहजी २०० हींडोली तक पहुँच गये हींडोली के आदमियों नैं १२००० रुपैये नजर किये जब यह खबर नंदराम कामदार नैं सुणी तो ५००० आदमियों कूं लेकर आया बीचडी मैं जो बूंदी सैं ४ कोस गाँव है दोनौं फौजौं का सामना हुवा लडाई होणे मैं नंदराम भाग गया बूंदी मैं उम्मेदसिंहजी २०० का कब्जा संबत १८०३ श्रावणसुदि ३ के दिन होगया जब

इस खबर कूँ सुण कर ईश्वरीसिंहजीनै दलेलसिंहजीसैं कहाकिमैं फौजभेजताहूँ आपजाकर बूँदी फतह करो दलेलसिंहजी नै कहा कि मैं बूँदी मैं दावा नहीं करता आप आपका कब्जा करलो तबतो ईश्वरीसिंहजी नै इनसैं इस बात की लिखावट लिखा कर आपकी ५०००० पचासहजार फौजभेजी फौजकासरदार नारायणदासखत्रीथा ओरजयपुर के उमराव साथथे उस वक्त उम्मेदसिंहजी २०० ने बूँदी सैं ३ कोस अमरपुरागाँव के पास फौजसैं सामना किया बहुत बडी लडाई होणे पीछे उम्मेदसिंहजी २०० के घोडे का पैर कटगया घाव भी बहुत लगे थोडेसे आदमी साथ रह गये इस हाल मैं भी उम्मेदसिंहजी २०० दुश्मनौं की फौज मैं सैं निकलगये बूँदी मैं जयपुर का कब्जा होगया उम्मेदसिंहजी २०० जब दुश्मनौं सैं निकल कर इंद्रगढ की तर्फ पधारते थे तीन ३ कोस पर घोडा मरगया इनौं नै इंद्रगढ के पास जाकर देवसिंहजी को फर्माभेजा

कि इस वक्त हम कूं एक खासा घोडा दियाचाहिये उनौं ने जवाब भेजाकि आपने आपका राजतो दुस्मनौं के कब्जे मैं करदिया अब हमारा बिगाडना चाहते हो उम्मेदसिंहजी २०० इस बात कूं पचाकर कोटे के राज मैं राणपुर गांव मैं थोडे दिन रह कर मथुकरगढ मैं रहे इस सैं पीछे जब राणाजगतसिंहजी की फौज राणाजी के भाणजे माधोसिंहजी कूं जयपुर की गद्दी पर बिठाणे वास्ते ईश्वरीसिंहजी सैं लडनें गई उस वक्त बूंदी के लेणे वास्ते उम्मेदसिंहजी २०० भी लडने कूं पधारे थे हुलकर और मल्हारराव जी के बेटे खंडूजी दोनौं मदद पर थे राजमहल मैं लडाई हुई उहां भी ईश्वरीसिंहजी की जीत हुई उम्मेदसिंहजी फेर कोटे के मुल्क मैं पधार आये इन दिनौं मैं मरहटौं की फौज इस तर्फ आईथी जब निवाई नाम गांव मैं जो हाल जयपुर के कब्जे मैं है आपहुंची उस वक्त उम्मेदसिंहजी २०० ने वकील के साथ बूंदी

लेणे वास्ते मल्लार रावजी सें कहला भेजा उननें उम्मेदसिंहजी २०० बुलाये संवत १८०५ चैत्र सुदि १२ रविवार के दिन मधुकरगढ सें चलकर जब उम्मेदसिंहजी २०० निवाई सें ३ तीन कोस पर पहुंचे मल्लार रावजी उनके पेशवाई मैं आये और मुलाकात के वक्त इनकी खातिरदारी करी और जयपुर कूं लिख भेजा कि अब बूंदी उम्मेदसिंहजी २०० वास्ते छोडणी पडेगी ईस्वरीसिंहजी नें जबाब भेजा कि मुज को भगवान की सौगंद हे मैं उम्मेदसिंहजी २०० वास्ते बूंदी खाली कराहूंगा आप दखण को पधारिये जब मल्लार रावजी दखण को जाते हुवे बूंदी के मुल्क के पास पहुंचे तो उनोंने बूंदी मैं उम्मेदसिंहजी २०० की दुहाई फेरणे वास्ते आप के कामदार भेजे तो उहां के कामदारों ने लडाई करणा सुरू किया तब तो मल्लार रावजी उम्मेदसिंहजी २०० कूं लेकर जयपुर पर चढगये बगरू नाम गांव मैं डेरे लगगये संबत १८०५ भादो वदि

२ के दिन सैं लडाई शुरू हुई आखिर जब ईश्वरीसिंहजी हारणे लगे तब लाचार होकर बूंदी छोडणा कबूल किया कार्तिक शुदि १२ के दिन महाराव राजा उम्मेदसिंहजी २०० का कब्जा होगया दूसरे दिन शास्त्र की रीति सैं गद्दी पर विराजे हुलकर मल्लारराव जी और शाहपुरा के राजाजी नै तिलक किया उम्मेद सिंहजी २०० नै सब लोगौं की जो लडाई मैं थे और रईयत के लोगौं की मिहमानी करी मल्लार रावजी के सरदारौं को इनाम बखशे अब इनौं नै ऊपर लिखे माफिक रामानुज संप्रदाय कबूल किया और छाप मैं श्रीरंगनाथजी का नाम खुदवाया और मुल्क मैं आपस मैं जय श्रीरंग नाथ कहणा जारी करवाया और आपके बडौं की दी हुई जमीन हक्कदारौं को बहाल करी और पहले दिनौं मैं जिन जिन नैं चाकरी करी थी उन्कूं चाकरी के माफ़िक इनाम बखशा जब कि जोधपुर के महाराजा अभयसिंहजी सैं लडने वास्ते बादशाह की

फौज लेकर अभयसिंहजी के छोटे भाई बख़्त सिंहजी आये उसवक्त अभयसिंहजी नै अपनी मदद वास्ते हुलकर और उम्मेद सिंहजी २०० बुलाये थे इस वास्ते उम्मेदसिंहजी २०० भी उहां पधारे थे तब हुल्कर नै दोनौं भाइयौं मैं मेल करा दिया उसवक्त संकरगढ़ के रहणे वाले राणावत शिवसिंहजी जो उन दिनौं मैं बूंदी आ रहे थे सो उम्मेद सिंहजी २०० के साथ थे जिस वक्त उम्मेदसिंहजी २०० तो नित्य नियम मैं बिराजे थे उस वक्त हाजर होणे वास्तै शिवसिंहजी आते थे उसवक्त राजसिंह नाम कान्हावत जिस का बाप शिवसिंहजी नै मारा था आया उस नै शिवसिंहजी को देखते ही गोली सैं मारडाले आप राठोडौं की फौज की तर्फ भागा उसवक्त उम्मेदसिंहजी २०० नै नित्य नियम छोड कर विना पोशाक ही घोडे पर सवार हो कर फौज मैं घुसते कों मारडाला राठोडौं की फौज सैं कुछ भी नहीं वणी जब इस बात पर राठोडौं नै उम्मेदसिंहजी २००

सैं लडना चाहा तब यहाँ लडने मैं क्या देर थी आखिर हुल्कर ने दोनों समझा लिये हुल्कर दखण को गया और उम्मेदसिंहजी २०० बूंदी आये कोटा के महाराव दुर्जनशालजी बूंदी मैं उम्मेदसिंहजी २०० का राज होणे सैं नाराज थे उन्नौं ने नैणवा मैं दलेलसिंहजी के बेटे कृस सिंहजी के नाम लिख भेजा कि हम यौं चाहते हैं कि आप का कब्जा बूंदी मैं होय इसवास्ते नान्हाजी श्रीमंत कूं आगे करके उम्मेदसिंहजी २०० को जीत कर आप का कब्जा बूंदी मैं करा देवैंगे दूसरा कागज पूनें मैं श्रीमंतजी के कामदार रामचंद्र के नाम लिखा कि मल्हाररावजी हुल्कर ने उम्मेदसिंहजी २०० कूं बूंदी दे दी यह बात ठीक नहीं करी जो बूंदी हमारे कब्जे मैं होय तो जयपुर वग़ैरह के राजा भी आप के हुक्म मैं रहैं रामचंद्र इस कागज को देख कर राजी हुवा क्योंकि उस की मल्हाररावजी सैं दुश्मनी थी उस ने यह जवाब भेजा कि हम भी यही चाहते हैं कि बूंदी आप के कब्जे मैं होय परंतु उदयपुर के

राणा जगतसिंहजी भी इस बातमैं शामिल होवैं तो ठीक है इस वास्ते आप राणाजी को अैसीतरह राज़ी करो कि वे इस बात का कागज श्रीमंतजी के नाम लिख देवैं कि हम यों चाहते हैं कि बूंदी मैं मल्हारावजी का क़ब्ज़ा होजाय तो हम राज़ी हैं जब राणाजी का कागज आवेगा तब हम भी मदद करैंगे भरोसा है कि श्रीमंतजी आपकूं बूंदी दिवादेवैंगे यह रामचंद्र का कागज देख कर महारावजीने राणाजीके इस बात मैं शामिल करणे की तजवीज शुरू करी इस तर्फ उम्मेदसिंहजी २०० संवत १८०६ भादौं मैं सितारे की तर्फ रवाने हुवे छोटे भाई दीपसिंहजी २००।२ भजनेरी के सेरसिंहजी हरदाउत जाहरजी हरजनजी के बेटे दलेलसिंहजी साथ लिये बूंदी मैं हरजनजी कामदार रक्खे रस्ते मैं बापनाम गाँव जो हुल्कर के राज़ मैं था आया उस वक्त मल्हारराव जी तो पूने मैं थे उनके बेटे खंडूजीने उम्मेदसिंहजी २०० की खातिरदारी करी उम्मेदसिंहजी २०० कितनेक दिन

उहाँ रहे इतने मैं मल्लार रावजी भी आगये पीछे सैं हरजन कामदार ने रैयत कूं दुःख देणा शुरू किया जब यह खबर उम्मेदसिंहजी २०० ने सुणी तब उसके पकडने कूं सेरसिंहजी भेजे जब इनौं ने माहूँदे गाँव मैं हरजन कूं घेर लिया तब उस ने महारावजी के वास्ते अर्जे लिखी कि आप मेरी मदद करो यह सुणकर महारावजी ने फ़ौज तो भेजी परंतु इस सैं पहलें ही हरजन कूं क़ैद करके तारागढ मैं रख दिया जब हुल्कर और उम्मेदसिंहजी २०० दीपसिंहजी २००।२ कूं बापगाँव मैं छोड कर सितारे कूं रवानैं हुये उस वक्त हरजन का बेटा दलेलसिंह रुख़सत के बहाने से उहाँ रहगया और हरजन कूं क़ैद मैं सुं छुडा कर दीपसिंहजी २००।२ कूं बहकाणे लगा जब ये इस के बहकाणे मैं नहीं आये तो भाग कर कोटे मैं चला गया उम्मेदसिंहजी २०० और हुल्कर दोनौं सितारे मैं पहुंचे उस वक्त साहूजी राजा के मरणे सैं शंभाजी के बेटे रामराजाजी

राज करते थे उनों ने उम्मेदसिंहजी २०० की बडी तवाजे करी दोनों एक गद्दी पर बिराजे पीछे सें कोटा वाले महारावजी के बहकाये हुये दलसिंहजी बूंदी पर चढ आये जब बूंदी की फ़ौज ने दलसिंहजी भगादिये तो उनों ने कोटे वालों सें मदद मांगी उहां से खाली जवाब पाया उम्मेदसिंहजी २०० भी सितारे के राजा सें रुखसत हो कर संवत १८०७ श्रावण में बूंदी आ पहुंचे तब राणाजी ने पहली के दस्तूर माफ़िक उम्मेदसिंहजी २०० के वास्ते गद्दी के टीके का दस्तूर भेजा संवत १८०७ के अगहन में मल्हाररावजी हुल्कर हिंदुस्तान कूं फतह करणे वास्ते चढे जब बूंदी के पास पहुंचे तो उम्मेदसिंहजी २०० भी उन के शामिल होगये और नैणवा में दलेलसिंहजी के बेटे दलसिंहजी घेर लिये दलसिंहजी तो छिपकर भागगये और उस वक्त नैणवां के नीचें करवर समधी वग़ैरह थे वे सब उम्मेदसिंहजी २००

नै खाल सै कर लिये आप हुल्कर के साथ रहे जब जयपुर सैं तीन कोस के ऊपर फौज के डेरे हुवे तो ईश्वरीसिंहजी नै डर मैं आकर अपणे कामदार हरगोविंद महाजन नाटाणी सैं जो सदा यह कहा करताथा कि एक लाख फौज मेरे कीसे मैं है जिस वक्त चाहो हाज़र करदूं फ़ौज मांगी वह पहला ही इस बात मैं नाराज था कि ईश्वरीसिंहजी नै जोरावरी सैं उस की बेटी घर मैं डाल लीथी और इसी कारण सैं फ़ौज जहाँ तहाँ भेज रक्खीथी बोला कि आप नै मेरे कीसे मैं मूसे लगा दिये सो उस के फटणे सैं फ़ौज बिखर गई अब जो चित्त मैं आवै सो करो यह सुण कर ईश्वरीसिंहजी जहर खाकर मरगये जब यह खबर हुल्कर नै सुणी तो आप के चौकी पहरे राज की जगह मैं बिठा दिये ईश्वरीसिंहजी कूं दाग देणे पीछे मल्हारराव जी के बेटे खंडूजी नै यह कहा कि जयपुर के रणवास मैं बहुतसी खूबसूरत औरत हैं उन कूं हम ले जावैंगे जब

यह बात सुण कर राणियौं ने डर सैं बारूत बिछाकर उस सैं एक साथ मरणा चाहा तो इस बात कूं सुण कर उम्मेदसिंहजी २०० गुस्से सैं आकर हुल्कर सैं कहणे लगे कि आप कूं पूनैं के राजा ने हिंदुऔं के धर्म की मजबूती वास्ते भेजे हो आप का बेटा यह कहता है कि जयपुर के रणवास की औरतौं कूं मैं लेलूं सो यह बात ठीक नहीं इस रणवास मैं हमारी बहण बेटी हैं हमारे रणवास मैं इन की बहण बेटी हैं आज इन सैं कल्ह हम सैं भी यही बात होगी तो फेर इस्सैं सिवाय हम कूं मरणे लडने का कौणसा वक्त मिलेगा यह सुण कर मल्हारावजी ने आप के बेटे कूं बहुतसा धमकाया और जयपुर के लोग उम्मेदसिंहजी २०० की तारीफ करणे लगे जब जयसिंहजी के छोटे बेटे माधवसिंहजी आकर गद्दी पर बैठ गये और जयपुर सैं १००००००० एक कोड रुपैये फौज खर्च के लेकर हुल्कर पीछे आये तो उम्मेदसिंहजी २०० भी बूंदी कूं पधारे

एक दिन इन के छोटे भाई दीपसिंहजी २००।३ कुछ बिचारकरशिकार के बहाने सैं घोडे पर सवार होकर कोटे कूं पधारगये उहां दुरजनशालजी ने एक महल मैं रक्खे उम्मेदसिंहजी २०० ने उन के लेण वास्ते आपका कामदार कोटे भेजा परंतु दीप सिंहजी नहीं पधारे इनौं ने गागारणी के राठोड अभयसिंहजी की बेटी व्याहे अभयसिंहजी के बहण इंद्रगढ के महाराजा देवसिंहजी कूं व्याहे थे देवसिंहजी बूंदी के हरामखोर थे इनौं ने दीपसिंहजी कूं लिखाकि आप बूंदी का राज चाहते हो तो जल्दी यहां पधारो आप के ऊपर उम्मेदसिंहजी २०० की निगाह बिलकुल नहीं है दीपसिंहजी इंद्रगढ पधारे उहां कुछ नहीं होसका देवसिंहजी ने इन कूं जयपुर भेजा उहां माधवसिंहजी ने खातरदारी करी गद्दी के खूंटपर बिठाये ५०००० पचास हजार की जागीर दी रहणे कूं उकडाद शहर दिया उम्मेदसिंहजी २०० ने संवत १८१० के जेठ बदि १ दीतवा

र के दिन महलौं के भीतर श्रीरंगनाथजी की मूर्त्ति पधराई इधर इंद्रगढ के महाराजा देवसिंहजी नै दीपसिंहजी के नाम जयपुर कूं इस तरह का कागज भेजा कि अब उम्मेदसिंहजी २०० डर कर आप कूं राजी करणे वास्ते आप के कामदार कूं भेजेंगे परंतु आप राजी मत होइयो क्यूंकि हमनै यह तजवीज करी है कि कुछ नजराणा देकर श्रीमंत कूं अपणी तर्फ करके आप कूं बूंदी की गद्दी पर बिठादेवेंगे निदान यह कागज कोई तरह सैं उम्मेदसिंहजी २०० के हाथ आगया तब उम्मेदसिंहजी २०० ने देवसिंहजी निहायत हरामखोर समके जब संबत १८१४ मैं उम्मेदसिंहजी २०० मौका पाकर करवर पधारे उहाँ देवसिंहजी २०० और उन के बेटे दौलतसिंहजी ये दोनौं आये थे उस वक्त देवसिंहजी नै ऊपरी दिल सैं अर्ज करी कि हम आप के नौकर हैं जो फर्मावो सो करैं उस वक्त उम्मेदसिंहजी २०० नै वह कागज जो देवसिंहजी ने दीपसिंहजी के नाम भेजा था दिखाया और यह फर्मा-

याकि जो तुमनै पहले दिनौं मैं उस बुरे वक्त मैं घोडा नहीं दियाथा सो तो हम भूलगये थे परंतु इस वक्त दुस्मनी का बी जनया पैदा किया यह फर्मा कर देवसिंहजी उसी वक्त मार डाले जब दौलतसिंहजीनै तलवार निकाली तो वे भी कैद करके बूंदी मैं भेजे गये उम्मेदसिंहजी २०० नै इंद्रगढ खालसै कर लिया देवसिंहजी का रणवास नैणवा मैं भेज दिया और इंद्रगढ के परगनौं मैं अपणा कब्जा कराणे वास्ते फौज भेजी परंतु उस वक्त फौज मैं खातोली के महाराजा नै आकर रात के वक्त ऐसा धावा किया कि फौज भाग गई जब यह खबर सुणकर उम्मेदसिंहजी २०० नै फेर फौज भेजी तब कोई सामना करणवाला नहीं रहा अणघोरा दीपरी वगैरै सब गाँव कब्जे मैं आगये इंद्रगढ मैं और दीपरी मैं उम्मेदसिंहजी २०० नै किले बणवाये जब कितनेक दिनौं पीछे दौलतसिंहजी मरगये तब मिहरबानी करके उम्मेदसिंहजी २०० नै देव-

सिंहजी के भाई भक्तरामजी कूं डूंगरगढ बख्शा दिया कितनेक दिनों पीछें उम्मेदसिंहजी २०० नै दीपसिंहजी कूं बुलाकर जागीर मैं कापरण दी और गुना माफ किया जबकि जवाहिर मल जाट का जयपुरकी तर्फे हमला हुवा तब माधवसिंहजीने उम्मेदसिंहजी २०० के नाम लिखभेजा कि यह वक्त मदद करणेका है इस वक्त आप फौज भेजकर मेरेपर अहसान करो यह देखकर उम्मेदसिंहजी २०० ने संवत १८२३ मैं ५००० पाँचहजार फौज के साथ आपके बडेमहाराजकुमार अजितसिंहजी २०२।१ चौदा १४ वर्षकी उमर मैं भेजे यह बात सुणकर माधवसिंहजी बहुतराजी होकर दस्तूर सैं भी जियादा दूर तक पेशवाई मैं आये और कहा कि उम्मेदसिंहजी २०० ने बडी अचंभे की बात करी कि लडाई के वास्ते बडेमहाराजकुमार भेज दिये माधवसिंहजी ने दोस्ती के सबब सैं इन कूं महलों मैं आप के पासही रक्खे लडाई मैं नहीं जानेदिये लडाई होणे पीछे माधवसिंहजी ने अजि

तसिंहजी २०।१ बूंदी भेजे एक हाथी १ दो घोडे २ और दो सिरोपाव सरपेच १ और कंठी १ ये दिये और धूलाशहर के ठाकुर दलेलसिंहजी बूंदी तक साथ पहुंचाणे भेजे संवत १८२३ माघ सुदि ५ के दिन अजितसिंहजी २०।१ बूंदी में दाखिल हुवे जबकि सैंधिया केदार रावजी और महाजी ने जोधपुर पर चढाई करी उस वक्त जोधपुर के महाराज विजयसिंहजी ने मदद वास्ते उम्मेदसिंहजी २०० वी बुलाये थे जो कि सैंधिया कूं ८००००० आठ लाख रुपया फौज खर्च का देकर जोधपुर वालों ने मेल करलिया इससैं पीछे जब जयपुर के मुल्क कूं लूटते हुवे सैंधिये मोनार में आ पहुंचे उस वक्त कोटा के महारावजी ने आपका कामदार अखैराम कायथ उन के पास इस वास्ते भेजा कि आप बूंदी के ऊपर चढाई करो और बूंदीवाले जोधपुरवालों की मदद वास्ते गये थे इससैं ये आपके दोस्त नहीं हैं जब कायथ अखैराम सैं यह सुणी और कुछ रुपये भी पाये तब महाजी सैंधियानैं बूंदी

पर चढाई करदी जब यह बात जोधपुर मैं उम्मेदसिंहजी २०० ने सुणी तो इनौं नै जल्दी बूंदी मैं आकर लडाई का सामान इकट्ठा किया किला कोट वग़ैरे दुरुस्त किये आखिर दखणियों की फौज ने बूंदी घेरली उसमैं महाराव छत्रसिंहजीभी मौजूद थे दोनौं तर्फसें तोपें चलने लगीं जयपुर सें माधोसिंहजी नैं बूंदी की मदद वास्ते फौज भेजी पांवडहेडा के जागीरदार राजावत हारकादासजी उस फौज मैं सरदार थे और शाहपुरे के राजा उम्मेदसिंहजी नैं आपके छोटे बेटे जालिमसिंहजी के साथ बूंदी की मदद वास्ते फौज भेजी और जोधपुर सें विजयसिंहजी ने कुछभी मदद नहीं भेजी बहुत दिनौं की लडाई पीछे जब महाजी सेंधियानै यह समझा कि बूंदी का टूटणा मुशकिल है तब उम्मेदसिंहजी २०० सें मेल करणे वास्ते यह कहा भेजा कि हम ने कोटा के महारावजी के कहणेसें यह लडाई शुरू करी थी परंतु यह छोटी बात जाणकर हमने छोडदी और आप आकर हमसें मिलो हमारी तर्फसें कोई बेजा बात जाहरी मैं

नहीं आवेगी उम्मेदसिंहजी २०० ने यहबात सुणकर और मुनासिब समझकर माधाणी भगवंतसिंहजी कूं बुलाकर यह फर्माया कि हम सैंधिया सैं मुलाकात्त करणे वास्ते जाते हैं जो सैंधिया हमकूं मारकर शहर लियाचाहे तो जबतक तुमजीवते रहो तबतक तो मत्त छोडणा मरे पीछे जो चाहे सोलेवे यह फर्माकर शहर के बाहरनिकले सैंधिया आपके डेरौं के बाहर के दरवाजे तक पेशवाई मैं आया दोनौं साहब दरीखाने मैं बिराजे जब महाजी सैंधियानै दोस्ती की बातैं करी तब जो कुछ रुपये चढ रहे थे सो देकर रुखसत किया यह लड़ाई संबत १८२६ मैं हुई जब कि मेवाड़ौं ने बूंदी के मुल्क मैं लूट मचाई उसवक्त उमेदसिंहजी २०० नै फौजचढाकर वे सब जेर करलिये और टहला मांगटला दीदहरा इन गाँवौं के कान्हावत्त ठाकुर क़ैद करदिये और वह मांगटला का ठाकुर जिसनै किसी वक्तयह कहाथा कि उमेदसिंहजी २०० मेरे इलाके

में जितनी दूर तक आवें उतनी जमीं दान कर दूं डाढी मूंछ मूंड कर जहल खाने में पहुंचाया यह बात सुण कर जब राणा अडसीजीने कान्हावतों के छुडाणे वास्ते बूंदी में कामदार भेजा तब उस की अर्ज सुण कर कुछ दंड लेकर उन कूं छोड दिया उस वक्त पीछे रींझोला बीखरण बाकरां वगैरै उम्मेदसिंहजी २०० का हुक्म मानने लगे और होली दसरावा पर इन गांवों के ठाकुर बूंदी हाजर होणे लग गये इस से पीछे खैराड के मीणों ने बूंदी के मुल्क में लूट मचाई उन कूं भी उम्मेदसिंहजी २००ने उन के किये का स्वाद चखाया यह बात संवत १८२२ के साल में हुई जब कि मोजे पगारां के ठाकुर उद्योतसिंहजी नायावत जो पहलां बूंदी में दलेलसिंहजी के वक्त उन में मिल गये थे और पगारां कूं छोड कर मरहटों में जा मिले और बूंदी के मुल्क में लूट मचाई तब उम्मेदसिंहजी २०० ने उन के काका बखतसिंहजी कूं पगारां देदी जब संवत १८२२ के साल में फिर उद्योतसिं

जी ने आकर पगारां लेणेका इरादाकिया उस वक्त उम्मेदसिंहजी २०० ने ज्योतसिंहजी मरवाडाले उम्मेदसिंहजी २०० ने दूसरे महाराजकुमार बहादुरसिंहजी २०१।२ कूं गोठराजागीर मैं बख्शा और उन सैं छोटे सरदारसिंहजी २०१।३ कूं दुगारीजागीर मैं बख्शी और संवत १८२७ मैं उम्मेदसिंहजीने २०० जहानसैं दिल उठालिया और आप तप और यात्रा इख़्तियार करणे वास्ते १८ वर्षकी उमर वाले आप के बडे महाराजकुमार अजितसिंहजी २०१ कूं वैशाखसुदि १२ द्वादशी के दिन राज देदिया और आप श्रीजी नाम करके मशहूर हुवे अजितसिंहजी २०१ ने गद्दी विराजतेही पहलां तो उन मीणों कूं जिन्होंने बूंदी के मुल्क मैं लूटमार मचार क्खीथी मार कर ज़ेर किये चोरी वग़ैरे जो उन के बुरे काम थे वे सभ तरह बंद कर दिये पहले दिनों मैं सुहानाम गावं के सरानाउत्तों ने एक हाडा मार डालाथा इस बात कूं याद करके मानपुरा और सुहा इन

दोनों गांवों कूं मार कर खराब कर दिये और उन गावों के सीसोदियों कूं जो उस हाडा के मारणे मैं शामिल थे पकड़ कर मोजे थाणा मैं जो कि बूंदी के इलाके मैं है ले आये अजितसिंहजी २०१ ने यह विचारा कि हमने मीणे लोग जेर तो किये परंतु जब तक कोई खास इस काम के लायक जगह मैं किला नहीं बणेगा तब तक इन मीणों का पक्का बंदोबस्त नहीं होगा यह विचार कर बीलहटा नाम गांव मैं जो उस वक्त उदयपुर वालों के कब्जे मैं था वहां किला बणवाणे वास्ते राणाजी सैं यह कहला भेजा कि आप के गांवं बीलहटा मैं जब तक किला नहीं बणेगा तब तक मीणों का बंदोबस्त नहीं होगा इस वास्ते या तो उसमें आप किला बणवावो नहीं तो हम बणवावेंगे और जब इस बात का जवाब राणाजी की तर्फ सैं कुछ भी नहीं आया तब इनों ने इस बीलहटा मैं किला बणवालिया और अपणी तर्फ सैं किलादार रख दिया जब कि अजितसिंहजी २०१

बांसवाडे मैं व्याह करणे पधारे उस वक्त जाजपुर के राणाउत्तौं ने बीलहटे पर हमला किया था उस वक्त उम्मेदसिंहजी २०० ने दुश्मन मार भगाये और उनके डेरे लूट लिये जबकि अजितसिंहजी २०१ बांसवाडासैं पीछे पधारे तब राणाजी ने बूंदी कूं लिख भेजा कि आपने बीलहटा जोर सैं ले लिया है जो आप उसैं कब्जा रक्खा चाहते हो तो आप के छोटे भाई बहादुरसिंहजी कूं यहां रहणे वाले भेज दो उनकूं हम एक लाख १००००० की जागीर देवैंगे और उसैं बीलहटा बी गिण लेवैंगे इस कागज कूं देखकर अजितसिंहजी २०१ ने आप के छोटे भाई बहादुरसिंहजी उदयपुर भेजे राणाजी ने इनकी पेशवाई मैं अपणे काका अर्जुनसिंहजी भेजे राणाजी ने इनकूं जागीर तो दी परंतु बीलहटा नहीं दिया इसैं पीछे राणाजी ने मुल्कगीरी मैं बूंदी की हद के पास शाकरगढ मैं मुकाम किया तब उम्मेदसिंहजी २०० के नाम इस बात का कागज भेजा कि आप बेपरवा ऋषि सरीखे हो सो हम आप की मुलाकात कूं चाहते हैं यह सुणकर उम्मेद-

सिंहजी २०० राणाजी के पास पधारे राणाजी पेशवाई वास्ते आये आपके डेरे मैं लेगाये उमेदसिंहजी २०० नै राज छोडणे के सबब सैं तख्त पर बिराजणा मंजूर नहीं किया इस वास्ते जुदा आसन पर बिराजकर बात चीत करी इससैं पीछे राणाजी नै यह कहा कि बीलहटा गाँव हम कूं पीछा देणा चाहिये तब उम्मेदसिंहजी २०० नै कहा कि मैं नै तो राज छोड दिया है आप अजितसिंहजी २०१ सैं उसके बदले गाँव लेलीजिये या उसके रुपैये ठहरालीजिये यह कहकर बूंदी कूं पधारे और अजितसिंहजी २०१ सैं फरमाया कि तू जाकर राणाजी सैं मिल और राणाजी नैभी अजितसिंहजी २०१ के बुलाणे वास्ते अमरचंद कामदार भेजा परंतु उसका मिजाज अच्छा नहीं था उसनैं बूंदी मैं आकर बेअदबी भी करी परंतु यहां के अकलमंदों नै अजितसिंहजी २०१ सैं यही अरज करी कि यह कामदार ही बुरे मिजाज वाला है और राणाजी ऐसे नहीं हैं इस वास्ते उन सैं मेल करणा बहुत अच्छा है और इसमैं भी शक नहीं कि जब राणाजी इस कामदार की बुराई

सुणैंगे तो इसकूं धमकावैंगे आखिर अजितसिंहजी २०१ राणाजी की मुलाकात वास्ते पधारे राणाजी पेशवाई मैं आये आपस मैं मुलाकात हुई उस वक्त इंडरगढ के महाराजा भक्तराम जी के बेटे सनमानसिंहजी वग़ैरे अजितसिंहजी २०१ के साथ थे फेर दूसरे दिन अजितसिंहजी २०१ राणाजी के डेरे पधारे तीसरे दिन राणाजी इन के डेरे आये और मुलाकात करके पीछे गये एक दिन राणाजी अजितसिंहजी २०१ सैं बिना मिलेही शाकरगढ सैं अमरगढ की तर्फ चलेगये जब अजितसिंहजी २०१ सैं बूंदी के अहलकारौं नै यह अर्ज करी कि राणाजी तो अमरगढ की तर्फ चलेगये आप भी उहां ही पधारिये जब लोगौं नै इस बात के वास्ते बहुत सी अर्ज करी तब ये भी बमुनासिब अर्ज कूं कबूल करके अमरगढ पधारे यहां भी अमरचंद कामदार अजितसिंहजी २०१ के पास हाजिर हुवा अजितसिंहजी २०१ नै फर्माया कि मैं बूंदी कूं जाता हूं अमरचंद नै अर्ज करी कि

राणाजी आपके पास वकील कूँ भेजते हैं जो कुछ वह अर्ज करे उसपर ठीक दीखे सो फर्मा कर आप बेशक बूँदी कूँ पधारिये अमरचंद के जाणे पीछे वकीलनै आकर अर्ज करी कि आपनै बील हटा लेलिया है सो पीछा दिया चाहिये अजितसिंहजी २०१ नै फर्माया कि मैंने उस्मैं एक किला बणवाया है सो उस्सैं दूणी पेदावाला गाँव राणाजी लेलेवैं या कुछ रुपये ठहरा लेवैं सो हम साल दरसाल देदिया करैं जब राणाजीने इन बातों मैं सैं एक भी नहीं मानी और यह कहला भेजा कि जो हमारे कहणे सैं नहीं देते हो तो सिंधियों के जोर सैं लेंगे यह सुणकर अजितसिंहजी २०१ कूँ गुस्सा आगया सो तीन दिन पीछे अर्थात संवत १८२९ मैं चैतवदि पडवा के ३ घडी दिन रहे सैं राणाजी घोडे पर सवार होकर सैर करणे गये और अजितसिंहजी २०१ भी उसी तर्फ सैं पधार सैर करके आते हुवे रस्ते मैं मिलगये उस वक्त अजितसिंहजी २०१ ने राणाजी सैं कहा कि मैं काल्ह बूँदी कूँ जाऊँगा आपनै भी ठीक दीखे सो

सुणैंगे तो इसकूं धमकावैंगे आखिर अजितसिंहजी २०१ राणाजी की मुलाकात वास्ते पधारे राणाजी पेशवाई मैं आये आपस मैं मुलाकात हुई उस वक्त इंद्रगढ के महाराजा भक्तराम जी के बेटे सन मानसिंहजी वग़ैरे अजितसिंहजी २०१ के साथ थे फेर दूसरे दिन अजितसिंहजी २०१ राणाजी के डेरे पधारे तीसरे दिन राणाजी इन के डेरे आये और मुलाकात करके पीछे गये एक दिन राणाजी अजितसिंहजी २०१ सैं बिना मिले ही शकरगढ सैं अमरगढ की तर्फ चले गये जब अजितसिंहजी २०१ सैं बूंदी के अहलकारौं नै यह अर्ज करी कि राणाजी तो अमरगढ की तर्फ चले गये आप भी उहां ही पधारिये जब लोगौं नै इस बात के वास्ते बहुतसी अर्ज करी तब ये भी बेमुनासिब अर्ज कूं कबूल करके अमरगढ पधारे यहां भी अमरचंद कामदार अजितसिंहजी २०१ के पास हाजिर हुवा अजितसिंहजी २०१ नै फर्माया कि मैं बूंदी कूं जाता हूं अमरचंद नै अर्ज करी कि

राणाजी आप के पास वकील कूं भेजते हैं जो कुछ वह अर्ज करे उसपर ठीक दीखे सो फर्मा कर आप बेशक बूंदी कूं पधारिये अमरचंद के जाणे पीछे वकील ने आकर अर्ज करी कि आप ने बील हटा लेलिया है सो पीछा दिया चाहिये अजितसिंहजी २०१ ने फर्माया कि मैंने उसमैं एक किला बणवाया है सो उससैं लूणी पैदावाला गांव राणाजी लेलेवैं या कुछ रुपैये ठहरा लेवैं सो हम साल दर साल देदिया करैं जब राणाजी ने इन बातों मैं सैं एक भी नहीं मानी और यह कहला भेजा कि जो हमारे कहणे सैं नहीं देते हो तो सिंधियों के जोर सैं दोगे यह सुणकर अजितसिंहजी २०१ कूं गुस्सा आगया सो तीन दिन पीछे अर्थात संवत १८२९ मैं चैतवदि पड़वा के ३ घडी दिन रहे सैं राणाजी घोडे पर सवार होकर सैर करणे गये और अजितसिंहजी २०१ भी उसी तर्फ सैं पधारे सैर करके आते हुवे रस्ते मैं मिलगये उस वक्त अजितसिंहजी २०१ ने राणाजी सैं कहा कि मैं काल्ह बूंदी कूं जाऊंगा आपने भी ठीक दीखे सो

मुजसैं कह देणा चाहिये इस बात पर राणाजी नै न तो इन की तर्फ देखा न इन सैं बोले फेर राणाजी के तर्फ के एक राजपूत नै कहा कि आपनै राणाजी कुछ निबल समझे या सिंधिये नहीं देखे इस वगैरै कई बुरे बचन कहे राणाजी नै उस राजपूत कूं भी नहीं धमकाया और आप डेरे कूं चल दिये अजित्तसिंहजी २०१ नै फेर कहा कि फेर भी आप इस बात का जबाब दीजिये मैं आज यहां हीं रहूंगा यह कहकर जौंहार के वास्ते माथे के हाथ भी लगाया परंतु राणाजी नै नजर भी नहीं दी तब तो अजित्तसिंहजी २०१ नै बरछी चला कर राणाजी मार डाले जब अजित्तसिंहजी २०१ नै राणाजी के सिर काटणे वास्ते तलवार चलाई उस वक्त राणाजी के एक चोबदार नै दोनौं हाथों के जोर सैं अजित्तसिंहजी २०१ के बांह पर छडी चलाई इस्सैं तलवार तिरछी होगई जिस्सैं राणाजी का सिर नहीं कटा उस वक्त इंद्रगढ के महाराजा भक्तरामजी के बेटे सनमानसिंहजी वगैरे नै भी राणाजी पर तलवार चलाई

राणाजी के दो तीन सरदार और भी मारेगये अजितसिंहजी २०१ राणाजी का घोडा लेकर अपणे डेरौं मैं पधारे जबकि इस बात कूं सुणकर अमरचंद कामदार फौज लेकर राणाजी वग़ैरौं की लाशौं के उठाणे वास्ते आया तब फेर अजितसिंहजी २०१ भी लड़ने कूं तयार हुवे परंतु इन की फौज के सरदारौं ने भावसिंहजी १९६ की सौगंद दिला करा के और बहुत सी अर्ज करके बूंदी कूं भेज दिये और आप भी जो कुछ असबाब था उसकूं लेकर आगये और कुछ डेरे तंबू वग़ैरे रहगये उन कूं राणाजी की फौज वाले लूट लेगये अजितसिंहजी २०१ आधी रात्त के वक्त बूंदी मैं पहुंचे उस वक्त उम्मेदसिंहजी २०० ने यह सोचा कि एक तो छोटी सी बात्त पर राणाजी का मारणा ठीक नहीं था दूसरी यह कि जो इस जवानी के जोर मैं इसने ऐसी बहादुरी करी है जो इस वक्त इस कूं जियादा सराहैंगे तो चित्त पर अभिमान आजायगा इस वास्ते पहलां तो यही फर्माया

कि तैंने यह काम ठीक नहीं किया। फेर यह बिचारा कि जो जियादा बुरी कहैंगे तो इसका दिल कुंद होजायगा इसवास्ते प्यार करलिया अजितसिंहजी २०१ बडे सूरबीर थे जोकिते नेक दिन फेर जमीन पर रहते तो अपणाराज बहुत दूर तक फैलालेते परंतु संबत १८३० के बैशाख सुदि १५ के दिन इक्कीसवें बर्ष के शुरू मैं शीतला की बीमारी मैं इस संसार कूं छोडा उस वक्त जो रणवास की हालत हुई होगी सो लिखी नहीं जाती इनकी २ राणियोंमैं सैं एक सती हुवे उम्मेदसिंहजी २०० ने सब कूं दिलासादिया और जोकि उम्मेदसिंहजी २०० ने राज छोड दिया था इस वास्ते साढेच्यार ४॥ महीने की उमर वाले आपके पोते बिसुसिंहजी २०२ संबत १८३० के जेठ वदि ११ एकादशी के दिन गद्दी बिठादिये और सब तरह आप उनकी खबरदारी पर रहे इनके इंद्रसिंहजी २०३।१ बलदेवसिंहजी २०३।२ रामसिंहजी २०३।३ गोपालसिंहजी २०३।४ थे श्री

महाराजकुमार हुवे इंद्रसिंहजी २०३।२ छोटे और भी हुवे थे परंतु नाम निकलने तक भी सलामत नहीं रहे और विसुसिंहजी २०२ के आगे धाभाई सुखराम कामदारी करता था जब इन कूं बालक समझकर राणा अडसीजी के बेटे हम्मीरसिंहजी नें महाजी सैंधियासें बूंदी पर चढाई करणे वास्ते कहा महाजी ने नैणवामें मुकाम करके बूंदी कूं कागज भेजा कि आपने जोरावरी सें राणाजी का गांव बीलहटा लेलिया और राणाजी भी मारडाले सो ठीक नहीं करी अब यही मुनासिब है कि बीलहटा गांव और राणाजी का घोडा पीछा देदो यह सुणकर सुखरामजी धाभाई ने वक्त कूं विचारकर बीलहटा और राणाजी का घोडा पीछा देदिया जब महाजी ने कितनेक दिनों तक बेघूं के घेरा दिया उस वक्त उम्मेदसिंहजी २०० ने बेघूं की मदद वास्ते फौज भेजी जब लडाई होणे पीछे फौज खर्च देकर बेघूं वालों ने महाजीसें मेल करलिया तब फौज पीछी आई

उम्मेदसिंहजी २०० नै बूंदी के जागीरदार और भले आदमियों कूं बुला कर यह फर्माया कि हाल तुमारा मालिक बालक है सो धाभाई सुखराम काम करता रहै और तुमलोग इस के कहणे मैं रहो भवानीसिंहजी और माधाणी भगवंतसिंहजी सैं फर्माया कि तुम रस्ते मैं विसुसिंह २०२ के पास रहा करो आप के पुत्र बहादुरसिंहजी सैं फर्माया कि रस्ते मैं तुम इन के आगे रहा करो यह फर्माकर संवत १८३० मैं आप द्वारकाजी की यात्रा वास्ते पधारे इनौं नै जगन्नाथजी की यात्रा संवत १८२८ मैं अजीतसिंहजी २०१ के वक्त मैं करलीथी जब द्वारकाजी के दर्शन करके नावों मैं बिराज कर गोपी तलाई मैं स्नान करके पीछे पधारते वक्त काबा नाम धाडी लोगौं नै पहाड के दोनौं तर्फ चढ कर इन सैं दंगा किया और तीर बरसाना शुरू किया तब तो लाचार इनौं नै भी उन कूं सजा देणे का हुक्म दिया आखिर नगमाणि नाम धाडियौं के सरदार और उसके काका के मार लेणे सैं

सब धाडी भागगये ये धाडी ऐसे जोरावर थे कि रस्ते मैं चलगए इन् के आगे मुश्किल था इन के भागणे मैं उहांके लोगौं कूं अचंभा हुवा क्यौं कि उम्मेदसिंहजी २०० के साथ सिपाही बहुत कम थे उम्मेदसिंहजी २०० इस यात्राकूं करकै संवत १८३२ के चैत्र सुदि १ के दिन बूंदी मैं दाखिल हुवे संवत १८३३ के शुरू मैं इनौंने बदरी नाथजी की यात्रा करी इसी संवत के भाद्रपद वदि ६ के दिन बूंदी दाखिल हुवे संवत १८३४ के शुरू सैं १८३५ के शुरू तक रामेश्वरजी की यात्रा करी संवत १८५२ मैं जगन्नाथजी की यात्रा दूसरी वार हुई उसमैं जो पहली यात्रा के वक्त तीर्थ रहगये थे उनकी भी यात्रा हुई संवत १८६१ के अगहन वदि ८ के दिन उम्मेदसिंहजी २०० नै इस संसार सैं कूंच फर्माया इनौंने अपणे राजके दिनौं मैं महलौं के भीतर श्रीरंगनाथजी पधराय चित्रसाला और रंगविलास नाम बाग और कचमहल बणाये और एक अखाडा रसोई और तारागढ मैं किलाधारीजी का मंदिर एक भंडार

और एक बडा टांका ये बणाये और गणेशघाटी नीमका रावला और आशापूराजी का मंदिर कुवे का रावला और गुलाह बावडी के पास उस घोडे की मूर्त्ति कि जो तीथों मैं उन की खिदमत मैं था बणाई और केदारजी के पास देव विलास नाम बाग एक कुंड शिकार बुर्ज गुलाबबाडी हनूमानजी की कच्ची नहर और पायगाँ वगैरे बणाये और वधूं मैं बुधसिंहजी १९९ का चौंतरा बणाया और इन की कृपापात्र रूपरसरायजी ने केदारनाथजी के पास रूपविलास नाम बाग बणाया ये बडे शूर वीर और नीति के जाणने वाले थे इन की तारीफ इन के कामों सैं जाहिर होजाती है कैसी कैसी तजवीजों सैं इनों ने बूंदी दुश्मनों के पेट सैं निकाली मेरी समझ मैं इस वंश मैं ये सब सैं बढकर हुवे मल्हारराव जी हुल्कर वगैरे बहुत से उन का बडा लिहाज रखते थे एक बार का जिकर है कि इस तर्फ जसवंतराव जी हुल्कर की फौज आय पडी थी विसुसिंहजी २०२ ने किसी तर-

हदिल मैं शक लाकर शहर के दरवाजे बंद करालिये थे और किसी नालायक नै शहरपनाह के ऊपर मैं हुल्कर की फौज की तर्फ गोली चलाई जसवंतरावजी श्रीजी की मुलाकात वास्ते केदारनाथजी कूं लाते थे उनौंनै यह डोल देखकर बूंदी के लूटणे का हुक्म दिया इन्हौं क्या देर थी दखणियौं नै बाहरली बूंदी मैं लूट मचादी और हल्ला शुरू किया उस वक्त बूंदी की यह दशा देख कर उम्मेदसिंहजी २०० तुरत हुल्कर के पास पधारे जब दोनौं बिराजे तब हुल्कर नै बिस्नुसिंहजी २०२ की शिकायत करी तो श्रीजी नै जबाब दिया कि मल्हार रावजी के बंश मैं आप कपूत हुवे और मेरे बंश मैं यह कपूत हुवा क्यूंकि आप नै इस पर हल्ला करणा चाहा और इसनै आप का इतना शक किया और यह भी कहा कि आप बूंदी कूं फतह तो कर लोगे परंतु इस वक्त बहुत पैसा और आदमी का खर्च पड़ेगा क्यूंकि यहां बहुत से राजपूत इकट्ठे हो रहे हैं और जो इस राज पर आप का अहसा

नहै सो जाता रहेगा जो कुछ रुपैये चढ रहे हैं उन का बंदोबस्त मैं कर देता हूं जसवंतरावजी ने सब फौजदारो की और डेरे उठा लिये रवलगियों की हमेशह बेइंतिजामी और मस्ती और सरकार अंगरेज बहादुर के इंतिजाम की खूबी और नेकचाल और इकबाल सदा बढता समझकर बिसुसिंहजी २०२ ने आप के बाबा उमेदसिंहजी २०० की सलाह सैं संवत् १८५९ मैं तामस करहाम १ नवाब मकफरसन २ करनैल मीन ३ गवर्नर जनरल मिसटर जान मकफर्सन ४ वग़ैरै साहिब लोगों के साथ कागज पत्र लिखण जारी किया जब संवत १८६१ मैं मुकंदरे के बाहर अमझार नदी के पास हुल्कर की फौज के साथ सरकारी फौज का सामना हुवा उस वक्त बिसुसिंहजी २०२ नै वकील सादुल्लाखाँ और टोकरा वास के मगनसिंहजी छगनसिंहजी महासिंहोत तलोदा के तिलोकसिंहजी महासिंहोत और सांवत के हरिसिंहजी और गौड धीरसिंहजी ऐ·

वरे के पाँच भाइयों के साथ इन वग़ैरै सरदार फौज़ के साथ सरकार अंगरेज़ी फौज की मदद वास्ते भेजे उन्हों फौज के मालिक मोनसन साहिब के हुक्म के माफिक काम दिया और फेर कर नैललीक साहिब और डंकीनसाहिब वग़ैरै के लिखने माफिक सरबराही और सब तरह की मदद सरकारी फौज की करते रहे और सैंधिये और हुल्कर की फौज का रस्ता रोकते रहे संवत् १८६२ मैं जब जयपुर के महाराज जगतसिंहजी और जोधपुर के महाराज मानसिंहजी के लड़ाई की तयारी हुई तो बिसुसिंहजी २०२ ने जगतसिंहजी और मानसिंहजी इन सैं यह कहला भेजा कि यह लड़ाई हमारे ऊपर माफ करके मोकूफ रखणी चाहिये और इस के मोकूफ करणे वास्ते खुद मैं आकै तब जगतसिंहजीनै यह कहला भेजा कि हमनै आप के कहणे सैं लड़ाई मोकूफ रखी परंतु मानसिंहजी के उमराओं कूं मानसिंहजी के तर्फ सैं यह शक हो रहा था कि मानसिंह

जी हम कूं बिगाडा चाहते हैं इस सबब सें मानसिंहजी कूं कमजोर करणे वास्ते मानसिंहजी के उमराव जगत्सिंहजी मैं मिलगये उस वक्त जगत्सिंहजी फिर लडने कूं तयार हुवे तो इहांसें मानसिंहजी की मदद वास्ते २००० फौज भेजी गई क्यूंकि विसुसिंहजी २०२ के कहणे बमूजिब मानसिंहजी नै लडाई मौकूफ ही रक्खा और जगतसिंहजी नै लडाई फिर उठाई इसैं मानसिंहजी कूं ही मदद भेजी गई जब जगत्सिंहजी सैं हारकर मानसिंहजी भाग निकले उस वक्त बूंदी की फौज नै उन के आगे अर्ज करी कि हम कूं हुक्म होवे तो हम लडने कूं तयार हैं और आप का हट जाणा ठीक नहीं जो हम इसी तरह पीछे जावैंगे तो बूंदी की सरकार मैं हमारी नेकनामी नहीं होगी परंतु जब मानसिंहजी का दिल नहीं चला तो फेर फौज पीछी आई संवत १८६७ मैं विसुसिंहजी २०२ के काका बहादुरसिंहजी के बेटे बलवंतसिंहजी नै नैणवा का किला अपणे कब्जे मैं करलिया भजने-

री के संकरसिंह साँवत के हाडे नै मिल कर ये किले के भीतर लेलिये और भी कई किले के निगहवान इन मैं मिलगये और जो इहाँ का किलेदार गुमान धाभाई था वह दगे सैं मरवाडाला इस के मरणे सैं और जो किले के निगहवान थे उन का दिल टूटगया और वे वहाँ सैं भाग आये जब यह खबर बूँदी पहुँची तब बिसुसिंहजी २०२ नै फौज भेजी चार महीने तक लडाई होती रही॥ आखिर बलवंतसिंहजी किले सैं निकाल दिये फेर कितनौंक दिनौं तक ये बूँदी के मुल्क मैं लूट करते रहे आखिर कुसूर माफ कराणे वास्ते बिसुसिंहजी २०२ की हजूर मैं हाजिर हुवे इनौं नै तो कुसूर माफ कर दिया परंतु ये तो फेर भी ऐसाही काम करते रहे बलवंतसिंहजी ने महाराव रजाराम सिंहजी २०३ के वक्त मैं कोटे की तर्फ दंगा उठाणा चाहा इस बात की खबर पाकर माधोसिंहजी झालानै साहिब अजंट कालफिल्ड कूं इस बात की खबर दी उन्हीं दिनों मैं बलवं

तसिंहजी की पाटण मैं जाणे की खबर सुण कर अजंट साहिब ने बूंदी मैं इस मजमून की इत्तिलाअ़ करी कि महाराजा बलवंतसिंहजी का चाल चलन कई दिनों सैं बेवाजिब सुना जाता है और इन दिनों मैं इन की पाटण मैं आने की और कोई तरह का फिसाद उठाने की खबर है सो या तो इन के चालचलन की जिम्मेवारी करणी चाहिये नहीं तो यह इजाजत हो कि इन का मुनासिब बंदोबस्त हम कर लेवैं उस वक्त श्री दरबार तो कम उमर थे परंतु अहलकारों के दिल मैं यही ठहरी कि बलवंतसिंहजी का यह भरोसा नहीं है कि आगे कूं भी इन का चलन दुरुस्त रहै इस मैं जिम्मेवारी करणी मुनासिब नहीं जब इहां का जबाब पाकर साहिब नैं बलवंतसिंहजी बुलाये और इनों ने लडाई पर कमर बांधी तो लडाई मैं मारे गये इसी लडाई मैं इन के भाई सेरसिंह जी के बेटे धौंकलसिंहजी और फतहसिंह जी भी मारे गये जब संवत १८७३ मैं सरकार

अंगरेज नै इस तर्फ के रजवाडौं के साथ अहद नामा करणे कूँ उन के भले आदमी बुलाये तब कोटा के महारावजी का और अंगरेज बहादुर का अहद नामा ठहराणे कूँ जालिम सिंहजी ने दिल्ली मैं भले आदमी भेजे उस वक्त सैं पहलाहीं जालिम सिंहजी ने इंद्रगढ १ खातोली २ बलवण ३ अंतरदा ४ करवाड ५ पूसोद ६ पीपलदा ७ वग़ैरे के महाराजा जो बूंदी के नीचे थे· जालिम सिंहजी ने साहिब सैं उन कूँ कोटे के शामिल लिखवा लिया जो कि और रजवाडौं के भले आदमी गये उस वक्त बूंदी सैं भी गये थे परंतु रस्ते मैं लुटेरौं सैं ऐसा दंगा होगया कि बूंदी वाले आदमियौं कूँ पीछा आणा पडा इतने दिनौं मैं कोटे वालौं का अहद नामा होगया था जब दूसरी बार बूंदी सैं भले आदमी फेर तयार किये इतने मैं टाड साहिब इस तर्फ आपहुंचे साहिब कूँ वहां अच्छी तरह मालूम होगया कि इंद्रगढ वग़ैरे कोटडी पहलौं बूंदी के नीचे थी

परंतु साहिब ने कहा कि अब तो हम लिख चुके हैं इसीवास्ते साहिब ने अपने बणाये हुवे टाइना मे मैं यह लिखा है कि इंद्रगढ वगैरै कोटडियें बूंदी के नीचें होय तो ऐन इनसाफ की बात है संबत १८७४ मैं माघ सुदि ५ के दिन दोनों सरकारों का अहदनामा होगया जब संबत १८७७ मैं महाराव किसोरसिंहजी और जालिमसिंहजी के आपस मैं दंगा होगया था और महारावजी भागकर बूंदी मैं आगये थे उस वक्त विसुसिंहजी २०२ ने बडी खातिरदारी करी और सब तरह समझाये कि कोटा आप का ही है जालिमसिंहजी की क्या ताकत है कि कोट कूं रखले वें परंतु कितनेक महीने रह कर महारावजी कुछ विचार कर दिल्ली कूं चलेगये संबत १८७८ आषाढ सुदि १५ के दिन विसुसिंहजी २०२ ने इस जहान सैं कूंच फर्माया इन्हौंने छत्र महल सैं लगताही उत्तर की तर्फ अखाडा बणवाकर हनुमानजी पधराये और बजरंगविलास नाम बाग

जो बूँदी सैं पश्चिम की तर्फ नया बाग नाम कहलाता है बणाया और किले तारागढ मैं बडा और छोटा ये दो जीव रखे और चौगँड दरवाजे सैं लेकर महलौं तक और भैरू दरवाजे सैं लेकर निर्भय बुर्ज तक कोट बडकी रिवास गोपाल बुर्ज सुखमहल नैणवा मैं गुमान सागर तालाव ये बणाये इन के राणीजी साहिबा जोधपुरीजी कृसमगढ के राजा प्रतापसिंहजी के बेटी नै बूँदी सैं दक्षिण की तर्फ धर्मशाला बणाई और उस मैं हनुमानजी की मूर्त्ति पधराई वहाँ आये हुवे मुसाफिर कूँ डेरा भी मिलता है और खाणे कूँ भी मिलता है और उन की खवासजी सुंदर सोभाजीने नोलखा तालाव के किनारे पर सुंदर घाट बणवाया इन मैं धर्मशाला महाराव राजा साहिब रामसिंहजी २०३ के राज मैं बणी है जो कि बिसुसिंहजी २०२ के तीन बडे महाराजकुमार का उन के आगे ही स्वर्गबास हो चुका था इस वास्ते संवत १८७८ के श्रावण वदि १२ के दिन साढे नौ वर्ष की उमर

मैं महारावराजासाहिबरामसिंहजी २०३ गद्दीपर बिराजे श्रावणसुदि ३ के दिन अजंटराड साहिब बूंदी आये दूसरे दिन दरीखाना हुवा साहब की तर्फ सें हाथी घोडा गहणा शस्त्र शिरोपाव दस्तूर माफिक आया इन के भीमसिंहजी २०४।१ रङ्गनाथसिंहजी २०४।२ रघुवीरसिंहजी २०४।३ रङ्गराजसिंहजी २०४।४ रघुराजसिंहजी २०४।५ ये पांच तो असल और अर्जुनसिंहजी १ गोवर्द्धनसिंहजी २ जगन्नाथसिंहजी ३ ये तीन खवासजी के हुवे इन में भीमसिंहजी २०४।१ फारसी और संस्कृत इल्म सातारी बहादुरी तीरंदाजी जबाबदिही वगैरे कई बातों में एक ही थे और रङ्गनाथसिंहजी २०४।२ बडे बुद्धिमान थे परंतु संबत १९१३ में रङ्गनाथसिंहजी और संबत १९२५ में भीमसिंहजी २०४।१ इस दुनियां सें कूंच फर्मागये महारावराजारामसिंहजी २०३ नें गद्दीपर बिराज कर इस राज कूं ऐसी रौनक बख्शी कि जिस का लिखणा इस छोटी सी कलम सें कहां हो सक्ता है परंतु कवि

लोगों ने सबकहा कि मौकी इसी ढबसैं तारीफकरी है इस वास्ते फिकर की बात है कि जिन् लोगों ने इन कूं नहीं देखा है वे इस हमारे लिखणे कूं कवि लोगों के तौर पर समझैंगे परंतु जो दाना और अकल मंद हैं वे जुरूर हर एक आदमी सैं इन की तारीफ सुण कर हमारे लिखे पर रस नहीं मारैंगे ये सत्य बोलणे वाले दयावान विद्या के आदर करणे वाले न्याय मैं तर्फदारी नहीं करणे वाले दस्तूर पर कायम कौल के सच्चे विद्यावान मनसूबे के वृहस्पति अपणे धर्म मैं पक्के आप तो अर्हत मत मैं हैं परंतु आप की रैयत और चाकरौं के वास्ते यह ताकीद नहीं कि वे भी इसी रस्ते चलैं जिस जिस आदमी का जिस जिस मत मैं मन हो वह उसमैं चले तो ये बहुत राजी रहते हैं और आदमी की पिछाण मैं इस तरह के कि जो आदमी थोडे वक्त भी इन की हजूर हाजिर रहै उसकी बुराई भलाई सैं पूरे वाकिफ हो जाते हैं इन महाराव राजा साहिब का ब्याह जोधपुर के महाराज

मानसिंहजी की बाईजी सैं कहवाया महाराज मानसिंहजी की तर्फसैं उन के बाईजी साहिबा की चाकरी मैं बहुत से मारवाडे बूंदी मैं रहा करते थे उन मैं बहुत से बुरे चलन वाले थे भले आदमियौं कूं दुःख देते थे जब बूंदी सैं इन की शिकायत राज की तर्फसैं मानसिंहजी पास भेजी गई तो उनौंनै भी उस पर चित्त नहीं दिया और उन मारवाडौंनै जो बूंदी के कामदार किसनरामजी धाभाई की चुगली लिखी उस पर चित्त देकर मानसिंहजीनै दंगा करणे के इरादेसैं आप के बाईजी कूं बुलाणे के बहाने सैं २०० सवार ३०० पैदल सिपाही बूंदी भेजे जब वे बूंदी मैं आपहुंचे और उन दिनौं मैं श्रीदरबार के छोटे भाई गोपालसिंहजी की बरात गागरणी कूं और विनयसिंहजी की बरात उणियारे कूं गई थी दोनौं बरातौं के साथ सरकारी फौज जियादाथी बूंदी मैं थोडी थी इस मौके कूं पाकर इहां महाराणीजी साहिबा राठोडजी के कामदार व्यास रूपराम

महाजन सरदारमल राठोड मेडत्या बख्तसिंहजी नै सालजी नामराजपूत कूँ बुलाकर यह कहा कि तुम धाभाईजी कूँ मारडालो इसने कुछ समाचार पहुँचाणे के बहाने सैं कचहरी मैं धाभाई किसनरामजी के पास जाकर तलवार सैं धाभाईजी मारडाले जिस वक्त सालजी नंगी तलवार सैं हीं कचहरी सैं भाग कर चला उस वक्त बख़शी शिवलाल नै पकड लिया उसी वक्त पहरे वाले सिपाही नै उस कूँ मारडाला और जो २५।३० आदमी सालजी की मदद वास्ते हजारी दरवाजे सैं बाहर सामो खडे थे वे उस कूँ मारा देख कर आप आप की हवेली मैं जा घुसे जब यह खबर दरबार मैं मालूम हुई तो हुक्म हुवा कि यहां सैं सिपाहियों कूं लेकर कितनेक उमराव जावैं और वे सीधे रस्ते गिरफ्तार होणा मंजूर करैं तो यों पकडलावैं नहीं तो हवेलियों कूँ घेर कर पकडलावैं उमरावों ने हवेलियों के पास जाकर हुक्म माफिक सीधे रस्ते गिरफ्तार होणे वा-

से कहा जब इनौं नै नहीं मानी तो मारवाड़ौं की हवेलियें घेरी गई और शहर के दरवाजे बंद कर दिये क्यूंकि जोधपुर की तर्फ़ सैं भेजे हुवे सवार और सिपाही चौगान दरवाजे के बाहर पड़े थे फेर वे भी हवेलियौं का घिरना सुण कर बूंदी सैं पांच कोस पर जा उतरे जब हवेलियौं मैं सैं मारवाड़ौं नै बंदूक चलाणा शुरू किया तो इस तर्फ़ सैं भी लड़ाई होणे लगी इस बात के निश्चय करणे वास्ते कोटे सैं मिस्टर चार्लिसनिवलन अजंट साहिब आये जब साहिब ने आप के ख़बरनवीस वग़ैरे सैं अच्छी तरह निश्चय कर के दरबार सैं कहा कि आप की क्या मर्ज़ी है जब दरबार ने यह फर्माया कि जो इस बड़े क़ुसूर का पूरण दंड इन कूं नहीं मिलेगा तो हमारी सरकार का कोई डर नहीं मानेगा हुक्म का ढीलापण मालूम होगा साहिब अजंट नै कहा कि थोड़ी देर माफ फर्मावें कि जो मैं भी मेरी तर्फ़ सैं उन सैं पूछ लूं जब साहिब नै उन के वास्ते यह लिख भेजा कि जो

तुम आप ही गिरफ्तार होजावोतो दरबार मैं तुमारा इन्साफ होसकेगा इस परभी उन्हौंने आग्या मंजूर नहीं किया तब साहिब चुपके होरहे जब घेरा देणे मैं घबराकर मारवाडे बाहर निकले तो वे तीनौं जो इस काम की जड थे सो तो मारडाले और बाकी मारवाडे बूंदी मैं निकाल दिये इस बात के सुणने मैं जोधपुर के सवार पैदल भी जोधपुर चलेगये साहिब अजंट कोटेकूं गये और साहब अजंटने इस बात की खबर साहब लोगों मैं भेजी संबत १८९० के काल मैं जब लोगों को रुपैयौं सैं भी नाज नहीं मिलने लगा तब इन महाराव राजा साहिब नै आप के भंडारौं सैं बाजार के भाव सैं डेढ भाव नाज दिलवाकर लोगौं का जीव बचाया संबत १८९२ मैं इनौं नै बहुत अच्छा यह काम किया कि जो राजपूत लोग जन्मतेहीं अपणी लडकियौं कूं मारडालते थे यह चाल बूंदी के राज मैं सब जगह मोकूफ करदी अंगरेज़ौं की तर्फ़ सैं तो संबत १९०१ मैं लिखा

आयाथा संबत १८९६ मैं इनौंनै पुष्करजीकी यात्रा करी और तीन बार और वक्त भी पुष्करजी मैं पधारणा हुवा परंतु उसैं केवल यात्रा का ही सबब नहीं था संबत १८९७ मैं इन के भाई गोपालसिंहजीनै बेमुनासिब चाल मैं बहुत मन दिया तब पहलां तो इनौंने बहुत समझाये जब नहीं समझे तब उन की हवेली मैं नजरबंद करे और उसी हालत मैं संसार सैं कूंच फर्माया इन श्रीमहारावराजा रामसिंहजी २०।३।३ नै संबत १८९८ के पोषसुदि २ के दिनसैं पूर्व के तीर्थों की यात्रा शुरू करी और संबत १९०० के आषाढबदि १३ के दिन बूंदी मैं दाखिल हुवे इन अठारे १८ महीनों मैं मथुरा १ वृंदावन २ प्रयाग ३ काशी ४ गया ५ चित्रकूट ६ वगैरै बहुत से तीर्थों की यात्रा करी बहुत सा रुपैया और जमीदान करी इस यात्रा मैं लाटसाहिब और कई साहिबों सैं मुलाकात हुई संबत १९०४ मैं वह पाटण का परगना जो दलेलसिंहजीनै मरहटौं कूं दियाथा इनौंनै

अंगरेज़ोंसैं पीछा लिया जब कि संवत् १९१४ मैं सरकार अंगरेज़ी फौजनें बागी होकर दंगा किया उसकी इत्तिलाअ़ का खरीता लेफ्टिनेंट गवर्नर जनरल्ल ज्यानरसल्ल काल्विन साहिब आगरे के का लिखा हुवा तारीख १९ मई सन् १८५७ का एक इश्तिहार के साथ और एक खरीता साहिब अजंट हाडौती का बूंदी के मुल्क मैं नाकौं और घाटौं के बंदोबस्त के वास्ते ये दोनौं खरीते पहुंचे इहां उन के लिखे बमूजिब बूंदी के मुल्क के नाकौं घाटौं का बंदोबस्त किया आगरे के खत के जवाब मैं लिखा गया कि सरकारी काम मैं आप लिखैं जिस जगह फौज लेकर मैं खुद जाकर काम दूं उस के जवाब मैं खरीता इस मजमून का पहुंचा कि आप के खरीते पढने सैं बहुत खुसी हुई आप अहद नामे पर कायम हैं आप एजंट गवर्नर और एजंट साहिब के कहे माफिक अपने मुल्कका बंदोबस्त रखैं जब नीमच की छावनी मैं बागी लोगों नैं

दंगा कियाथा उसके बंदोबस्त करनैंकूं बरटन साहब एजंट हाडोतीने बूंदी कोटा और झालावाड की फौजचाहीतो उनके चाहने के माफिक फौज और खास सरदार नन्दी की साहब एजंट के साथ भेजे बूंदीकी फौजनै साहिब एजंट और करनैल एलियट साहब नीमच की छावणी के अफसरइन की मरजी माफिक फरमाबरदारी और तन्दिही करी इस मुकदमैंमें एजंट गवरनर जनरल एजंट हाडोती कमान अफसर छावनी नीमच इनके कई खरीते और वकील के नाम पर्चे आये इनसब का मजमून मिला के लिखाजाता है साहब एजंट के साथ बूंदी कोटा और झालावाड की फौज थी जिसमैं सरकार बूंदी की फौजनै सरकार अंगरेजी के काम मैं बहुत्त जाँफिसानी और तन्दिही की सो यह लायक तारीफ और नेकनामी के है उससे छावनी का बंदोबस्त अच्छी तरह रहा और कोटे की फौज नै वक्त पर इनकार किया और सूरत दिखलाई बल्कि बलवाकर

नाचाही उस वक्त मैं फौज बूंदी ने हुक्म माफिक काम दिया और किसी बात का उजर न किया सो यह बात आपकी दोस्ती खैरख्वाही और खैरसगाली की आईने की तरह जाहिर है सो पत्थर की लकीर के माफिक साहिब लोगों के दिल पर नक्श कीगई है सो यह सलूक कभी भूलना नहीं होगा परमेश्वर इसका फल देगा अगर आप के दिल मैं यह शुबहा गुजरा हो कि साहिब एजंट ने कोटे वालों को तोपदी और हम कौ नदी सो इस का खयाल हरगिज़ दिल मैं न लावैं कि तोप देने का सबब सिर्फ खातरदारी का है कि ऐसा न होय कि ये कुछ दंगा करैं और हम कूं अपनी आंख दिखलावैं फेर साहिब एजंट और नीमच के साहिब के हुक्म सैं फौज वापिस बूंदी आगई और नाके घाटों के बंदोबस्त पर तईनात की गई जो कि माजी साहिब श्रीजोधपुरीजी के पहलों सैं बीमारी चली आती थी सो कार्तिक के दिनों मैं जियादा बध कर कार्तिक कृस ११ के दिन परलोक होग

या सो श्रीहुजूर तो लोकआगतरीतिसैं किया कर्मसैं लगे रहे उन दिनौं मैं यह खबर मालमहुई कि कोटे की फौजनै बारटन साहिब दोनौं बेटौं के साथ बंगले मैं कतल कर दिये यह सुन कर फिकर किया और फर्मोया कि इस बात का पहलां हाल मालम होता तो मैं सुन तेही आप जाकर साहिब कूं यहां ले आता यह वक्त सरकार के साथ दोस्ती है उस मैं जिल्द लगाणे का था मगर अब कुछ इलाज नहीं रहा इस तरह की फिकर की बातैं होती रहीं फेर उन दिनौं मैं करणे लायक काम कया सुनना वगैरै करते रहे फेर कोई दिनौं मैं बागियौं की खबर कहीं कहीं की आती रही संवत १९१४ के आषाढ के दिनौं मैं गैणोली की तर्फसैं जो बूंदी के इलाके मैं है बागियों की फौज आई इहां नाकौं घाटौं की ओर शहर कोट और किले की समाल होती रही थी उस मैं आषाढ शुक्ल ८ के दिन शहर कोट की समाल पर श्रीहजूर का पधारणा हुवा था सो

शहर कोट की चौकियों कूं और जहाँ जहाँ तोपें थीं सब जगाह कौं संभाल कर किले पधारना हुवा इतने मैं खबर मालूम हुई कि बागियों की फौज कितनीक तो शहर के पास सर के नज्दीक आपहुंची और पीछे मैं लाम लगरही है इस खबर पर यह हुक्म हुवा कि शहर कोट दरवाजों की सम्हाल परहैं सब होशियार रहै और अगर फौज बागियों की कोटकी तर्फ बढै तो बेशक उस सें लडाई करैं अगर उहां ठहरी तो किले सैं तोपें चलाई जावैंगी इस मैं जो हटगये तो ठीक है नहीं तो बाहर निकल के लडने का हुक्म होवै तैसें करैं मैंने तो सरकार अंगरेजी सें दोस्ती मजबूत रखी है जैसें ये हटैंगे तैसें हटाये जायंगे इस तरह हुक्म फरमा कर कमर बांधकर किले के हनुमान बुर्ज नाम बुर्ज पर पधार कर तोपों कौं सम्हाल कर तोपों के चलाने का हुक्म फरमाया जब तोपों का चलना शुरू हुवा तो बागियों की फौज हटकर चली गई रस्ते मैं बूंदी के इलाके मैं

कहीं कहीं नुकसान करती गई आखिर सरकार अंगरेज ने बागियों कूं खूब सजा दी और जैसा उन ने किया था वैसा पाया जो कि यह मुल्क हिंदुस्तान सरकार अंगरेज की तर्फ सैं अंगरेजी कंपनी बहादुर के वास्ते अमानतसैं पर रखा था और सरकार कंपनी की मार्फत ही सब रियासतौं के साथ अहद पैमान हुवे थे सो अब सैं सरकार कंपनी सैं यह हिंदुस्तान लेकर ख़ास बादशाही कब्जे मैं कर लिया गया इस का इश्तिहार मलिका मुअज़्ज़मा की तर्फ सैं जारी हुवा लिखा हुवा तारीख १ नवम्बर सन् १८५८ का पौष शुक्ल ६ संवत १९१५ के दिन आया जिस मैं यह लिखा है कि ज्योंकि कई तरह के भारी सबबौं सैं हमने धर्म्मसम्बन्धी और राज्यसंबंधी प्रधानौं और प्रजा के मुखतारौं की जो पार्लीमैंट मैं जमा हुए सलाह और मंजूरी के साथ इरादा किया है कि हिंदुस्तान का मुल्क का बंदोबस्त जो हमने आज तक आनरेबल ईस्ट इन्डिया कंपनी को

अमानत सौंप रक्खा था अपने अधिकार मैं लेवैं इसलिये अब हम इश्तिहार देते हैं और प्रगट करते हैं कि ऊपर लिखी हुई सलाह और मंजूरी के बमूजिब उक्त अधिकार अपने हाथ मैं लेलिया और इस इश्तिहार की रू सैं अपनी सब प्रजा को जो उस मुल्क मैं है ताकीद फर्माते हैं कि हमारे और हमारे वारिस और जानशीनों के साथ वफादारी और सच्ची ताबेदारी करो और जिस किसी को हम अपने नाम और अपनी तरफ सैं अपने उस मुल्क के बंदोबस्त के लिये वक्त बवक्त आगे मुक़र्रर करना मुनासिब समझैं उस का हुक्म मानती रहे और जो कि फर्जंद अर्जमन्द और मोतबर सलाहकार चार्लस जान वैकौंट केनिंग साहिब बहादुर की वफादारी लियाक़त और समझ पर हम को ख़ास कर के पूरा भरोसा और दिलजमई हासिल है इसलिये उक्त वैकौंट केनिंग साहिब बहादुर को हमारे उस मुल्क का बंदोबस्त हमारे नाम

से और उमूमन् सब काम हमारी ओर और हमारे नाम से करने के लिये हमारे उन सब हुक्म और क़ानूनों के बमूजिब जो हमारे किसी बड़े वज़ीर की मारिफ़त उस के पास वक़्त ब वक़्त पहुँचे हमने उस मुल्क का अपना पहला वैसराय अर्थात् काइम मुक़ाम और गवर्नर जनरल मुक़र्रर फ़र्माया और जो सब लोग कि अब किसी उहदे पर क्या मुल्की और क्या फ़ौजी सरकार आनरेबल ईस्ट इन्डिया कम्पनी की नौकरी मैं दाखिल हैं इस इश्तिहार की रू से हम उन सब को अपने उहदों पर बहाल और क़ायम रखते हैं लेकिन वह सब लोग हमारी आयन्दः मर्ज़ी और उन सब आईन और क़ानूनों के ताबे रहेंगे जो इस के बाद जारी किये जावैं और हिंदुस्तान के रईस और सर्दारों को हम इत्तिला देते हैं कि जो क़ौल क़रार और अहदनामे आनरेबल ईस्ट इन्डिया कम्पनी ने उन के साथ किये हैं या उस की इज़ाज़त सैं किये गये हैं हम उन

सब को क़बूल और सब मंज़ूर फ़र्माते हैं और बहुत इह्तियात से बहाल और बक़रार रक्खेंगे और उमेद है कि उन सब रईस और सर्दारौं की ओर सैं भी ऐसाही लिहाज रहेगा जो सब मुल्क कि अब हमारे क़ब्ज़े मैं है हम उन्हैं बढ़ाना नहीं चाहते और जबकि हम ऐसा न होने देवैंगे कि दूसरे लोग हमारे मुल्क या अधिकारौं पर निःशंक हाथ बढ़ावैं तो हमभी दूसरौं के मुल्क या अधिकारौं पर हाथ बढ़ाये जाने की इजाज़त न देवैंगे हम हिंदुस्तान के रईस और सर्दारौं के अधिकार और दर्जे और उन की प्रतिष्ठा ऐसीही समझैंगे जैसी अपनी समझते हैं और हमारी इच्छा है कि वे सब और हमारी अपनी प्रजाभी उस बढ़ती और चालचलन की दुरुस्ती को हासिल करैं कि जो केवल मुल्क मैं सुलह और अच्छा बंदोबस्त रहने सैं हो सक्ती है जो काम कि हम को अपनी और सब प्रजा के वास्ते करने उचित और कर्तव्य हैं वही हिंदुस्तान वालौं के लिये भी

हम अपने ऊपर वाजिब समझैंगे और सर्वशक्तिमान परमेश्वर की कृपा सैं उन सब कामों को वफ़ादारी के साथ सच्चे दिल सैं करते रहेंगे यद्यपि हम को ईसाई मत के सच्चे होने का दृढ़ निश्चय है और उस मत से जो तसल्ली कि हासिल होती है उस को हम शुकर गुज़ारी के साथ स्वीकार करते हैं तथापि न अपना हम इस बात मैं अधिकार समझते हैं और न हम को इस बात की इच्छा है कि जबरदस्ती अपनी प्रजा को भी उस का निश्चय दिलावैं यह हमारा बादशाही हुक्म और मर्ज़ी है कि न किसी की उस के मत के कारन पक्ष की जावे और न किसी को उस के कारन तकलीफ दी जावे वरन सब लोग बराबर एक ही तौर पर विना पक्षपात कानून के बमूजिब रक्षा पावैं और जो लोग कि हमारे तहत मैं इख़्तियार रखते हैं हम उन को बड़ी ताकीद सैं हुक्म देते हैं कि वे हमारी किसी प्रजा के मत के निश्चय और पूजा मैं क-

भी कुछ दस्तन्दाजी न करें नहीं तो उन पर हमारा अत्यंत कोप होगा और यह भी हमारा हुक्म है कि जहाँ तक बन पड़े हमारी प्रजा को चाहे जिस जात और चाहे जिस मत्त की क्यों न हो उन की विद्या योग्यता और दियानतदारी के बमूजिब जिन उहदों का काम कि वे हमारी नोकरी में अनजाम देसकें उन को बेरोक टोक और बिना पक्षपात के दियेजावें हिंदुस्तान के लोग धरती के साथ जो उन के अधिकार में चली आई है बड़ी मुहब्बत रखते हैं यह बात हम को बखूबी मालूम है और हम को इस बात का बड़ा लिहाज है और हम को मंजूर है कि वाजिबी मुतालबे सर्कारी अदा करने पर उन के उस धरती के सारे अधिकारों की रक्षा करें और हम हुक्म देते हैं कि क़ानून बनानें और जारी करने मैं हिंदुस्तान के पुराने अधिकार और दस्तूर और रीत रसमों का उमूमन ठीक लिहाज रक्खाजावे जो आफतें और खराबियां कि हिन्दुस्तान पर उन फसादी लोगों

के कर्त्तबसैं पड़ी हैं जिन्हौंने झूठी २ अफवाहौं सैं अपने देशवालौं को बहकाकर उनसैं खुले बन्दैं बलवा करवादिया हमको उन का बड़ा अफसोस है हमारी शक्ति तो रणभूमि मैं उस बल के दबानेसैं प्रगट होगई अब हम उन लोगौं के अपराध क्षमा करके जो इस ढब सैं बहकावट मैं आगये लेकिन फिर तावेदारी की राह पर चलना चाहते हैं अपनी दया प्रगट करते हैं इस विचार सैं कि अधिक खूनरेज़ी न होवैं और हमारे हिंदुस्तान के देशौं मैं झटपट अमन चैन होजावे। हमारे वैसराय और गवर्नर जेनरल बहादुर ने एक इलाक़े मैं जिन सब लोगौं ने कि इस दुखरूप बलवे सैं हमारी सरकार के विरुद्ध अपराध किये हैं बहुतौं को उन मैं सैं कई एक शर्तौं पर अपराध क्षमा होने की आसा दी है और जिन के अपराध कि क्षमा होने की पहुँच सैं बाहर हैं उन्हैं जो सजा दी जायगी वह भी ज़ाहिर करदी है हम अपने वैसराय और गव-

नरजेनरल का यह काम मंज़ूर और क़बूल करते हैं और उस के सिवाय नीचे और भी हुक्म ज़ाहिर फ़र्माते हैं सिवाय उन लोगों के जिन के वास्ते साबित हुआ है या अब साबित हो कि उन्हों ने आप सर्कार अंगरेज़ की प्रजा के क़तल में शराकत की बाक़ी सारे अपराधियों पर हमारी दया होगी क्योंकि जिन्हों ने आप सर्कार अंगरेज़ की प्रजा के क़तल में शराकत की उन पर दया करना इन्साफ़ की रू से मना है जिन लोगों ने क़तल करने वालों को जान बूझ कर पनाह दी या बलवाइयों के सर्दार और उन के बहकाने वाले बने उन के केवल जीवदान का वादा हो सक्ता है लेकिन ऐसे आदमियों को वाजिब सज़ा देने में उन सब बातों का जिन के सबब से बहक कर अपनी ताबेदारी से फिर गये पूरा लिहाज़ किया जायगा और उन लोगों के वास्ते जो बिना सोचे विचारे फ़िसादियों की झूठी बातों को मान कर गुनहगार बने बड़ी रिआयत

कीजावेगी बाक़ी और सभोंमें जो सर्कार के मुक़ाबले में हथियार लियेहुये हैं इस इश्तिहार में हम वादा करते हैं कि जब वे अपने घरोंको लौटजावें और सुलह के कामों में हाथ लगावें उन के बिलकुल कुसूर हमारी निसबत और हमारी सल्तनत और हमारी मर्तबेकी निसबत बेशर्त माफ और दरगुज़र और फरामोश कर दियेजावेंगे और हमारी यह बादशाही मर्ज़ी है कि ये रहम और माफ करने की शर्तें उनलोगों के वास्ते हैं जो पहली तारीख जनवरी सन १८५९ ई० से पहले इनकी तामील करें हमारी यह जी में अभिलाषा है कि जब परमेश्वर की कृपासें हिंदुस्तानमें फिर अमन चैन होजावे तो वहां सुलह के उद्यमों को उन्नति देवें और प्रजा के सुख की चीजें बनावें और ऐसाबंदोबस्त करें कि वहां की सारी हमारी प्रजाको लाभहो उन की वृद्धिमें हमारी शक्ति है उन की संतुष्टतासें हमारी रक्षा है और उन की शुकरगुज़ारी यही

हम को बडी प्राप्ति है सर्वशक्तिमान परमेश्वर हम को और जो लोग कि हमारे तहत में इख़्तियार रखते हैं सब को ऐसी शक्ति देवे जिस मे हमारी यह अभिलाषा हमारी प्रजा की भलाई के लिये भली भाँति परिपूर्ण हो यह इश्तिहार सारे हिंदुस्तान में जारी हुवा और अमन चैन जम गया उन्हीं दिनौं मैं बूंदी के मुल्क मैं रहणे वाले मीणों ने बडी लूट मार मचारी थी उस वक्त इनौं ने मीणौं कूं जेर करके मुल्क मैं चैन किया बलवंतसिंहजी के बेटे भीमसिंहजी अपणे पिता के चलण पर चलने लगे कितनीक बातें उन्होंने ऐसी करी कि जिस सैं सरकार बूंदी के बंदोवस्त मैं ख़लल पड़ै और तुहमत आवै जो कोई सरकार का हरामखोर होता उस कूं पनाह देणा शुरू किया जब बूंदी की तर्फ सैं भले आदमी भेज कर समझाये तो कुछ भी ध्यान मैं नहीं लाये सरकार ने बहुत गम खाया परंतु जब सरकार के कुसूरवार खैराड के मीणे लोगों कूं गोठड़े

मैं पनाह दी तो सरकार ने उन मीणौं कूं पकडादेणे वास्ते हुक्म भेजा तो सामना करणे कूं कमर बांधी जब भौमसिंहजी ने लडाई शुरू करी तब फौज ने भी ठीक दीखा सो किया आखिर भौमसिंहजी भाग गये तो उन की जागीर ज़ब्त करी गई इनौं ने संवत १९१९ मैं गंगाजी की यात्रा करी और संवत १८८८ मैं अजमेर मैं गवर्नर जनरल साहिब बहादुर डलहोसी के साथ संवत १८९९ मैं प्रयाग मैं और संवत १९०० मैं आगरे मैं गवर्नर जनरल साहिब बहादुर अलनरा के साथ और संवत १९१९ मैं आगरे मैं फाल्गुन मैं गवर्नर जनरल साहिब बहादुर यलजन के साथ और संवत १९२७ मैं अजमेर मैं गवर्नर जनरल साहिब बहादुर मेवो के साथ मुलाक़ात की और संवत १९२२ के साल मैं फिर काशीजी की यात्रा करी इनौं ने आप के राज के वक्त मैं बहुत से अच्छे अच्छे काम किये उन मैं से कोई कोई नीचे लिखे जाते हैं पहले वक्त मैं आसोज और चैत्र के नव

रात्रौं मैं देवी के पूजन के वक्त बहुत से भैंसे और बकरे बलिदान के नाम सैं मारे जाते थे सो इन्नों ने सिवाय एक दो जगह के सब मोकूफ कर दिये इन के बालक पणे मैं जो उदक जमीं किसी कारण सैं जब्ती मैं आगई थी सो पट्टे परवानौं की सनदों माफिक बहाल कर बखशी और बहुत से बेवारिस गरीब लोगौं की पालना का बंदोबस्त किया और बडे बडे इल्मदार पंडितौं कूं रख कर कितनेक ग्रंथ बणवाये और ग़ोल विद्या के अच्छे अच्छे गोलयंत्र बणवाये इन महाराव राजा रामसिंह जी ने चौगान दर्वाजे के बाहर दूसरा दरवाजा बणवाया १ और हजारी दरवाजे के बाहर तिबारी २ और हजारी दरवाजे के भीतर इकदरा ३ और उसके नज़दीक तिबारी ४ और मोती कुवे के पास की तिबारी जिसैं विष्णुस्वामी रहते हैं ५ और न्याय की कचहरी ६ और मुल्क की कचहरी ७ और बडा तबेला ८ और छोटा तबेला जिसकूं खास पायगो कहते हैं ९

और छत्रमहलमैं फुहारे १० हौज ११ और तिवारी १२ वृंदजी के महल सैं किले के दरवाजेतक फर्स की सडक १३ मंगलगजदर्वाजे के बाहर दरवाजा १४ और तिवारी १५ किले के भीतर बंगला १६ और चाउंड दरवाजे के बाहर तिवारी १७ और चामुंडाजी का मंदिर १८ और शिकारबुर्ज १९ पुष्पसागर के पास बाग मैं महल २० और कुंड २१ ये बणवाये और कई पुराणे मकानों की मरम्मत करवाई ॥ इति श्रीमन्महाराजाधिराज हड्डुकुलतिलक महाराव राजा श्री रामसिंह बुन्दीश्वराश्रित श्रीसूर्य्यमल्ल कविनिर्म्मित वंशभास्कर सारांशभूतो गङ्गा सहाय निर्म्मितो वंशप्रकाश नामा ग्रन्थः समाप्तः ।लिपिकृतं नागर ब्राह्मण मुरलीधर रहने वाला सेखावाटी मैं क़सबा कोटपूतली का ज़िलअ जयपुर परगनह खेतड़ी मिती माघ शुक्ला २ संवत १९३४ ॥ शुभंभूयात ॥

वंशप्रकाश का शुद्धाऽशुद्धपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	८	वयान	बयान	१५	१२	हरियूर्णजी	हरिपूर्णजी
२	१७	तयार	तय्यार	१६	६	तयारी	तय्यारी
३	९	आवू	आबू	१७	३	देवीजी	देवीजी
३	१०	हुये	हुवे	१७	६	वेगो	गो
३	२६	बाँहँ	बाँह	१७	१६	हुये	हुवे
४	१	चाहुवाणजी	चाहुवाणजी	१७	१८	मुकरर	मुकर्रिर
४	४	यामदग्न्य	जामदग्न्य	१८	१५	पक्का	पक्का
४	९	जिह्न	जिह्व	१९	२३	चुदुलजी	चदुलजी
४	२४	जव	जब	२०	१८	उनव	उनके
४	२८	आ	औ	२०	१९	शत्रुजितजी	शत्रुजित्जी
५	१२	ऋपि	ऋषि	२१	३	इनके	उनके
७	२	जयंत जी भी	जयन्तजी२भी	२३	१	मुहुकर्म्माजी	मुहुःकर्म्माजी
८	१०	मारडाला	मारडाले	२४	१८	हुये	हुवे
९	१८	भटवल	भटदल	२५	३	गलेशजी	बालेशजी
१२	५	मैं	में	२५	४	वंगदेवजी	वंगदेवजी
१३	२	वलदेव	बलदेवजी	२५	५	पुष्ठ	पुष्ट
१४	७	महाधरनुजी	महाधनुजी	२५	१८	मुकलार	मुक्कलार
१५	१	हुई	हुवा	२६	१०	अभूवाज	अभ्रवाज

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२८	१६	तुलक्षी	तुलसी	४०	४	निगहवानी	निगहबानी
२९	९	सुवाहुजी	सुबाहुजी	४०	१७	अख्तियार	इख्तियार
३०	५	१७३।१७३	१७४।१७४	४१	८	जव	जब
३०	६	१७३	१७४	४१	११	वाकी	बाकी
३१	८	योश्वरजी	योगश्वरजी	४३	१	शाहाबुद्दीन	शाहाबुद्दीन
३२	१०	बंधगया	बधगया	४५	१८	जीको	जी
३४	२	बहुतसे रोका	बहुतसे रोके	४८	१	सौयेंगा	सौपूँगा
३४	९	काटलिया	काटे	४८	१६	सरणा	शरणा
३४	११	तालाव	तालाब	५०	१	भवरदेवजी	अमरदेवजी
३४	१७	वनवाया	बनवाया	५०	२४	गोस्ट	गोष्ट
३४	१७	अन्नल	अनल	५०	८	मामाके	मामाजीके
३५	९	बर्षों	बर्ष	५२	३	१४८१	४८१
३६	१३	महाराजकुमारोंको	महाराजकुमार	५३	१४	वाकी	बाकी
				५४	४	वना	बना
३६	१६	मूँछ	मूछ	५५	१	दामोर	दामोदर
३७	३	तयार	तय्यार	५६	८	१७३	१७२
३७	८	वा	या	५७	१	१७२	१७३
३७	१५	तयार	तय्यार	५७	३	एही	येही
३७	१९	तयारी	तय्यारी	५७	१८	१७७	१७६
३८	१७	सीने	मीने	५८	४	वेयूँ	वेघूँ

बं.अ.शु.प.

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५८	६	कूल्हराजी	कोल्हराजी	६५	१३	१८३	१८२
५८	६	बीऊ	बींऊ	६६	४	कोठ्या	कोट्या
५८	१५	छ ६	छः६	६६	१४	कोटए	कोटिये
५८	२५	बार	वार	६७	२५	चींहये	चाहिये
५८	२६	वींवार	बींवार	६७	६	बक्त	वक्त
५९	१	में	मैं	६८	११	वाकी	बाकी
५९	१६	के सर	केसर	७०	५	सीगोली	सींगोली
५९	२८	जी	जी	७०	७	ढ्ने	ढूने
६१	३	बंबाबदेमैं	बंबावदेमैं	७०	१८	खीचो	खींची
६१	७	घेर	घर	७१	२४	बिंऊ	बींऊ
६१	१६	कोभी	भी	७२	५	पधात्या	पधारे
६१	२२	मन सूबे	मनसूबे	७२	२२	काके	काका
६१	२४	बंबाबदे	बंबावदे	७२	२५	बेटा	बेटे
६३	३	बंबा बदे	बंबावदे	७२	१८	देवेंगे	देंगे
६३	११	१८३	१८२	७३	३७	वरसिंहजी	बरसिंहजी
६३	१२	१९१	१८१	७३	५	कसबा	कस्बा
६३	१७	हो	हैं	७३	८	जावड्	जावदु
६४	२	बग्घजी	बगघजी	७३	२५	वांध	बांध
६४	१३	१८७१६	१८२१७	७४	३	पावा	पाग
६५	१०	नायालजी	नायाजी	७४	११	कवि	कवि

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२८	१६	तुलक्षी	तुलसी	४०	४	निगहवानी	निगहबानी
२९	९	सुवाहुजी	सुबाहुजी	४०	१७	अरिव्नयार	इरिव्नयार
३०	५	१७३।१७३	१७४।१७४	४१	८	जव	जब
३०	६	१७३	१७४	४१	११	वाकी	बाकी
३१	८	योपूरजी	योगपूरजी	४३	१	शाहाबुद्दीन	शाहाबुद्दीन
३२	१०	बंधगया	बधगया	४५	१८	जीको	जी
३४	२	बहुतसे रोका	बहुतसे रोके	४८	१	सौपोंगा	सौपूँगा
३४	३	काटलिया	काटे	४८	१६	सरणा	शरणा
३४	११	तालाव	तालाब	५०	१	भवरदेवजी	अबरदेवजी
३४	१७	वनवाया	बनवाया	५०	२।४	गोष्ट	गोष्ठ
३४	१७	अन्नल	अनल	५०	८	मामाके	मामाजीके
३५	९	वर्षों	वर्ष	५२	३	१४८१	४८१
३६	१३	महाराजकुमारोंको	महाराजकुमार	५३	१४	वाकी	बाकी
				५४	४	वना	बना
३६	१६	मूँछ	मूछ	५५	१	दामोर	दामोदर
३७	३	तयार	तय्यार	५६	८	१७३	१७२
३७	९	वा	या	५७	१	१७२	१७३
३७	१५	तयार	तय्यार	५७	३	सही	येही
३७	१९	तयारी	तय्यारी	५७	१८	१७७	१७६
३८	१७	सीने	मीने	५८	४	बेयूँ	बेघूँ

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५८	६	कूल्हराजी	कोल्हराजी	६५	१३	१८३	१८२
५८	६	बीऊ	बींऊ	६६	४	कोठ्या	कोट्या
५८	१५	छ ई	छः ई	६६	१४	कोटए	कोटिये
५८	१५	बार	वार	६७	१५	चाहये	चाहिये
५८	१६	बोंवार	बींवार	६७	६	बक्त	वक्त
५९	१	में	मैं	६८	११	वाकी	बाकी
५९	१६	के सर	केसर	७०	५	सीगोली	सींगोली
५९	१८	जी	जो	७०	७	डुने	डूने
६१	३	बंबाबदेमैं	बंबावदेमैं	७०	१५	खीची	खींची
६१	७	घेर	घर	७१	१४	बिंऊ	बींऊ
६१	१६	कोभी	भी	७२	५	पधार्या	पधारे
६१	१२	मन सूबे	मनसूबे	७२	१२	काके	काका
६१	१४	बंबाबदे	बंबावदे	७२	१५	बेटा	बेटे
६३	३	बंबा बदे	बंबावदे	७२	१८	देवेंगे	देंगे
६३	११	१८३	१८२	७३	३७	वरसिंहजी	बरसिंहजी
६३	१२	१८१	१८१	७३	५	कसबा	कस्बा
६३	१७	हो	हैं	७३	८	जावड़	जावदु
६४	२	बग्घजी	बग्घजी	७३	१५	वाँध	बाँध
६४	१३	१८ माई	१८२७	७४	३	पावा	पाग
६५	१०	नायालजी	नायाजी	७४	११	कवि	कवि

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७४	८	पहरे	पहने	८३	१६	ल्याकर	लाकर
७४	१३	मडोवर	मंडोवर	८३	१९	सचाई	मचाई
७५	१	बर्प	वर्ष	८४	६	मुलमानो	मुसलमानो
७५	१०	जव	जब	८४	८	पीय	पीप
७५	१०	घडी	बडी	८५	४	जीको	जी
७५	१२	हाज़र	हाज़िर	८५	१६	लबान	लबान ५
७६	१०	तयार	तय्यार	८५	१६	बरूंधर	बरूंधरा
७६	११	जमाईके	जमाईजी	८६	४	यहचारआ	येचार आद
७७	३	तव	जब			हमी	मी
७७	४	आपके	अपने	८६	८	तो गजी	तोगजी
७७	१२	कवर	कंवर	८६	१६	आपके	अपने
७९	१	तयार	तय्यार	८६	१७	यार	य्यार
७९	८	दूनोने	दूनोंने	८७	३	तो गजी	तोगजी
७९	११	वडी	बडी	८८	१६	डांक	डाक
७९	१२	वहादुरी	बहादुरी	८९	३	तो गजी	तोगजी
८०	११	संवत	संवत्	८९	११	दुहीं	दुहीं हीं
८०	१३	पीछें	पीछे	८९	१३	आपकी	अपनी
८१	१	घेटे	बेटे	८९	१४	कूंच	कूच
८२	८	उन्ने	उसने	९१	६	वल्कि	बल्कि
८२	२५	चाहर	बाहर	९१	६	यह घोड़े	ये घोड़े

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९१	५	महरबानी	मिहरबानी	१००	१०	खट कड़के	खटकड़का
९१	१८	कौरे	करे	१०१	११	मखन	मक्खन
९२	१६	तल्लाब	तालाब	१०१	२५	मखन	मक्खन
९३	११	ठहरीकि	ठहरी	१०२	४	बारूद	बारूत
९३	२४	नोबंत	नौबत	१०३	२२	वार	बार
९४	२४	जब यह भोजन	जबये भोजन	१०३	१३	आपके	अपने
		करने लगे	करने लगे	१०३	१८	मारँतो	मारैंतो
९४	१	मोका	मौका	१०४	५	सालीजीने	सालीजीके
९४	३	आपके	अपने	१०४	७	नछरावल	नौछावर
९४	२२	बूँदी	बूंदी	१०६	१	पूर्णमल्लजीको	पूर्णमल्लको
९५	२५	हाजर	हाज़िर	१०६	४	होस	होश
९६	१३	रस्ले	रस्ते	१०६	२७	ऐसे	ऐसें
९६	१४	बणवाई	बणावाई	१०७	६	आपके	अपने
९६	२५	कवैरें	कवरें	१०७	२९	के मरखां	केसरखां
९६	२६	भीवनवा	बीवनवा	१०७	२६	मांड	मांडू
९८	१०	भागये	भाग गये	१०९	१८	सुरता णोतके	खुरता णोत
९८	२८	भावा	भाग	१०९	१९	हांड़ कहलाये	कहलाये
९९	२	दीखैगी	दीखेगी	११०	११	आय	आप
९९	२५	रस्ते	रस्ते	१११	१६	वेतरफ	बेतरफ
९९	२६	तयार	तय्यार	१११	१९	बघरखा	बधरखा

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२१५	११	तालाव	तालाब	२२४	१७	दखरा	दकखरा
२१५	१३	बरवशे	बरवृशे	२२४	१८	रखो	रकखी
२१५	१७	हाजर	हाज़िर	२२४	१९	को भेजे	भेजे
२१६	७	टलगया	टलगये	२२५	४	मगलोजी	मालजी
२१६	१०	दी	दिया	२२६	५	मे	ने
२१८	२८	नब्वाब	नव्वाब	२२६	६	दखरा	दकखरा
२१९	५	भौंज	भोज	२२७	१०	द्वारकास	द्वारकादास
२२१	७	बनाया	बनायाजोअ	२२८	१२	है	हैं
			ब हाडौंकाबा	२२८	१२	रस्तै	रस्ते
			ग़ कहलाताहै	२२९	७	जर	जिर
२२१	८	देहांत	देहांत	२३०	७	पीछेँ	पीछे
२२२	५	जिसने	जिनने	२३१	१३।१५ १६	महावत	महावन
२२२	१०	मुड	मुंड	२३२	२४	भी	भी
२२२	१९	रकवाथी	रकबीथी	२३३	५	अगाद	अगाँद
२२३	६	का	को	२३४	१८	पीछेँ	पीछे
२२३	११	परगने	परगनों	२३५	१	वानी	बानी
२२३	१५	वाँ	वाँ	२३५	१०	जहानखाँ	जहाँखाँ
२२४	१	नवल खा	नवलखा	२३५	२६	जोवो	जोये
२२४	७	तालाव	तालाब	२३६	१	गूँगेर	गूंगेर
२२४	३	बा	बाँ	२३६	५	बूंदेल	बुंदेल

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३६	७	वानी	बानी	१५२	१८	वान	बानी
१३६	११	पीछेगये	पीछागया	१५४	११	तयार	तैय्यार
१३७	५	वहादुरी	बहादुरी	१५४	१८	आपके	अपने
१३७	१६	वक्त	वक्त	१५४	१९	हुये	हुवे
१३८	२०	४	५	१५६	१	आपकी	अपनी
१४१	११	आपके	अपने	१५६	१३	तयार	तय्यार
१४२	२५	आपके	अपने	१५८	३	दिलावुर	दिलावर
१४३	२४	आपकी	अपनी	१५८	५	कर	कर
१४३	१७	आपकी	अपनी	१६०	१२	नुमारे	तुमारे
१४३	१५	आपकी	अपनी	१६१	२	चोधरी	चौधरी
१४५	८	हूंढाया	हुंढाया	१६१	२	जगदीस	जगदीश
१४५	१२	निकले	निकले	१६१	३	सुभ	शुभ
१४६	२	नं	ने	१६१	२५	सालिमसिंह	सालिमसिंह
१४६	२८	नैं	ने			जी	जीने
१४७	६	ऐसे	ऐसें	१६२	१	वुध	बुध
१४७	१२	बा	व	१६२	७	हुये	हुवे
१४८	३	दुरजनसिंहजी	दुरजनसिंह	१६२	१६	आपके	अपने
१५०	१	आपकी	अपनी	१६३	६	खातरी	खातिरदारी
१५०	१	तयार	तय्यार	१६३	७	आपके	अपने
१५२	३	भांवत	भावत	१६३	८	कूं	कूँ

शु॰ अ॰ शु॰ प॰

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२६४	९	वीच	वीचे	२७३	९	ने	नै
२६५	२	आपके	अपने	२७३	९	जबाब	जवाब
२६६	१९	नव	तव	२७३	१०	सौंगंद	सौगंद
२६६	१९	सं	से	२७३	१५	आपके	अपने
२६७	१८	आपका	अपना	२७४	६	हुलकर	हुल्कर
२६८	३	नव्वाव	नव्वाब	२७५	६	संक	सक
२६८	६	नव्वाब	नव्वाब	२७५	११	जिर	जिर
२६८	८	नव्वाव	नव्वाब	२७६	१	नै	ने
२६८	१२	कै	के	२७७	२	स्मे	स्ले
२६८	२७	दुस्सैं	दुसमें	२७७	९	राणाजीकै	राणाजीको
२६९	६	लोचे	लोहुन्दे	२७८	४	वुरी	मुरी
२६९	८।९	वेराजी	नाराज	२७८	१२	हुंये	हुंवे
२६९	९	आपके	अपने	२७९	४	हुये	हुवे
२६९	२५	रवातर	रवातिर	२७९	१९	समधी	समीधी
२७०	१।२	राणा जी	राणांजी	१८०	१५	आपके	अपने
२७०	९	मिंहजी	सिंहजी	१८१	१३	आपके	अपने
२७१	४।५	आप आपका	आपअपना	२८२	५	आपका	अपना
२७१	६	आपकी	अपनी	१८२	१२	जल्दी	जल्द
२७१	११	वहुत	बहुत	१८२	१६	रवातर	रवातिर
२७३	९	पडेगी	पडैगी	१८३	५।६	आपके	अपने

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८३	८	गा	ना	१९६	१४	वत्त	वक्त
१८४	१७	बराबाये	बरावाये	१९७	६	तयार	तय्यार
१८५	४	गुना	गुनाह	१९७	८	सोगंद	सौगंद
१८५	१०	आपके	अपने	१९८	५	किते	कित्त
१८५	१८	आपके	अपने	१९८	१४	आपके	अपने
१८६	२४	आपका	अपना	१९८	१५	जं	जे
१८७	१०	आपके	अपने	१९९	१	महाराजकुमा	महाराजकुमार
१८८	१२	रुखशत	रुखसत			र हुवे	हुवे और खवा-
१८९	२	जह्लल	जिह्लल				सजी के विनय
१९०	४	गोठरा	गोठड़ा				सिंहजी हुवे
१९०	९	आपके	अपने	१९९	१	इन्द्रसिंहजी	इन्द्रसिंहजी से
१९०	१६	सभ	सब	२०१	१६	पधराय	पधराये
१९१	१	दा	दो	२०२	५	वगाई	बगाई
१९२	१	वत्त	वक्त	२०३	५	डो	हो
१९२	२१।२२	आपके	अपने	२०३	१७	बक्त	वक्त
१९२	२५	दूसैं	दूसे	२०४	७	आपके	अपने
१९३	२	आपके	अपने	२०४	९	नव्वाव	नव्वाब
१९३	८	अजितसिंहजी	अजितसिंह	२०५	११	तयारी	तैयारी
१९४	४	बक्त	वक्त	२०५	१४	मोकूफ़	मौकूफ
१९५	६	तर्फ मे	तर्फ	२०६	४	नयार	नय्यार

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२०६	७	रकवा	रकवी	२१७	१८	मोकूफ	मौकूफ
२०६	१२	तयार	तैयार	२१८	७	हवेली	हवेली
२०७	३।६	वान	बान	२१८	१६	जमी	जमीन
२०७	३।६	नोंक	नेक	२२०	७	मैं मैं	में मैं
२०९	१६	तयार	तय्यार	२२०	१२	सहिब	साहब
२१०	२३	सहने	महीने	२२०	१५	तंदि	तन्दि
२११	७	तालाव	तालाब	२२०	१८	वक्त	वक्त
२११	२३	तालाव	तालाब	२२६	४	बक्तव	वक्तव
२१३	५	जुरूर	जरूर	२२६	१४	नावे	नाबे
२१३	१६	सुरा	मुरा	२२८	२३	वाजिवी	वाजिबी
२१३	७	वाले	वाल्ले	२२८	१९	फसादी	फिसादी
२१३	१६	बक्त	वक्त	२३०	३	बलबा	बलवा
२१५	८	बक्त	वक्त	२३०	५	बलके	बलवेके
२१५	१२।१३	आप आपकी	अपनीअपनी	२३३	१४	पड़े	पड़े
२१५	१२	सामे	सामने	२३४	१४	आवे	आवे
२१६	१	सार	मार	२३४	११	अलवरा	अलन वरा
२१६	७	हवेलियों	हवेलियों	२३४	१७	आपके	अपने
२१६	११	आपके	अपने	२३५	१३	वरावाया	बरावाया
२१७	१०	मैं	में				
२१७	१३	आपके	अपने				

इति

Rajeev

Rajeev